Lala, kavi

THE

CH,HUTRU PRUKASH;

A

BIOGRAPHICAL ACCOUNT

OF

CH,HUTRU SAL,

Raja of Boondelkhund,

BY

LAL KUVI.

EDITED BY

Captain W. Price,

Professor of Hindee and Hindoostanee in the College of Fort William.

PUBLISHED UNDER THE AUTHORITY OF THE GENERAL COMMITTEE

OF

Public Instruction.

PRINTED AT THE EDUCATION PRESS. [Calcutta]

1829.

छत्रप्रकाश

ग्रंथ

बुंदेलखंड के राजा छत्रसाल का वंश

औ युद्ध औ विजय वर्णन

किया हुआ

श्री लाल कवीश्वर का

हिंदी भाषा में

फोर्त उलियम के कालिज के हिंदी औ हिंदूस्थानी अध्यापक

कपतान उलियम प्राइस साहिबने

छापवाया संस्कृत पाठशाला के छापेखाने में

कलकत्ता १८२९ ईसवी

॥ अथ छत्रप्रकाश की सूचनिका ॥

प्रकरण	पत्रांक

॥ छत्र प्रकाश ॥

॥ दोहा ॥

एक रदन सिंधुर बदन दुरबुधितिमिर दिनेश ।
लंबोदर असरन सरन जै जै सिद्धिगनेश ॥ १ ॥

॥ छंद पायाकुलक ॥

सिद्धिगनेश बुद्धि बर पाऊं ।
कर जुग जोरि तोहि सिर नाऊं ।
तूं अघ के अघ ओघन खंडै ।
अधिक अनेकन बिघन बिहंडै ॥ २ ॥
प्रथम करै सुर नर मुनि पूजा ।
और कौन गनपति सम दूजा ।
भौभंजन सेसक गुन गावै ।
मूषक बाहन मोदक पावै ॥ ३ ॥
उच्च कुंभ सिंदूर चढ़ावै ।
रबि उदयाचल छबिहि बढ़ावै ।

अंकुस लिये दरद कौ दाटै।
विकट कटक संकट के काटै॥ ४॥

॥ दोहा ॥

काटै संकट के कटक प्रथम तिहारी गाथ।
मोहि भरोसौ है सही दै बानी गननाथ॥ ५॥

॥ छंद॥

जै जै जै आनंदित बानी।
तुही सत्य चैतन्य बखानी।
तुही आदि ब्रह्मा की रानी।
वेद पुरानमयी तूं जानी॥ ६ ॥

॥ दोहा॥

तूं बिद्या तूं बुद्धि है तुही अबिद्या नाम।
तूं बांधै सब जगत कौं तूं छोरै परिनाम॥ ७॥

॥ छंद॥

तेरी कृपा लाल जौ पावै।
तौ कवि रीति बुद्धि बिलसावै।
कविता रीति कठिन रे भाई।
बाहनि समुद पहिर नहि जाई॥ ८॥
बड़ौ बंस बरनौ जौ चाहौ।
कैसे सुमतिसिंधु अवगाहौ।

चहूं ओर चंचल चितु धावै।
बिमल बुद्धि ठहरान न पावै॥ ९ ॥
बांधी बिषै सिंधु की डोरै।
फिरि फिरि लोभ लहर में बोरै।
जो उर बिमल बुद्धि ठहराई।
तौ आनंदसिंधु लहराई॥ १० ॥
उठी अनंदसिंधु की लहरें।
जस मुकता ऊपर कै छहरें।
छहरि छहरि छिति मंडल छायौ।
सुनि सुनि बीर हियौ ऊलसायौ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

दान दया घमसान में जाकै हियै उछाह।
सोही बीर बखानियै ज्यौं छत्ता छितिनाह॥ १२ ॥

॥ छंद ॥

भूमिनाह कौ बंस बखानौ।
सबही आदि भान कौ जानौ।
एक भान सब जग कौ तारौ।
जहां भानु सै देखि उज्यारौ॥ १३ ॥
सुर नर मुनि दिन अंजलि बांधै।
करत प्रनाम भगति कौ कांध।

एक चक्र रथ पै चढ़ि धावै।
सकल गगन मंडल फिर आवै ॥ १४ ॥
साठि हजार असुर नित मारै।
धरम करम दिन प्रति बिस्तारै।
कमल क्यों न मुसक्याइ निहारै।
लछि देत कर सहस पसारै ॥ १५ ॥
करनि बरष जल जगत जिवावै।
चोर कहूं संचार न पावै।
काल बांधि निजु गति सौ राख्यौ।
एक जीभ जस जात न भाख्यौ ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

भाख्यौ जात न जासु जस ऐसे उदित दिनेस।
ताकै भयौ महा बली मनु उद्दंड नरेस ॥ १७ ॥

॥ छंद ॥

मनु अनेक मानस उपजाये।
यातै मानव मनुज कहाये।
बरनौ ताकौ बंस कहांलौं।
जगत बिदित नरलोक जहांलौं ॥ १८ ॥
तिन में छिति छत्री छबि छाये।
चारिऊं जुगन होत जे आये।

भूमि भार भुजदंडनि थंभे।
पूरन करै जु काज अरंभे॥ १९ ॥
गाइ वेद दुज के रखवारे।
जुद्ध जीतके देत नगारे।
परम प्रवीन प्रजन कौ पाले।
भीर परै न हलाये हाले॥ २० ॥
दान हेत संपति कौ जोरै।
जस हित परनि खग्ग गहि तोरै।
बांह छांह शरनागत राखै।
पुन्य पंथ चलिवौ अभिलाषै॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

प्रगट भयौ तिहि बंस में रामचंद्र अवतार।
सेतु बांधिकै जिन कियौ दसमुख कुल संहार॥ २२ ॥

॥ छंद ॥

रामचंद्र के पुत्र सुहाये।
कुस लव भये जगत जे गाये।
कुस कुलकलस भये छबि छाये।
अवधि पुरी नृप घनै गनाये॥ २३ ॥
तिन में दानजूझ सिरताजा।
हरिब्रह्म कुलथंभन राजा।

हरिब्रह्म कुलतिलक प्रवीनै।
महीपाल जस जाहिर कीनै ॥ २४ ॥
महीपाल उद्दित सुत पाये।
नृपकुलमनि भुवपाल कहाये।
तिनके कमलचंद जग जानै।
सूरन के सिर मौर बखानै ॥ २५ ॥
तिनके चित्रपाल मरदानै।
बुद्धिपाल जिन सुत उर आनै।
नंद बिहंगराज तिन जाये।
अवधि पुरी नृप सात बताये ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

विहंगेस नृप कै भये कासिराज सिरताज।
अवधि पुरी तैं उमडि जिन कीनौ कासी राज ॥ २७ ॥

॥ छंद ॥

कासिराज नृपमनि छबि छाये।
कासी बैठ सुजस बगराये।
तिनके कुल जेते नृप आये।
काशीश्वर ते सबै कहाये ॥ २८ ॥
गहिरदेव नंदन तिन पाये।
भुव पर प्रगट सुजस बगराये।

तिनके बंस भये नृप जेते।
गहिरवार कहियत सब तेते ॥ २९ ॥
गहिरदेव के पुत्र बखानौ।
बिमलचंद जग जाहिर जानौ।
राजा नाऊचंद तिन जाये।
जिन दौरन दिगपाल हलाये ॥ ३० ॥
गोपचंद तिनकै सुत ऐसे।
करन दधीच धरमधुर जैसे।
तिनके गोबिंदचंद गरूरे।
दानजूझ बलि बिक्रम पूरे ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

टिहनपाल तिन के भये परम धरमधुर धीर।
बिंध्यराज तिन उर धरे जे गुन में गंभीर ॥ ३२ ॥

॥ छंद ॥

बिंध्यराज नृप सुत उपजाये।
सोनिकदेव देव से गाये।
ताकौ पुत्र प्रगट जग माहो।
बीझलदेव धरम कौ छाहो ॥ ३३ ॥
अर्जुनवर्म पुत्र तिन पाये।
जुद्ध मध्य अर्जुन ठहराये।

तिनके बीरभद्र नृप जानौ।
छत्र धरमधुर धरन सयानौ ॥ ३४ ॥
बीरभद्र नृप के सुत सूरे।
भये पांच बल बिक्रम पूरे।
चारि पुत्र पटरानी जाये।
लहुरी रानी पंचम पाये ॥ ३५ ॥
चारि पुत्र के नाम न जानौ।
पंचम नृप कौ बंस बखानौ।
बीरभद्र नृप सुजस बगारे।
पुहुमि पालि सुरलोक सिधारे ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥

बीरभद्र सुरलोक कौ गये सुजस जग माडि।
पुहमी पंचमसिंह कौ बाल बिहक्रम छाडि ॥ ३७ ॥

॥ छंद ॥

पंचम बाल बिहक्रम जान्यौ।
लोभ चहूं बंधुन उर आन्यौ।
पंचम की पुहमी उन छीनी।
बांटि चार हीसा करि लीन्ही ॥ ३८ ॥
बंधुन दिये दुःख दूमि भारे।
गृह तजि पंचमसिंह सिधारे।

छाड़त ग्रेह बड़ी दुचताई।
कित जैये को होइ सहाई॥ ३६ ॥
यह संसार कठिन रे भाई।
सबल उमंडि निबल कौ खाई।
छनिक राज संपति के काजै।
बंधुन मारत बंधु न लाजै॥ ४० ॥
जीवन तनकु पाप अधिकारे।
धन जोबन सुख तुच्छ निहारे।
निघटत आपु न जानत अंधे।
माया के बंधन सब बंधे॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

माया के डिढ़ बंध सो बंध्यौ सकल संसार।
बूड़त लोभसमुद्र में कैसे पावे पार॥ ४२॥

॥ छंद ॥

पार लोभसागर कौ नाही।
भ्रमत सबै माया भ्रम माही।
सो माया चैतन्य बखानी।
आनदमयी ब्रह्म की रानी॥ ४३ ॥
उपजावत ब्रह्मांड अलेखै।
काल ब्रह्म खेलत जिन देखै।

जोगनीद कैकै तिहि भोये।
दुगध उदधि नारायन सोये॥ ४४॥
उहि ब्रह्मा भय भीत उबारे।
प्रगट मोहि मधु कैटभ मारे।
दलजुत महिषासुर संघारे।
देवन के सब काज संवारे॥ ४५॥
धूमनैन उद्धरनि भवानी।
चंडमुंड खंडन जग जानी।
रक्तबीज खप्पर भर खाये।
रन में सुंभ निसुंभ ढहाये॥ ४६॥

॥ दोहा ॥

वहै योगनिद्रा भई नंदगोप घर जाइ।
होनी कहिकै कंस सैा बसी बिंध्य पर आइ॥ ४७॥

॥ छंद ॥

बिंध्यबासिनी सुनियत नामै।
देत सकल मन बंछित कामै।
ताकै सरन जाइ ब्रत लीजै।
मन बंछित फल पूरन कीजै॥ ४८॥
ऐहि बिचार पंचम उर जान्यैा।
मन क्रम बचन भगतिरस सान्यैा।

बिमल गंगजल मंजन कीन्हौ।
दरस बिंध्यबासिनि कौ लीन्हौ ॥ ४९ ॥
तीनौ ताप देह तै छूटे।
परम भक्तिरस के सुख लूटे।
हरषित गात रोम उठि आये।
बंछित फल मन तन जन धाये ॥ ५० ॥
छलकि नीर नैननि भरि आये।
दुरित दुःख तिन संग बहाये।
करुनारस छाई जगमाई।
भक्ति हेत उर अंतर आई ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

म्रदु मूरति जगमाइ की रही ध्यान ठहराइ।
एक पाइ पंचम खड़े भूख प्यास बिसराइ ॥ ५२ ॥

॥ छंद ॥

भूख प्यास पंचम कौ भूली।
त्रिकुटी लगी समाधि अतूली।
सात द्यौस इहि रीति बितीते।
पंचम इंद्रिन के गुन जीते ॥ ५३ ॥
सुनी गगन मंडल धुनि ऐसी।
लहिहौ भूमि आपनी वैसी।

सुनि पंचम नृप उत्तर दीनौ।
भुव हित हौं न परिश्रम कीन्हौ ॥ ५४ ॥
उलटि गगन धुनि गगन समानी।
कछु प्रसन्नता पंचम मानी।
बहुर सात बासर त्यौं बीते।
लागे हौन मनोरथ रीते ॥ ५५ ॥
तब पंचम नृप करवर काढ़ौ।
निज सिर देत भगतिरस बाढ़ौ।
काटन कंठ लग्यौ हटि ज्यौंही।
उठि कर गह्यौ भवानी त्यौंही ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

त्यौंही करुनारस भरी गहे भवानी हाथ।
जै जै करि बरषे सुमन सुरनि सहित सुरनाथ ॥ ५७ ॥

॥ छंद ॥

जै जै धुनि नभ मंडल मंडी।
कर करवार छुड़ावति चंडी।
जब करवर झुक झोरि छुड़ायौ।
कछुक घाउ पंचम सिर आयौ ॥ ५८ ॥
तातै रुधिर बुंद इक चूयौ।
मनहु गगन तैं तारा टूयौ।

छिति पर पस्यौ छलकि छबि जाग्यौ।
जननि हियौ करुणारस पाग्यौ ॥ ५६ ॥
सीस डुलाइ बुंद वह देख्यौ।
साहस अतुल भक्त कौ लेख्यौ।
करुनारस जल थल सरसायौ।
सिर ससिकला अम्रत बरसायौ ॥ ६० ॥
बरस्यौ अम्रत बूंद पर ज्यौंही।
उपज्यौ कुंवर तहांतै त्यौंही।
उमग्यौ हियौ कुमार निहारै।
छुटी पयोधर ते पय धारै ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

छुटी पयोधर धार तै कुंवर कियौ पय पान।
बिंध्यबासिनी उमगि उर लगी देन बरदान ॥ ६२ ॥

॥ छंद ॥

लगी देन बरदान भवानी।
फुरै समर में सदा क्रपानी।
बढ़ै बंस जग माह अन्यारौ।
छत्र धर्मधुर कौ रखवारौ ॥ ६३ ॥
तुव कुलराज अखंडित रैहै।
जो सताइहै सो मिटि जैहै।

दरपुस्तनि कै है नृप भारी।
दान कृपान मरद प्रनधारी ॥ ६४ ॥
प्रथमहि राज आपनौ पावै।
परभुव भोगनहार कहावै।
यह कहि हाथ माथ पर राखे।
पुहमी प्रगट बुंदेला भाखे ॥ ६५ ॥
पाइन परि पंचम बर लीन्हौ।
मन बंछित जननी फल दीन्हौ।
प्रगट्यौ बुंदेला बरदाई।
भयौ समर कौ उमडि सहाई ॥ ६६ ॥
अतुल जुद्ध बंधुनि सौ बीत्यौ।
पंचम राज आपनौ जीत्यौ।
पंचम जदपि पुत्र बहु पाये।
पै कुलतिलक बुंदेला गाये ॥ ६७ ॥

इति श्री लाल कवि विरचिते छत्र प्रकाशे बुंदेला जन्म वर्ननं नाम प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

बरदाइक बुंदेल जब भयौ प्रगट रनधीर।
गहिरवार पंचम जसी कासीश्वर नृप बीर ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

बीर बिंध्य की देवी पूजी।
किन्हिन बीर की कीरति कूजी।
बीर जीति पूरब दिसि लीन्ही।
बीर दौर पच्छिम कौ कीन्ही ॥ २ ॥
सत्तरखान बीर सो हारे।
अरु उमराउ बहत्तर मारे।
बीर करे अपनै मन भाये।
सबल सत्रुदल खेत खपाये ॥ ३ ॥
बीर समर झारी करवालै।
जीती कारी पीरी ढालै।
बीर कठिन कालिंजर लीन्हो।
बीर कालपी थानो दीन्हो ॥ ४ ॥
सोख्यौ बीर सत्रु कौ पानी।
करी महोनी में रजधानी।
ऐसैा बीर बुंदेला गाथौ।
परभुव लोहाधार कहायौ ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

बीर बुंदेला के भया करन भूप बलवंत।
दानजूझ कौ करन सो भुवनदलन दलवंत ॥ ६ ॥

॥ छंद ॥

तिनके अर्जुनपाल बखानै।
सहनपाल तिनके सुत जानै।
बुधि बल गढ़ कुठार तिन लीनौ।
अमल जतहरा में पुनि कीनौ ॥ ७ ॥
तिन सुत सहजइंद्र से पाये।
सहजइंद्र जग माह कहाये।
तिन के भये पुत्र मन भाये।
नौनिकदेव देव से गाये ॥ ८ ॥
पृथु सम पृथीराज तिन जाये।
तिन के रामसिंह छबि छाये।
तिनके रामचंद्र सुत ऐसै।
जनक जजाति प्रियब्रत जैसै ॥ ९ ॥
ताकौ पुत्र जुद्धरस भीनौ।
भयौ मेदिनीमल्ल प्रवीनौ।
तिनकै अर्जुनदेव गरूरे।
मल्लखान तिन के सुत सूरे ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

मल्लखान कौ नंद भौ रुद्रप्रताप अतूल।
नगर ओंडछौ जिन रच्यौ खोद खलनि कौ मूल ॥ ११ ॥

॥ छंद ॥

पुत्र प्रतापरुद्र उपजाये।
प्रथम भारतीचंद कहाये।
दूजे मधुकरसाहि बखाने।
उदयाजीत जगति जग जाने ॥ १२ ॥
कीरतिसाहि कीर्त्ति जग छाई।
लीन्हे भूपतिसाहि भलाई।
अमंदास उदित जसु लीन्हौ।
चंदनदास चंद्र सम कीन्हौ ॥ १३ ॥
दुर्गादास दुवन दल भंजे।
घनस्याम सज्जन मन रंजे।
प्रागदास परबीन प्रतापी।
भैरोंदास मजाही थापी ॥ १४ ॥
खांड़ेराय खुसाल सदाई।
ऐ जग बिदित बारहौ भाई।
दानजूझ बल बिक्रम पूरे।
समर धीर गंभीर गरूरे ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

रुद्रप्रताप नरिंद के बिदित बारहौ नंद।
थपे ओंड़छे नगर में बड़े भारतीचंद ॥ १६ ॥

॥ छंद ॥

जेठे पुत्र ओंड़छे राखे।
करे काज मन के अभिलाषे।
थंभे भुजन भूमि भर भारी।
नृप कुठार कौ करी तयारी॥ १७॥
खेलत चले सिकार सलौनी।
मेटी मिटै कौन सो हैानी।
जोजन ऐक सहर तै आये।
नदी उतर बन सघन मझाय॥ १८॥
तहां बाघ इक गाइ पछारी।
सो करुना करि सुरनि पुकारी।
कानन परत दीन वह बानी।
पंहुच्यौ नृप कर कढ़ी कृपानी॥ १९॥
सिर धरि छत्र धर्म्म कौ बानो।
हांक्यौ बाघ उठ्यौ बिरझानौ।
गरजत दुवौ परस्पर जूटे।
संगहि प्रान दुहुन के छूटे॥ २०॥

॥ दोहा ॥

रुद्रप्रताप नरिंद तनु तज्यौ गाइ के काज।
परम उच्च आसन दियौ सुरनि सहित सुरराज॥ २१॥

॥ छंद ॥

सुरनि सहित सुरराज सिहानै।
पुन्य प्रतापरुद्र अधिकानै।
करि अभिषेकु ओंड़छे छाये।
भूप भारतीचंद्र कहाये॥ २२॥
पुन्य पाल जग जसु बगरायौ।
इक हरि ही कौ सीस नवायौ।
तेइस बरस राज नृप कीनौ।
धरनि छांडि सुरपुर सुख लीनौ॥ २३॥
उपज्यौ नहीं पुत्र मन भायौ।
मधुकरसाहि राज तब पायौ।
उदयाजीत आदि दै भाई।
सबै भूप कौ भये सहाई॥ २४॥
प्रजा पाल पुर पुन्य बढ़ायै।
दानजूझ जिनके गुन गायै।
अरतिस बरस राज नृप कीन्हौ।
निस दिन रह्यौ भगतिरस भीनौ॥ २५॥

॥ दोहा ॥

जाकै उदयाजीत से भाई सदा सहाइ।
जस प्रताप ता नृपति कौ कहौं कौन अधिकाइ॥ २६॥

॥ छंद ॥

उदयाजीत उदित नर देवा।
जिन उदयाचल कियौ महेवा।
जुद्ध मध्य उद्धत अरि मारे।
दे दे दान दरिद्र बिदारे॥ २७॥
ता सुत प्रेमचंद मरदानौ।
पूरन चंदा के सम मानौ।
जहां समर मारू सुर बाजै।
तहां अरुन आनन छवि छाजै॥ २८॥
कैयक अरिदलसिंधु बिलोड़ै।
घाट घनै घट ही में ओड़ै।
लीलतु फिरै लोह की लपटै।
अगवै कौन सिंघ की झपटै॥ २९॥
मुगल पठान जुद्ध में जीते।
भरे कालिका खप्पर रीते।
साहिसेन झुक झोर हलायौ।
साहिझार कौ बिरद बुलायौ॥ ३०॥

॥ दोहा ॥

साहिझार बिरदैतमनि प्रेमचंद के नंद।
पुहमी में परगट भये तीनौ आनदकंद॥ ३१॥

॥ छंद ॥

प्रेमचंद के नंद बखानै।
कुंवरसेन जग जाहिर जानै।
जिन सिमिरहा अलंकृत कीनौ।
करि करि दान जूझ जसु लीन्हौ ॥ २२ ॥
दूजे मानसाहि मरदानै।
दौरनि दपटि दुवन जिन भानै।
दान कृपान बुद्धि बल चांडे।
बैठि साहिपुर जिन जस मांडे ॥ २३ ॥
और भागवतराइ रंगीले।
सत्रुन साल समर सरमीले।
कियौ महेवा जिन रजधानी।
कीरति बिदित जगत में जानी ॥ २४ ॥
ऐ तीनौ भाई छबि छाजै।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र से राजै।
तीनौ अगिन तेज उर आनौ।
तीनौ नैन रुद्र के जानौ ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

कुलमंडन परसिद्ध अति भयौ भागवतराइ।
ताके पूरन पुन्य में लगे चारि फल आइ ॥ २६ ॥

॥ छंद ॥

ताके पुन्य चारि फल लागे।
खरगराइ अरु चंद सभागे।
सुभद्र सुजानराइ सुखदाई।
सब कौं चंपतिराइ सहाई॥ ३७॥
चारिउ भैया उदभट जानौ।
चारिउ भुजा विष्णु के मानौ।
चारिउ चरन पुन्य छबि छायौ।
चारिउ फलन देन जनु आयौ॥ ३८॥
हिंदवान सुरगज उर आनौं।
ताके चारौ दंत बखानौं।
चारौ अंग चमू जिन राखी।
चारौ समुद जीति अभिलाषी॥ ३९॥
अंतःकरन चारि हुलसाये।
चारिउ चक्र सुजस बगराये।
हरि के आयुध चारि गनाये।
ते जनु छिति रच्छन कौं आये॥ ४०॥

॥ दोहा॥

जद्यपि आयुध विष्णु के चारौं छबि उद्दाम।
पै दानवदल दलन कौं गदा चक्र सौं काम॥ ४१॥

॥ छंद ॥

जदपि गदा की बड़ी बड़ाई ।
पै कछु और चक्र की घाई ।
गदा समान सुजान बखानै ।
चंपतिराइ चक्र उर आनै ॥ ४२ ॥
गनै कौन चंपति की जीतैं ।
गनपति गनै तऊ जुग बीतैं ।
साहिजहां उमड्यौ घन घोरा ।
चंपति झंझा पौन झकोरा ॥ ४३ ॥
साहि कटकु झकझोर झुलायौ ।
गिल्यौ बुंदेलखंड उगिलायौ ।
चंपति करीं साह सौ ऐड़ैं ।
पैठि न सक्यौ मुगल दल मेड़ैं ॥ ४४ ॥
सूबा जिते साहि के चांडे ।
चंपतिराइ घेरि सब डांडे ।
बुधि बल चंपति भयौ सहाई ।
आलमगीर दिल्ली तब पाई ॥ ४५ ॥

इति श्री लाल कवि विरचिते छत्र प्रकाशे बुंदेलवंश वर्ननं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

चंपतिराइ नरिंद के प्रगटे पांच कुमार।
मंडे कुल बरम्हंड में जिनके जस बिस्तार ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

पांच पुत्र चंपति के जानौ।
प्रथम सारबाहन उर आनौ।
अंगदराइ रतन मन मानै।
छत्रसाल गोपाल बखानै ॥ २ ॥
तिन में छत्रसाल छबि लीनी।
निज बस भूमि भावती कीनी।
तौ गुन छत्रसाल के गैये।
कैयक सहस जीभ जौ पैये ॥ ३ ॥
रन अंगद अंगद गुन भारे।
कीने जग में सुजस उज्यारे।
जाकी तेग अरस में डूलै।
बाजत सारु हनू सौ फूलै ॥ ४ ॥
लीनी कैयक बिकट लराई।
अरि की चमू अनेक हराई।
दुवन जीत दच्छिन के लीनै।
दिल्लीपति के कारज कीनै ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

कीने काज दिलीस के लीनै बिजै अनेक।
अंगद चंपतिराइ के धरी धर्म की टेक ॥ ६ ॥

॥ छंद ॥

रतनसाहि निरमल गुन पूरे।
परमसमर्थ समर अति सूरे।
आखेटक के जिते ठिकानै।
जल थल अंतरिच्छ के जानै ॥ ७ ॥
प्रगट महेवा में रन कीनौ।
अरि की फौज फारि जसु लीनौ।
अंगद रन ता दिन बढ़ि जानै।
गुनन बड़े छत्रसाल बखानै ॥ ८ ॥
तिनतैं लघु गोपाल गनाये।
सीलवंत संतन मन भाये।
जबहि समर मह सेल उछालै।
हिरदौ देखि काल कौ हालै ॥ ९ ॥
सब भैयन की कथा बखानै।
छत्रसाल तैं जुदो न जानै।
छत्रसाल की कथा सुहाई।
समै समै तिन में सब आई ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

जदपि नदी पानिप भरी अपनै अपनै ठांउ।
पै गंगा में मिलत हीं गंगा हीं कौ नांउ॥ ११ ॥

॥ छंद ॥

गंगा त्रिपथगामिनी जैसी।
छत्रसाल की कीरति तैसी।
सब सुर नर नागन की बानी।
गावत बिमल पवित्र बखानी॥ १२ ॥
गावत पार न पावहि कोई।
अरब खरब आनन किन होई।
जैसे उड़ै बिहंग जहांलौ।
देखत गगन बिसाल तहांलौ॥ १३॥
गुन अनंत मुख ऐक हमारै।
चपल चित्तु थोरी मति धारै।
चाहत है ऐते पर तैसी।
सतकबि मति की पदवी जैसी॥ १४ ॥
अगम पंथ कौ बुधि बिलसाई।
कैहै जग इहि भांति हसाई।
ज्यौं बामन ऊंचे फल चाहै।
चरननि उचकि उठावै बाहै॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

उचकै हूं पहुंचै नहीं बाहै उच्च उठाइ ।
लोग हसी के रस भरे देखत कौतुक आइ ॥ १६ ॥

॥ छंद ॥

जो कौतुक उर धरि जग लोई ।
सुनिहै सरस कथा सब कोई ।
सरस कथा सुनि हिय हुलसावै ।
सब कों छत्रसाल गुन भावै ॥ १७ ॥
सब जग में जेती मति जाकै ।
उर उछाह तेते गुन ताकै ।
अपनी मति माफिक सब गावै ।
गुन कौ पार न कोऊ पावै ॥ १८ ॥
जौ पै पार गुननि कौ नाहीं ।
ज्यों सहसानन त्यों हम आहीं ।
छत्रसाल के चरित उच्चारे ।
मेटत कुल कलिकाल अध्यारे ॥ १९ ॥
कुलमंडन छत्रसाल बुंदेला ।
आपु गुरू सिगरौ जग चेला ।
छत्रसाल चंपति के ऐसे ।
बरने कश्यप के रबि जैसे ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

कश्यप कौ रबि गाइये कै दशरथ कौ राम।
कै चंपति कौ चक्कवै छत्रसाल छबि धाम॥ २१ ॥

॥ छंद ॥

छत्रसाल के गुनगन गाऊं।
पूर्व जन्म की कथा सुनाऊं।
ऐक समै हजरत फरमायौ।
बाकी खान बली चढ़ि आयौ॥ २२ ॥
समर खेलु चंपति सौं माच्यौ।
बाजत सारू रीझि हर नाच्यौ।
छुटि छुटि भिरै दुवौ दल बांके।
सोथिन पटे गिरिन के नाके॥ २३ ॥
चंपतिराइ कलह कौं कांधे।
बैठे बिकट बिरद कौं बांधे।
जेठे पुत्र सुभट छबि छाये।
नाम सारबाहन जे गाये॥ २४ ॥
जान जुद्ध अमनैक अढ़ाये।
खैलहार ता समै पठाये।
बाकी खां कौ कटकु उमंड्यौ।
बंधे घाट कौ मारग छंड्यौ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

घाट छांडि औघट धस्यौ कुंवर सुनै जिहि ठौर।
बाकी खां के कटक की भई तहां कौ दौर ॥ २६ ॥

॥ छंद ॥

खेलहार पर फौजै धाई।
कैयक सहस अचानक आई।
कुंवर सारबाहन छबि छाये।
खेलन सहज ताल में आये ॥ २७ ॥
तबही बरष चौदही लागी।
बुद्धि बाल खेलन में पागी।
खोलि हथ्यार तीर में राखे।
जल के अतुल खेल अभिलाषे ॥ २८ ॥
ऐकन कौं धरि ऐक ढकेलै।
सलिल उछाल परस्पर मेलै।
ऐकै भजै पहरकै काछै।
ऐकै लगै लपक करि पाछै ॥ २९ ॥
निकट जानि तन बूड़ि बचावै।
छल सौं जल में छुवन न पावै।
चरन चपेट चलावत चूकै।
तिन कौ देत सबै मिलि कूकै ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

या बिध अति आनंद भरे कुंवर करै जलकेल।
बाकी खां उचका पर्यौ उदभट कटक सकेल॥ ३१॥

॥ छंद ॥

फौज अचानक निकट हकारी।
खलभल आइ खेल में पारी।
कुंवर कढ़े जल तै रस भीने।
आइ हथ्यार तीर में लीने॥ ३२॥
हांके मुगल ताल को जोरी।
भजे बिडरि बालक चहुं ओरी।
कुंवर सारबाहन बल बाढ़े।
तमकि तीर तरकस तै काढ़े॥ ३३॥
काढ़े तीर बीर जब जूझ्यौ।
सर समूह सत्रुन कौं कूझ्यौ।
बखतरपोस हला करि धाये।
कुंवर अडोल हले न हलाये॥ ३४॥
अरुन रंग आनन छबि लीनी।
तानि कमान कुंडलित कीनी।
छूटे बान बज्र से वाके।
फूटे सुभट निकट जे हांके॥ ३५॥

॥ दोहा ॥

झिलो फौज प्रतिभट गिरे खाइ घाउ पर घाउ।
कुंवर दौरि परबत चढ्यौ बढ्यौ जुद्ध कौ चाउ॥ ३६॥

॥ छंद॥

समिटि फाज आई रन भूमै।
घाइल घने परे जह घूमै।
मुगल पठान प्रान बिन देखे।
बिक्रम अतुल कुंवर के लेखे॥ ३७॥
बाकी खां देख्यौ दल भान्यौ।
प्रगट कुंवर चंपति कौ जान्यौ।
बोल्यौ तमकि कटकु सब धावै।
पकरौ कुंवर जान नहि पावै॥ ३८॥
बखतरिया ढालै दै आगै।
हय तजि पिले बीररस पागै।
प्रतिभट पिले निकट जब आये।
कुंवर अडोल बान बरसाये॥ ३९॥
इक इक बान दुदै भट फूटै।
झुकि झुकि तजु चहुं दिस जूटै।
कुंवर ऐक सहसन अरि धाये।
ज्यौं बैरिन अभिमन्यु दबाये॥ ४०॥

॥ दोहा ॥

रुक्यौ कुंवर अभिमन्यु ज्यों महारथिन के बीच।
मारु झारि रिपुरुधिर की बिरचि मचाई कीच॥ ४१ ॥

॥ छंद ॥

माची कीच मारु जब बाज्यौ।
कुंवर अरुन आनन छबि छाज्यौ।
खग्ग झारि ऐकन कौ काटै।
ऐकन हरषि हांक दै डाटै॥ ४२ ॥
घाइ खाइ न अघाइ हठीलौ।
उमग्यौ भिरतु समर सरमीलौ।
कौतुक लखतु भान रथ रोपै।
बिडरयौ कटकु कुंवर के कोपै॥ ४३ ॥
बिडरतु कटकु मोरजे बांके।
झार हथ्यार हरषि हठि हांके।
कुंवर मार में सनमुख पैठ्यौ।
सूरज भेदि बिमाननि बैठ्यौ॥ ४४ ॥
तेगन लगि तनु तनक न बांच्यौ।
रन में रुद्र सीस लै नाच्यौ।
सुरन पुहुप बरषा बरषाई।
उैमाला हूरन पहिराई॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

सजी आरती सुरबधुनि उमग्यौ अमरसमाजु।
कुंवर सारबाहन लियौ बीरलोक कौ राजु ॥ ४६ ॥

॥ छंद ॥

बीरलोक आनद अति छाये।
समाचार चंपति पै आये।
सुन्यौ कुंवर रनसज्या सोयौ।
सोक बढ़े माता अति रोयौ ॥ ४७ ॥
तब माता कौं सपनौं दीनौ।
समाधान नीकी बिधि कीनौ।
मोहि बैर म्लेछन सौ लीवै।
औरौ काज अपूरब कीवै ॥ ४८ ॥
तातै फिरि अवतारहि लैहौं।
ह्वै फिरि प्रगट तुम्हैं सुख दैहौं।
और माइ की कूख नवीनी।
सो मै आइ अलंकृत कीनी ॥ ४९ ॥
यह सुनिकै माता सुख पायौ।
सपनौ अपनौ प्रगट सुनायौ।
भई प्रतीति कछुक दिन बीते।
सांचे भये सुपन चित चीते ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

चित चीते सांचे भये सुपन माइ के चारु।
प्रगट्यौ चंपतिराइ के छत्रसाल अवतारु ॥ ५१ ॥

इति श्री लालकवि विरचिते छत्रप्रकाशे छत्रसाल नृपतेः पूर्वजन्मकथावर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

॥ छंद ॥

छत्रसाल जनम्यौ जब माई।
धुनि गंभीर रुदन में पाई।
घूंघरवारी घनी लटूरी।
देती आनन कौ छवि पूरी ॥ १ ॥
मनौ भ्रमर की पांति सुहाई।
अमृत पियन उड़पति पै आई।
ऊंच्यौ भाल बिसाल बिराजै।
कनक पट्ट कै सी छवि छाजै ॥ २ ॥
लसतु अष्टमीचंद किधौ है।
वखत भूप कौ तखत मनौ है।
नैन बिसाल असित सित राते।
कमलदलन पर अलि जनु माते ॥ ३ ॥
भुजा बिसाल जानु लौं आये।
भुवभर मानहु लेत उठाये।

उन्नत नखनि लसत अरुनाई।
बज्र कपाटनि की छवि छाई ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

चक्रवतनि के चिह्न सब अंगन अंगन राखि।
छत्र धर्म जब औतस्यौ सामुद्रिक दै साखि ॥ ५ ॥

॥ छंद ॥

जनम्यौ पुत्र उठी यह बानी।
धन्य घरी सबही वह मानी।
दुंदुभि बजे लोक सुखदानी।
आठौं दिसा प्रसन्न दिखानी ॥ ६ ॥
जातकर्म कीन्हे सुख मूले।
अमर पितर नर उर अति फूले।
उमग भरे नर नारी गावै।
पिता तुरग नग घोष लुटावै ॥ ७ ॥
सतकबि बदन नची बर बानी।
भिक्षुक भौंन लक्ष्मी रानी।
कीरति नची जगत मन भाई।
बिमल जोन्ह सी छवि छुटकाई ॥ ८ ॥
लिख्यौ छठी में सब सचाई।
दान जूझ बल बूझ बड़ाई।

मन करतूति करम के ऊंचे।
जिन सम तखततपी न पहूंचे॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

ईस नखत अनुरूप अरु अरथवंत परिनाम।
जनमपत्र तातें लिख्यौ छत्रसाल यह नाम ॥ १० ॥

॥ छंद ॥

प्रगट पासनी में छबि छाई।
भुवभर सहित कृपान उठाई।
ता दिन कबिन कबित्त बनाये।
दिये दान तिनकौं मन भाये॥ ११ ॥
घुटुनुन चलत घूंघुरू बाजै।
सिंजित सुनत हंस हिय लाजै।
गहि पलका की पाटी डोलै।
किलिकि किलिकि दसननि दुति खोलै॥ १२ ॥
बिहसत उठत भोर ही जागै।
निरखत को न हियै अनुरागै।
खेलत लेत खिलौना आछे।
धावत किलिकि काहु के पाछे॥ १३ ॥
रुचि सों तकत तुरग जे नीके।
बिहस लेत मुजरा सबही के।

दिन दिन बढ़ै बढ़ाइ अनंदा।
जैसे सुकलपच्छ कौ चंदा ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

खेलन बोलन चलन में सब कौं देत अनंद।
बालापन तै बढ़ि चली दिन दिन बुद्धि बिलंद ॥ १५ ॥

॥ छंद ॥

बढ़ी बिलंद बुद्धि कछु ऐसी।
या जुग माह नाहि नै जैसी।
जबही बरष सातई लागी।
अद्भुत बुद्धि भगतिरस पागी ॥ १६ ॥
राजत पुर जगबिदित महेवा।
तहां होत रघुबर की सेवा।
राजत रामचंद्र रस भीनै।
सुंदर धनुष बान कौ लीनै ॥ १७ ॥
त्यौंही लछमन रूप सुहाये।
धनुष बान लीनै छबि छाये।
सीता सरस रूप तनु धारै।
भूषन बसन सिंगार सिंगारै ॥ १८ ॥
बालगुबिंद तहां अति सोहै।
घुटुनुन चलत चित्त कौ मोहै।

माखन कौ लोंदा कर माहीं।
मुकट सीस छबि कही न जाहीं ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

सिंहासन ऊपर सबै सोहत अद्भुत रूप।
भगति धरै दरसन करै पंचम चंपति भूप ॥ २० ॥

॥ छंद ॥

तंह उझबोर आरती साजै।
झालर झांझ संखबर बाजै।
बालक बृद्ध तरुन तंह आवै।
नर नारी सब दरसन पावै ॥ २१ ॥
छत्रसाल दरसन कौ जाही।
बाल सुभाइ धरै मन माही।
अनिमिष रूप अनूप निहारै।
चेतन जानि चित्त निरधारै ॥ २२ ॥
इनिके संग खेल औ भाई।
तौ यह बात भली बनि आई।
अपनौ धनुष देइ जौ मागै।
धरिकु खेल कीजै इन आगै ॥ २३ ॥
जौला सब दरसन कौं आये।
तौलौ बोलत नाहि बुलाये।

टरि जैहैं जब सबै इहां तैं।
तब ऐ भली कहैंगे बातैं॥ २४॥

॥ दोहा ॥

इत उत ऐ चितवत नहीं मंद मंद मुसकात।
सीता सौं चाहत कह्यो कछू रसीली बात॥ २५॥

॥ छंद ॥

भा अनिमिष दिन द्वैक निहारे।
तब पंडा बूझे करि न्यारे।
ऐ ठाकुर बोलत क्यौं नाही।
है धौ जीव नाहि इन माही॥ २६॥
तब पंडन ऐ बचन सुनाये।
ये त्रिभुवनपति हैं छबि छाये।
बालक बुद्धि कुंवर तुम माही।
ये ठाकुर कऊं बोलत आही॥ २७॥
यह सुनिकै अचिरज चित बाढ़े।
भये आइ दरसन कौं ठाढ़े।
ऐ बिचार चित में ठहरानै।
इनकै ब्यौत सबै हम जानै॥ २८॥
नजर बचाइ सबनि की लैहै।
तब ऐ सीता ओर चितैहै।

तातै अब हौं पलक न लाऊं।
ऐ चितवै तब हसौं हसाऊं॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

यह बिचार छत्रसाल चित रहै चितै अनिमेष।
आंखिन तै भरि भरि तहां आंसू बगरि अलेख॥ ३० ॥

॥ छंद ॥

भरि भरि आंसू ढरि ढरि आवै।
छत्रसाल नहि पलक लगावै।
देखत दसा सबै मिलि ऐसी।
यह यों भई कुंवर कों कैसी॥ ३१ ॥
उमग्यो प्रेमसिंधु उर माही।
कौतुक सबै बिलोकत आही।
बिहसत रामचंद्र मन मोहै।
तकै न सीता तन तिरछो है॥ ३२ ॥
तब मन में यह बात बिचारी।
ऐ सकुचे मन में धनुधारी।
अब जौ बालगुबिंदहि पाऊं।
जौ खेलै तो इन्है खिलाऊं॥ ३३ ॥
माखन खात इन्है लखि लैहौं।
औरौ मागि धाइ सौ दैहौं।

जो ऐ नचन कैसहू आवै।
खटकत मुकट अतुल छवि छावै ॥ ३४॥

॥ दोहा ॥

यह छवि बालगुबिंद की हिये रही ठहराइ।
माया के उपजे तहां गये प्रपंच बिलाइ ॥ ३५ ॥

॥ छंद ॥

सब प्रपंच माया के छूटे।
बंधन बिदित त्रिगुन के टूटे।
आनदसिंधु लहरि बढ़ि आई।
प्रेम उमगि कछु कही न जाई ॥ ३६ ॥
ज्यौं ज्यौं उमगि प्रेम चित राच्यौ।
त्यौं त्यौं बालगुबिंदा नाच्यौ।
डोलत सीस मुकट छवि छावै।
लटकि लटकि आसन पर आवै ॥ ३७ ॥
पगतल तार पगन पर पारै।
छत्रसाल अनिमेष निहारै।
जे सिगरे दरसन कौं आये।
तिन मन में अचिरज ठहराये ॥ ३८ ॥
नाचत बालगुबिंदे देखे।
अनहोनी के लच्छन लेखे।

पंडा अति संभ्रम उर पागे।
तुरतहिं तब पौढ़ावन लागे ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥

जद्यपि बालगुबिंद जू राखे है पौढ़ाइ।
नाचे तदपि घरीक लौ संपुट पगन बजाइ ॥ ४० ॥

॥ छंद ॥

संपुट बजै सुनै सब कोई।
सबकी बुद्धि अचंभै भोई।
छत्रसाल उर प्रीति बढ़ाई।
इच्छा पूरी होन न पाई ॥ ४१ ॥
पंडा तुरत कहां तै आये।
घरिकु गुबिंद न नाचन पाये।
ढिग बुलाइ अपनै है लेतौ।
घर तै मागि मिठाई देतौ ॥ ४२ ॥
ये सुख पाइ मिठाई खाते।
मेरे ढिग तै कहूं न जाते।
पंडन आनि बिघन यह कीनौ।
घरियकु नाच न देखन दीनौ ॥ ४३ ॥
इहि बिधि अतुल मनोरथ बाढ़े।
निरखत रहे घरिक लौ ठाढ़े।

प्रेम प्रतीति प्रीति उर पागै ।
नाचै छुटक भगत के आगै ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥

चेतन तन नाचे ऊते ब्रजबनितन के संग ।
छत्रसाल के प्रेम तै नचे अचेतन अंग ॥ ४५ ॥

इति श्री लालकवि विरचिते छत्र प्रकाशे छत्रशाल वाल चरित्र बालगोबिंदनृत्यबर्ननं नाम चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥

॥ छंद ॥

ऐक जीभ हौ कहा गनाऊं ।
कछू कथा संछेप सुनाऊं ।
ऐक समै दिल्लीपति कोप्यौ ।
पगन जुझार सिंह नै रोप्यौ ॥ १ ॥
अरब खरब लौ ऊते खजानै ।
सो न जानियै कहां बिलानै ।
साठि हजार सुभट दल फूट्यौ ।
कोऊ कहूं न मारि उछूट्यौ ॥ २ ॥
साहिजहान देस सब लीनौ ।
कियौ बुंदेलखंड बल हीनौ ।

॥ दोहा ॥

हीनौ देखि बुंदेल बल दीन प्रजन के काज।
चंपतिराइ सुजान मिलि कियौ मंत्र तिहि राज ॥ ३ ॥

॥ छंद ॥

कछू कालगति जानि न जाई।
सब तै कठिन कालगति गाई।
रीती भरै भरी ढरकावै।
जो मनु करै तौ फेर भरावै ॥ ४ ॥
कीजै कहा नृपति नहि बूझै।
काल ख्याल काहू नहि सूझै।
साठि हजार सुभट लै भागे।
काहू के न जगाये जागे ॥ ५ ॥
फिरै मुलक में मुगल गदेले।
सिंहन की सुथरी गज खेले।
जाकौ बैरी करै बचाई।
सो काहेकौ जनम्यौ माई ॥ ६ ॥
अब उठिकै यह मंत्र बिचारौ।
मुलकु उजार लच्छ संहारौ।
ज्ञान गनंता पौरुष हारै।
सो जीतै जो पहिलै मारै ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

यहै मंत्र ठहराइकै उमडे दोऊ बीर।
दीनौ मुलकु उजारिकै ऐसे अति रनधीर ॥ ८ ॥

॥ छंद ॥

लाये मुलक उठाये थाने।
सुनि सुनि साहि बहुत मुरझाने।
नौसेरी सूबा पहिरायौ।
पीठलगौर सहाइक आयौ ॥ ९ ॥
सुनि बाइस उमराइ उमंडे।
थानै छोड़ औड़छे मंडे।
बिरझ्यौ चंपतिराइ बुंदेला।
फौजन पर कीन्हौ बगमेला ॥ १० ॥
जबै कमान कुंडलित कीन्ही।
कठिन मार तीरनि की दीन्ही।
तीछन तीर बज्र से छूटे।
बखतरपोस पान से फूटे ॥ ११ ॥
फौज फारि चंपति रन जीत्यौ।
अरि पर प्रलैकाल सौ बीत्यौ।
मीरगौर की फौज हराई।
मुगल संहारि करी मन भाई ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

मार्‍यौ ठिल सहिबाजखां दियौ श्रौंड़कौ बारि।
फतै फतेखां सों लई बाकीखान संहारि ॥ १३ ॥

॥ छंद ॥

मारि लूट सब फौज हराई।
सूबा दिल में दहसत खाई।
चहुं ओर ते सूबा घेरौ।
दिसनि अलात चक्र सो फेरौ ॥ १४ ॥
जरी सिरौंज भेलसा भाग्यौ।
धर उज्जैन धरधरा लाग्यौ।
छांते धमकि धमौनी मारी।
गोपाचल में खलभल पारी ॥ १५ ॥
सकल मुलक नहि जात गनाये।
चामिल ते रेवा लौ लाये।
पजरे सहर साहि के बांके।
धूम धूम में दिनकर ढाके ॥ १६ ॥
सब उमराइन चौथ चुकाई।
ओड़े को चंपति की धाई।
लिखी खबर वाकिन ठिकठाई।
पातसाह कों बांच सुनाई ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

चंपति के परताप तें पानिप गयौ सखाइ।
पौसेरी भरि रहि गयौ नौसेरी उमराइ॥ १८॥

॥ छंद ॥

सुनत साहि फिरि भेजी फौजें।
उमडी दरिया कैसी मौजें।
खानजहां सूबा चढ़ि आयौ।
त्यौंही सैदमहंमद धायौ॥ १९॥
वलीबहादुरखान हकायौ।
अरु अबदुल्लहखां पग धायौ।
और संग उमराइ घनेरे।
आये उमडि काल के पेरे॥ २०॥
डंका आइ देस में कीनौ।
मुगल पठान जुद्धरस भीनौ।
छाइ छाइ रबिमंडल लीन्हौ।
नौसेरीखां कौं बल दीन्हौ॥ २१॥
बल कौं पाइ मुगल दल गाजे।
पिले बजाइ जुद्ध के बाजे।
बड़ी फौज लखि चंपति फूले।
श्रीपति सगुन भये अनुकूले॥ २२॥

॥ दोहा ॥

सगुन भये अनुकूल सब फूले चंपतिराइ।
अति अद्भुत बिक्रम रच्यौ कासौं बरनौ जाइ ॥ २३ ॥

॥ छंद ॥

कबहू प्रगटि जुद्ध में हाकै।
मुगलन मारि पऊमितल ढाकै।
बानन बरषि गयंदनि फोरै।
तुरकनि तमकि तेग तर तोरै ॥ २४ ॥
कबहू जुरै फौज सों आछे।
लेइ लगाइ चालु दै पाछे।
बांके ठौर ठौर रन मंडे।
हाहा करै डांडु लै छंडे ॥ २५ ॥
कबहू उमडि अचानक आवै।
घन से उमडि लोह बरषावै।
कबहू हाकि हरौलनि कूटै।
कबहू चापि चदालनि लूटै ॥ २६ ॥
कबहू देस दौरिकै लावै।
रसद कहूं की कढ़न न पावै।
चौकी कहै कहां कै जैहों।
जित देखौं तित चंपति हैहों ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

चौंकि चौंकि चौकी उठै दौकि दौकि उमराइ।
फाके लसगर में परे थाके सबै उपाइ॥ २८॥

॥ छंद ॥

जब उपाइ सूबनि के थाके।
सुनि सुनि साहि सबनि कौं ताके।
अब कीजे कैसौ मनसूबा।
हैं हैरान सिगारे सूबा॥ २९॥
तब मंत्रिन मिलि मंत्र बिचाख्यौ।
चंपति उर नहि ये सब हाख्यौ।
जो अनेक जुद्धन कौ जीते।
सो फल पावै जो चित चीतै॥ ३०॥
तासौं भूल बिरोध न कीजे।
जौ कीजै तौ तन धन छीजै।
चंपति के चित की हम जानै।
औरन बैठ न पावै थानै॥ ३१॥
राज औंड़छे कौ सुनि लीजै।
प्रबल पहारसिंह कौ दीजै।

॥ दोहा ॥

पायौ राज पहार नृप चली चाह सब ठाइ।
गई भूमि भुजदंड बल फेरी चंपतिराइ॥ ३२॥

॥ छंद ॥

गई भूमि चंपति फिरि फेरी।
मेटी फिकिर दाहिनी डेरी।
नगर ओंड़छे बजी बधाई।
भई देस के मन की भाई ॥ ३३ ॥
मैड बुंदेलखंड की राखी।
रही मैड अपनी अभिलाषी।
नृपति पहारसिंह सुख पायौ।
चंपतिराइ मिलन कौं आयौ ॥ ३४ ॥
तब नृप कलस पांवड़े कीनै।
आदर करि आगैसर लीनै।
भुजा पसारि मिले छबि छाये।
उमगि अंगननि मंगल गाये ॥ ३५ ॥
मुकताहलन अतुल भुज पूजै।
चंपति के सबही जस कूजै।
धन चंपति फिरि भूमि बहोरी।
भुजन पातसाही झकझोरी ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥

प्रलय पयोधि उमंड में ज्यौं गोकुल जदुराइ।
त्यौं बूड़त बुंदेलकुल राख्यौ चंपतिराइ॥ ३७ ॥

॥ छंद ॥

राज पहारसिंह कौ राख्यौ।
उन उर दोष धस्यौ गुन नाख्यौ।
सब जग चंपति के जस गावै।
सुनि सुनि अनख भूप उर आवै॥ ३८॥
बढ़ी ईरषा उर में ऐसी।
कथा भीम दुरजोधन के सी।
उर में छई कपट कुटिलाई।
करन लगे अपनी मनभाई॥ ३९॥
नृप मन में यह मंत्र बिचार्‌यौ।
इनि चंपति अरि कौ दल झार्‌यौ।
इनकौ मन तबही तै बाढ्यौ।
त्यौंहीं सुजसु जगत मुख काढ्यौ॥ ४०॥
अब जौलौ इनके जस फैलै।
तबलौ बदन हमारे मैले।
अरु जो कहूं फिसाद उठावै।
तौ हम पै दिल्लीस रुठावै॥ ४१॥

॥ दोहा ॥

तातै जो चढ़ि मारियै तौ अपजसु बिस्तारु।
न्यौति गुपित कछु दीजियै यहै मंत्र है सारु॥ ४२॥

॥ छंद ॥

मार मंत्र ऐसौ ठहरायौ।
पाप पहारसिंह उर आयौ।
बिसर गई जो करी निकाई।
उगल्यौ गरल दूध की थाई॥ ४३॥
ऐक समै न्यौते सब भाई।
आदर सौं ज्यौंनार बनाई।
उमग भरे सब बंधु बुलाये।
चंपतिराइ सहित सब आये॥ ४४॥
जथा उचित हित सौं बैठारे।
परसन लगे बिसद पनवारे।
तहां भूप जे कूलक मानै।
ते हित में काहू नहि जानै॥ ४५॥
पनवारौ चंपति कौ आनौ।
देखि सुवा सारो किररानौ।
लोचन मूदि चकोर डरानै।
जानि गये जे चतुर सयानै॥ ४६॥

॥ दोहा॥

जाननहार जानियौ भोजन के आरंभ।
भिंम बुंदेला कौं भयौ प्रगट भूप कौं दंभ॥ ४७॥

भिंम दंभ भूपति कौ जान्यौ।
अपनौं प्रान त्याग उर आन्यौ।
चंपति कौ पनवारौ लीनौं।
अपनौ बदल चंपतिहि दीनौं॥ ४८॥
भोजन करि डेरन कौं आये।
गुपित मंत्र काहू न जनाये।
लगी भिंम कों अतुल दिनाई।
तुरत हि मीच समै बिन आई॥ ४९॥
भिंम लोक आनद में पायौ।
बंधु हेत जिन प्रान गमायौ।
गुपित हती नृप की कुटिलाई।
प्रगट भिंम की मीच बताई॥ ५०॥
कोऊ करौ किती चतुराई।
पाप रीति नहि छपै छपाई।
जो बिधि रची होत है सोई।
जस अपजस लेऊ किनि कोई॥ ५१॥

॥ दोहा ॥

यह उपाइ निरफल भयौ नृप पछितायौ चोर।
चटक चपट पट में चढ़ै दयै बोर पर बोर॥ ५२॥

॥ छंद ॥

नृपति पहार चोर पहिराये।
चंपति के मारन कौं आये।
जब ही रैन अंधेरी आई।
चले करन तसकर मनभाई ॥ ५३ ॥
स्याम रंग कुलही सिर दीन्हे।
स्याम रंग कछनी कछ लीन्हे।
बाढ़ धरे बगुदा कटि बाधे।
स्याम कमान स्याम सर साधे ॥ ५४ ॥
होत न आहट भौ पग धारे।
बिन घंटन ज्यौं गज मतवारे।
स्याम रंग तन माह समाने।
चौकीदारनि जात न जाने ॥ ५५ ॥
चोर पैठि महलनि में आये।
तहां ब्यौत है बने बनाये।
और भौन में दीपक दीन्हौ।
निज घर कौ चंपति घर कीन्हौ ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

और दीप परगास में लख्यौ काहु तै चोर।
तानि कनपटी में हन्यौ कढ़्यौ बान उहि ओर ॥ ५७ ॥

॥ छंद ॥

गिह्यौ चोर चंपति कौ मार्‍यौ।
औरनि लियौ उठाइ निहार्‍यौ।
चले चोर सब लोग जगाये।
सोरसार करि दूर भगाये॥ ५८॥
सदा प्रबुद्ध बुद्धि है जाकी।
तासौ कैसे चलै कजाकी।
यह सुनिकै चंपति की माता।
दानबिधान ज्ञान गुनज्ञाता॥ ५९॥
निकट आपनै पुत्र बुलाये।
सुखद मंत्र के बचन सुनाये।
तुम कीन्ही नृप कौ हित ऐंडै।
अब नृप पर्‍यौ तुम्हारै पैंडै॥ ६०॥
तातै अब यह मंत्र बिचारौ।
दिल्लीपति मिलिवौ अखत्यारौ।
मिलै दिलीस बहुत सुख पैहै।
मनमान्यौ मनसब कर दैहै॥ ६१॥

॥ दोहा ॥

ऐसै मंत्र बिचारिकै पठयौ दिल्ली उकील।
सुनत साहि उमग्यौ हियौ कब देखौं वह डील॥ ६२॥

॥ छंद ॥

सुनत साहि चंपति चित चाहे।
देखन के उर लगे उमाहे।
पहुंच्यौ चंपतिराइ बुंदेला।
मानी साहि धन्य वह बेला ॥ ६३ ॥
दै मनसब खंधार पठाये।
दारा की तावीन लगाये।
गढ़ खंधार जाइकै घेरौ।
मुलकनि हुकुम साहि कौ फेरौ ॥ ६४ ॥
जब उमराइ घेरि गढ़ लागे।
चंपतिराइ जुद्ध रस पागे।
गढ़ के निकट मोरचा रोपे।
सब उमराइन के जस लोपे ॥ ६५ ॥
ढकिल करी सबतै अधिकाई।
ओड़ी गुरु गोलिन की घाई।
डारे हलनि हलाइ गढ़ोई।
अरि के हिय की हिंमत खोई ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

दारा गढ़ खंधार की पाई फतै अचूक।
चंपति की हिंमत लखैं उठी हिय में हूक ॥ ६७ ॥

॥ छंद ॥

चंपति की हिंमत उर आनै।
रीझ ठौर दारा अनखानै।
फतै पाइ दिल्ली फिरि आये।
मुजरा करिकै साहि मिलाये ॥ ६८ ॥
सिंह पहार अनषु उर आनै।
ठान प्रपंचनि कै उर ठानै।
चोरी करै आप चढ़ फेरा।
खोज डारि चंपति के डेरा ॥ ६९ ॥
खोज पाइ जग इन्है लगावैं।
निरनौ देत अनषु उर आवै।
इहि बिधि डौर भेद के डारै।
चतुरन ह्न नहि परत निहारै ॥ ७० ॥
कपट प्रपंच जु कैकरि आवै।
झूठ ठौरि ते साच बतावै।
लिखै चितेरौ ज्यौं जलबीची।
सम कागद में ऊंची नीची ॥ ७१ ॥

॥ दोहा ॥

दुहू ओर अंतर पर्यौ क्रम ही क्रम यह रीति।
हिये अनषु उनकै बढ्यौ इनकै धरी प्रतीति ॥ ७२ ॥

॥ छंद ॥

दुहूं ओर अंतर जब जान्यौ।
पिसुन प्रवेष तबै उर आन्यौ।
भूप कह्यौ दारा सौ ऐसै।
सुनौ भाग चंपति कौ जैसे ॥ ७३ ॥
तीन लाख की कौंच सुहाई।
दई साहि इनकौ मनभाई।
हाल जमा नौ लाख गनाई।
बिना तफावत अबलौ खाई ॥ ७४ ॥
तातै कौंच हमै जौ दीजै।
तौ नौ लाख रुपैया लीजै।
यह सुनिकै दारा सुख पायौ।
पहिलौ अनषु हिये चढ़ि आयौ ॥ ७५ ॥
जहां न गुन की बूझ बड़ाई।
चुगली सुनै चित्त दै साई।
रीझ ठौर प्रभु खीझ जनावै।
तहां कौन गुन गुनी चलावै ॥ ७६ ॥

॥ दोहा ॥

रीझ फूलि खंडन करै डारि खीझ कै डौर।
ऐसौ स्वामी सेइयै तातै दुःख न और ॥ ७७ ॥

॥ छंद ॥

दारासाहि लोभ उर आन्यौ।
सेवा कौ सिगरौ फल मान्यौ।
चंपति कौ यह बात सुनाई।
तू जागीर तीगुनी पाई॥ ७८॥
कौंच पहारसिंह मनभाई।
देता हौं मेरे मन आई।
तीन हुकुम दारा जो बोले।
चंपतिराइ बचन त्यौं खोले॥ ७९॥
कौंच जाइ चंडालनि दीजै।
वृथा हमारौ छोर न छीजै।
यह सुनिकै दारा अनखान्यौ।
अरुन रंग आनन में आन्यौ॥ ८०॥
चंपतिराइ समर उर ठान्यौ।
दिग्गज से दोऊ ऐड़ान्यौ।
दिगपालन कौ दहसत बाढ़ी।
मजलिस रही चित्र ज्यौं काढ़ी॥ ८१॥

॥ दोहा ॥

दिगपालन कौ दहसत बढ़ी कठिन देखि वह काल।
तुरत आनि आड़ा भयौ हाड़ा श्री छत्रशाल॥ ८२॥

॥ छंद ॥

हाड़ा चंपति कै ढिग आयौ।
दारा कौ न भयौ मनभायौ।
दारा अंदर कौं पग धारै।
चंपति के दूत बजे नगारै ॥ ८३ ॥
डंका प्रगट बिसर कै बाजे।
चंपतिराइ देश में गाजे।
छोड़ि पातसाहन की सेवा।
कियौ अलंकृत आइ महेवा ॥ ८४ ॥
पुत्र कलत्र मित्र सब भेटे।
दिल के दुःख सबन के मेटे।
चहूं चक्र फौजैं फरमाई।
अरि की बदन जोति मैलाई ॥ ८५ ॥
थानकनि गढ़ि धरि रहे लुकाई।
सूबन सौ हठि चौथ चुकाई।
दै हयवृंद कबिंदन गाजै।
निरमल सुजस जगत छबि छाजै ॥ ८६ ॥

॥ दोहा ॥

फैले चंपतिराइ के जग में सुजस बिलंद।
उदै भये तिऊ लोक जनु कैयक कोटिन चंद ॥ ८७ ॥

॥ छंद ॥

तिहूं लोक चंपति जसु जाग्यौ।
सुनि सुनि को न हिये अनुराग्यौ।
नृपति पहार करी जे घातैं।
ते प्रगटी कहिवे कों बातैं॥ ८८॥
जग में करी जे न छतु मानै।
नीकी करी लटी उर आनै।
तिनके थल जे बने बनाये।
नृपति पहारसिंह ते पाये॥ ८९॥
सदा न जग में जीवै कोई।
जस अपजस कहिवे कों होई।
जग जबतै अपजस जस छावै।
क्रम तै अध ऊरधि गति पावै॥ ९०॥
खोदे कुवा पघारे खालै।
महल उठावै ऊंचे चालै।
इहि बिधि कर्मन की गति गाई।
वेद पुरानन सुनी सुनाई॥ ९१॥

॥ दोहा॥

जैसी मति उपजै हिये तैसौ मनु ठहराइ।
होनहार जैसी कछू तैसो मिलै सहाइ॥ ९२॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे चौरवध पहार सिंहप्रपंचवर्ननं नाम पंचमोध्यायः ॥५॥

॥ छंद ॥

ऐक और अब सुनौ कहानी।
हौनहार गति जात न जानी।
साहिजहां दिल्लीपति गायौ।
जाकौ ऊकुम चऊं दिस छायौ ॥१॥
चारि पुत्र ताके मरदानै।
दारासाह साहि मनमानै।
और मुरादसाह अरु सूजा।
औरंगसाह समान न दूजा ॥२॥
बत्तिस बरष साह रस भीनै।
भोग पातसाही के कीनै।
जबै अवस्था उतरन लागी।
पुत्र प्रीति मन में अनुरागी ॥३॥
साहिजहां यह चित्त बिचारी।
दारा कौं दीन्ही सिरदारी।
दारा अपनौ ऊकुम चलायौ।
सब भाइन कौं हियौ हलायौ ॥४॥

॥ दोहा ॥

ऊकुमनु के दिल्लीस कौ भई और की और।
उमडि साहजादिन किये तखत लैन के डौर ॥ ५ ॥

॥ छंद ॥

ब्यौत बिमल बुद्धिन के डारे।
तखत लेन के चित्त बिचारे।
साहमुराद हियौ ऊलसायौ।
गज सिक्का चलिवौ फरमायौ ॥ ६ ॥
औरंगसाह चाहि सुनि लीनी।
बिलसाई बर बुद्धि प्रबीनी।
इच्छा प्रगट तखत की छांडी।
प्रीति मुरादसाह सौ मांडी ॥ ७ ॥
चित दै हित के लिखे लिखाये।
अति प्रबीन उमराइ पठाये।
कह्यौ मुरादसाह सौ ऐसौ।
सरस बिचार मंत्र है जैसौ ॥ ८ ॥
बिन हो दिली तखत लै बैसै।
आन चलै गज सिक्का कैसै।
पेल तखत पर बैठे जोई।
दिल्ली पातसाह सो होई ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

हमैं न इच्छा तखत की यह जानै सब कोइ।
चलो तुम्हे लै देहिंगे होनी होइ सु होइ ॥ १० ॥

॥ छंद ॥

औरंगसाह मंत्र तब कीनौ।
साहमुराद हिये धरि लीनौ।
ढिढ़ ठहराव यहै ठहरायौ।
बाढ़ी प्रीति कुरान उठायौ ॥ ११ ॥
दछिन तै उमडे दोउ भाई।
ठिले दोह दल पऊमि हलाई।
पूरब तै सूबा दल साजे।
प्रगट जुद्ध के धौसा बाजे ॥ १२ ॥
दारा घाट धौरुपुर बांध्यौ।
रोपि अराबे कलहै कांध्यौ।
सूबन के दिल दहसत ऐसी।
अवधौ दई करत है कैसी ॥ १३ ॥
हलचल मची चहूं दिस ऐसी।
खलभल प्रलैकाल की जैसी।
प्रगटी चाह सोढरा ढरक्यौ।
चंपति कौ दछिन भुज फरक्यौ ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

फरक्यौ चंपतिराइ कौ दच्छिन भुज अनुकूल।
बड़ी फौज उमडी सुनी भई जुद्ध की फूल ॥ १५ ॥

॥ छंद ॥

बड़ी फूल चंपति सुख पायौ।
औरंग उमडि अवंती आयौ।
सिंह मुकुंद हतौ तंह हाड़ा।
दल कौं भयौ ऐंड़ धर आड़ा ॥ १६ ॥
उमग्यौ औरंग कौ दल गाढ़ौ।
हाड़ा भयौ समर में ठाढ़ौ।
बिकट मार समसेरन माची।
बाजत मारु कालिका नाची ॥ १७ ॥
हाड़ा हरषि बिमानन बैठ्यौ।
तब औरंग अवंती पैठ्यौ।
नौरंगसाह तखत कौं उमड्यौ।
दारा जहां मेघ सौ घुमड्यौ ॥ १८ ॥
सुनी खबर दारा अति कोप्यौ।
चामिल घाट अरावौ रोप्यौ।
फिकिर बढ़ी सब के दिल ऐसी।
अवधौ दई होति है कैसी ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

कैसी धौ अब होति है कीजै कौन बिचार।
उड़ैं अराबे में सबै भयौ सुभट संहार ॥ २० ॥

॥ छंद ॥

तब औरंग सबनि तन ताके।
बल बैसाउ सबन के थाके।
चहत चित्त चारिऊ दिस दौरे।
कछु न बुद्धि काहू की औरै ॥ २१ ॥
तब औरंग मतौ यह कीनौ।
बिमल चित्त में चंपति दीनौ।
हित सौ लिखि फरमान पठायौ।
चंपतिराइ सुनत सुख पायौ ॥ २२ ॥
उमग भरे दल साजि उमंडे।
नरवर ढिग नौरंग जह मंडे।
तंह अलगारन धाइ पहुंचे।
देखे दल के झंडा ऊंचे ॥ २३ ॥
चहू दिस सोर कटक में छायौ।
चंपतिराइ बुंदेला आयौ।
सुनि औरंग उर उमग बढ़ाई।
मनौ फते दिल्ली की पाई ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

आनन औरंगसाह कौ चढ़्यौ चौगुनौ चाव।
ल्यावो चंपतिराइ कौं हमलौ मिलै सिताव ॥ २५ ॥

॥ छंद ॥

धावत ऐक सहस जन धाये।
चंपति कौं हित बचन सुनाये।
नौरंगसाह तुम्हैं चित चाहै।
सबै तुम्हारे भाग सराहै ॥ २६ ॥
तातै अब बड़ बिलम न कीजै।
चलि दिलीस कौं दरसन दीजै।
तौलगि नौरंगसाह पठायौ।
तुरत बहादुरखां चलि आयौ ॥ २७ ॥
कह्यौ आइ चंपति सौ भाई।
तुम इतनी क्यौं बिलम लगाई।
अब यह समै बिलम कौ नाही।
भई तिहारे चित की चाही ॥ २८ ॥
अब यह हाजिर है असवारी।
चढ़ौ पालकी करौ तयारी।
चढ़ि पालकी पयानौ कीन्हौ।
हरष प्रसन्न साह कौ लीन्हौ ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

मुजरा करि ऊभी भयौ पंचम चंपतिराइ।
लखि आंखिन औरंग की आनंद झलक्यौ आइ ॥ ३० ॥

॥ छंद ॥

औरंग अति आदर सौं बोले।
मिलतहि बचन मंत्र के खोले।
दारा उमडि जुद्ध कौं आयौ।
कटक अडोल धौरपुर छायौ ॥ ३१ ॥
बिकट अराबौ सनमुख दोनौ।
चामिल घाट बांधि उन लीनौ।
छुटै समुद सूखै चहूं घा के।
उड़े मेरु मंदर से बांके ॥ ३२ ॥
जौ समसेरन होइ लराई।
ओड़ै सुभट सुभट की घाई।
उमगे सूर साह के बाजै।
ठेलै कौन प्रलै की गाजै ॥ ३३ ॥
चामिल पार कौन बिधि हूजै।
जैसै मन की इच्छा पूजै।
आइ भयौ समयौ यह ऐसौ।
चंपतिराइ कीजियै कैसौ ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

कैसें अब कीजे कहौ पंचम चंपतिराइ।
अब आदर औरंग कौ थयौ चौगुनौ चाइ ॥ ३५ ॥

॥ छंद ॥

बोल्यौ चंपतिराइ बुंदेला।
और घाट ह्वै कीजै हेला।
जौ दारा उत आड़ौ आवै।
तौ रन हम सौ बिजै न पावै ॥ ३६ ॥
सुनि औरंग अचरज उर आन्यौ।
और घाट चंपति तुम जान्यौ।
चंपति कही घाट हम जानै।
तखत काज तुम करौ पयानै ॥ ३७ ॥
सुनि औरंग तखतरस भीनै।
चौदह लाख खरच कौ दीनै।
कीनौ कूच राति उठि जागै।
चंपति भयौ सबन के आगै ॥ ३८ ॥
उमडि चलै दारा के सोहैं।
चढ़ी उदंड जुद्धरस भोहैं।
चामिल उतरि सुभटगन गाजे।
पार जाइ संधाने बाजे ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

चंपति मुख औरंग के भली चढ़ाई ओप।
नातर उड़ि जातै सबै छुटै तोप पर तोप ॥ ४० ॥

॥ छंद ॥

चामिल पार भई सब फौजैं।
तब नौरंग मन मानी मौजैं।
दारासाह खबर यह पाई।
चामिल पार फौज सब आई ॥ ४१ ॥
आगैं चंपतिराइ बुंदेला।
कै हरौल कीन्हौ बगमेला।
चामिल पार भये सब आछे।
तजै अडोल अराबे पाछे ॥ ४२ ॥
दारा के दिल दहसत बाढ़ी।
चूमन लगे सबनि की डाढ़ी।
को भुजदंड समर में ठोकै।
उमड़्यौ प्रलैसिंधु को रोकै ॥ ४३ ॥
छत्रसाल हाड़ा तंह आयौ।
अरुन रंग आनन छबि छायौ।
भयौ हरौल बजाइ नगारौ।
सार धार कौ पहिरनहारौ ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥

कै हरौल हाड़ा चल्यौ पैरनि साहसमुद्र।
दारा अरु औरंग मड़े मनौ त्रिपुर अरु रुद्र ॥ ४५ ॥

॥ छंद ॥

दारा अरु औरग उमंडे।
मनौ प्रलैघन घोर घमंडे।
बजै जुद्ध में निबिड़ नगारे।
दुऊ दिसि बजे अरावे भारे ॥ ४६ ॥
गुर गंभीर घोर धुनि छाई।
फटि ब्रह्मंड परै जनि भाई।
त्यौं बोले उमराउनि हल्ला।
जम के भये कटीले कल्ला ॥ ४७ ॥
हय गय रथ पैदल रन जूटे।
घाइन सहित कवच धर फूटे।
चंपति की जब बजी बदूखै।
मसहारिन की मेटी भूखै ॥ ४८ ॥
दारा सार बजत रन छाज्यौ।
जबत पातसाही कौ भाज्यौ।
हाड़ा सार धार में पैठ्यौ।
हरज भेद बिमाननि बैठ्यौ ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

सूरन कौं सुरपुर मिल्यौ चंद्रचूड़ कौ हारु।
तखत मिल्यौ औरंग कौं चंपति कौं जस चारु ॥ ५० ॥

॥ छंद ॥

चंपतिराइ सुजस जग गायौ।
कै हरौल दारा बिचलायौ।
हरवल कै दारा कौ बांकौ।
बेटा बली बहादुरखांकौ ॥ ५१ ॥
जुद्ध बुंदेलनि सौं जब साच्यौ।
हय हथयार छांड़ि भगि माच्यौ।
पाई फतै भयौ मनभायौ।
औरंग उमडि आगरें आयौ ॥ ५२ ॥
दारा पकरि पठाननि लीन्हौ।
साह मुराद कैद में कीन्हौ।
धरनी लोक दुऊनि तैं छूट्यौ।
नौरंगसाह तखत सुख लूट्यौ ॥ ५३ ॥
बैठे तखत बजे संधानै।
चंपतिराइ साह मनमानै।
नौरंगसाह कृपा करि भारी।
मनसब दीन्हौ दुदस हजारी ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

ऐरछ अरु सहिजादपुर कौंच कनार समूल।
मिली बड़ी जागीर सब धरि जमुना कौ कूल॥ ५५ ॥

॥ छंद ॥

मिली बड़ी जागीर सुहाई।
जहँ समीप भतीजे भाई।
मुसकी तुरग लूट जो आनौ।
खोज बहादुरखां सो जानौ॥ ५६ ॥
कहि पठई चंपति कौं भाई।
घर की लूट तिहारे आई।
दल में लुट्यौ भतीजौ तेरौ।
सो सब साज प्रीति में फेरौ॥ ५७ ॥
वह करवाल ढाल अरु घोरा।
दीजौ राखि आपनौ तोरा।
चंपति कौं यह बात सुनाई।
बैठे ऐंड़ प्रीति सों पाई॥ ५८ ॥
तब चंपति ऊतर यह दीनौ।
करि घमसान तुरग हम लीनौ।
ताकी अब चरचा न चलावो।
घर ही यह मन कौ समुझावो॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

सुनत बहादुरखां बली उत्तर दियौ न और।
अनखु हिये में धरि रह्यौ डारि बुद्धि के डौर ॥ ६० ॥

॥ छंद ॥

तौलगि सोर कटकु में छायौ।
पूरब तै सूजा चढ़ि धायौ।
गंगा उतरि प्रयाग पछेल्यौ।
औरंगसाह सुनत दल पेल्यौ ॥ ६१ ॥
हुकुम बहादुरखां कौं कीन्हौ।
उनि सुख मानि सीस धरि लीन्हौ।
उमडि फौज पूरब कौं धाई।
हयखुर गरद गगन में छाई ॥ ६२ ॥
और हुकुम चंपति पै आयौ।
बैठे कहा साह फरमायौ।
गैरहाजिरी लिखिहै कोई।
मनसब घटै तगीरी होई ॥ ६३ ॥
आलमगीर आप फरमायौ।
हुकुम न मानै सो दुख पायौ।
उहित बचन उकील सुनायौ।
चंपति हिये अनख बढ़ि आयौ ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

अनखु बढ्यौ मनसब तज्यौ सेवा कछु न सुहाइ।
डंका दै चंपति चल्यौ आग आगरै लाइ॥ ६५॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे औरंगजेबप्रपंच चंपतिराइविक्रम मुकुंदहाड़ाबध दाराशाहपराजय छत्रसालहाडाबधवर्णनं नाम षष्ठोध्यायः॥ ६॥

॥ छंद ॥

चंपतिराइ देस मं आये।
चंड प्रताप चहूं दिस छाये।
फौज पेलि भांड़ेर उजारी।
भुमियावट उर में अखत्यारी॥ १॥
ऐरछ आइ कोट में बैठे।
सूबन के उर में डर पैठे।
पहुंची खबर साह कों ऐसी।
चंपतिराइ करी उत जैसी॥ २॥
सो आरंग चित्त धर लीनी।
पहिल फिकिर सूजा की कीनी।
नौरंगसाह साज दल धायौ।
जझ्झ जीत सूजा बिचलायौ॥ ३॥

दावादार रह्यौ नहि कोई ।
बैठ्यौ तखत साहिबी जोई ।

॥ दोहा ॥

गज सिक्का औरंग कौ चल्यौ हुकुम लै संग ।
देसनि देसनि कों चले सूबा तेज अभंग ॥ ४ ॥

॥ छंद ॥

सूबा ह्वै सुभकरन सिधायौ ।
हित सौं पातसाह पहिरायौ ।
संग बाइस उमराउ पठाये ।
लै मुहीम चंपति पै आये ॥ ५ ॥
जोरि फौज सुभकरन बुंदेला ।
ऐरछ पर कीन्हौ बगमेला ।
बाजत सुनै जूझ के डंका ।
उमडि चल्यौ चंपति रनबंका ॥ ६ ॥
माची मार दुहूं दिस भारी ।
रचनहार कों मुसकिल पारी ।
चले हाथ चंपति के ऐसे ।
छूटै बान धनंजय के से ॥ ७ ॥
उतकट भट बखतर धर मारे ।
कूटे हय गय पक्खरवारे ।

सूखे कढ़ रुधिर नहि छीवै।
लागत प्रान परन के पीवै ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

ठिल्यौ कटक सुभकरन कौ ठिल्यौ खवास अडोल।
रनउमंग में उमडिकै नच्यौ तुरंग अमोल ॥ ९ ॥

॥ छंद ॥

तबहि बान चपंति कौ छूट्यौ।
हठुवा लग्यौ पुठी ह्वै फूट्यौ।
गिर्‌यौ तुरंग खवास हकार्‌यौ।
सो कासिमखां बरछी मार्‌यौ ॥ १० ॥
उगरसाह तंह मार मचाई।
साहिगढ़े अति ओप चढ़ाई।
चंपतिराइ विजै तंह लीनौ।
मुह मुरकाइ अरिन कौ दीनौ ॥ ११ ॥
बिकट कटक झुकझोरि झुलायौ।
कांतै उमडि धरौनी धायौ।
निकट रायगिरि तै तंह आयौ।
तहां खोज बंका दल छायौ ॥ १२ ॥
जानि कटक उमराइ करेरौ।
दीनौ राति उमंडि दरेरौ।

सुभट बान गोलिन सैां कूटे।
अरि के बिकट मोरचा छूटे॥ १३॥

॥ दोहा॥

पैठे उदभट कटक में कपटे बिकट पठान।
घाइन घालत चाव सैा करि चंपति की आन॥ १४॥

॥ छंद॥

तहां मार माची अति भारी।
चंपतिराइ तेग झुक झारी।
उमडि बैरि कैां चलदल कीन्हो।
कटक जुद्ध कैां पैदल लीन्हो॥ १५॥
समर बीर बैरिन पग रोपे।
जीन जिहाज ओट धरि कोपे।
बर्षत अस्त्र कवच धर फूटे।
मघामेघ मानैा झर जूटे॥ १६॥
तहां चैादहामेघ सिधाह्यो।
सुनि सरदार समान हकाह्यो।
कहै चैादहा मुजरा मेरैा।
हैां मारैा सरदार अनेरैा॥ १७॥
चंपति लख्यो बचन सुनि प्यारैा।
ओचक आनि कियो उजियारैा।

कुय्यौ बान बैरी कौ भूख्यौ।
छाती लग्यौ कढ़्यौ अति रूख्यौ ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

पंचम चंपतिराइ कै लग्यौ बान कौ घाइ
अधिक जुद्ध के रस भयौ बढ्यौ चौगुनौ चाइ ॥ १९ ॥

॥ छंद ॥

हला बोलि बैरी महि आयौ।
चंपतिराइ जुद्धरस छायौ।
रन चंपति की नची कृपानी।
धरी भीम जनु कीचक घानी ॥ २० ॥
फौज फारि चंपति जसु लीन्हौ।
अमृत हरत ज्यौं सुपरन कीन्हौ।
कटकु खोज बंका कौ कूय्यौ।
चंपतिराइ बिजै सुख लूय्यौ ॥ २१ ॥
जीति पाइ अनघोरी आये।
चालदई सुभकरन सिधाये।
तंह सिकार खेलन अभिलाषी।
देवीसिंह नृपति की राखी ॥ २२ ॥
आइ अजीतराइ तंह रोके।
बर भुजदंड समर में ठोके।

रहो अजीतराइ के ऐंड़े।
पैठि सक्यौ सुभकरन न मैंड़े ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

राजा देबीसिंह कौं डेरौ दीनौ देष।
समझौ चंपतिराइ पै श्री सुभकरन नरेस ॥ २४ ॥

॥ छंद ॥

सुनि सुभकरन जुद्ध रस भीनौ।
मंत्र सुजानराइ सौं कीनौ।
लरत भिरत बहु काल बितीते।
घने जुद्ध सूबन सौं जीते ॥ २५ ॥
ऐंड़ पातसाहिन सौं कीनी।
गई भुंमि बंधुनि लै दीनी।
कठिन ठौर मसलहत बताई।
नौरंगसाह दिली तब पाई ॥ २६ ॥
दारा दल जीते मुहरा तै।
बड़ौ कौन अब हम कौं वा तै।
घाइल भये हमारे भाई।
और अवस्था सी कछु आई ॥ २७ ॥
ऐ सुभकरन पिलै दल साजै।
बंधु विरोध करत हम लाजै।

जा कीजै अब उमडि लराई।
जीते हू जग में न बड़ाई॥ २८॥

॥ दोहा॥

गोत घाउ तै आजु लौ हमै बचायौ ईस।
अब सलाह इन सौ करैं कछू न ह्वैहै खीस॥ २६॥

॥ छंद ॥

ज्यों मन आनि लगाई बातै।
होइ सलाह कपट बिन जातै।
सुनि सुभकरन घनौ सुख पायौ।
मन मिलाइ मिलिवौ ठहरायौ॥ ३०॥
त्यौं चंपति कहि कुशल सुहाती।
लिखी सुजानराइ कौं पाती।
सुरह्यौ घाइ देह बल आयौ।
खेल षिकार तुरग दौरायौ॥ ३१॥
बांचत चिठी जान वह लीनी।
चंपतिराइ सलाह न कीनी।
मिलिवे काज बोल हम बोल्यौ।
हित सौ हियौ सुभकरन खोल्यौ॥ ३२॥
बोल बोलि जौ मिलन न जैयै।
तौ झूठे जग में ठहरैयै।

तातै बनै मिलै निरधारै।
चंपति हमै न झूठे पारै॥ ३३॥

॥ दोहा॥

मिलिवो राइ सुजान कैं हिये रह्यौ ठहराइ।
इत अनघोरी ले चलै घर कों चंपतिराइ॥ ३४॥

॥ छंद॥

घर कों चंपतिराइ सिधाये।
दल लै दुवन दलीपुर आये।
तंह छत्रसाल भगतिरस भीनै।
उमगि पिता के दरसन कीनै॥ ३५॥
पहुंचि बेदपुर में छबि छाये।
मिलै सुजानराइ मन भाये।
दोऊ बीर मंच कों बैठे।
दिगपालनि के उर भय पैठे॥ ३६॥
तहां सुजानराइ जो बोले।
बचन सलाह करन के खोले।
ते चंपति के चित्त न लागे।
उद्दित जुद्ध बुद्धिरस पागे॥ ३७॥
जब हम बिरस साह सो कीनो।
तब इनि बचन कह्यौ रिस भीनो।

हम न साह कौ मनसब छैहै।
भुमियावट में सामिल रैहै ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

जब हम भुमियावट करी तब इन करी मुहीम।
हमै जीति ऐ श्रौंड़छौ चाहत है सब सीम ॥ ३९ ॥

॥ छंद ॥

चंपतिराइ सलाह न मानी।
राइ सुजान वहै ठिकठानी।
मन बच कर्म संधिरस राचे।
मिलै न चंपति जब क्है साचे ॥ ४० ॥
तंह सुभकरन साजि दल धाये।
समर ठान चंपति पै आये।
फौजै उमडि निकट जब आई।
तब कीन्ही चंपति मनभाई ॥ ४१ ॥
दल पर बान बज्र से बरषे।
कौतुक लखै देवता हरषे।
हलनि हलाइ फौज वंध फोरे।
घनझुंडा ज्यौं पवन झकोरै ॥ ४२ ॥
खलभल परी दुवन दल भानै।
कित धौ गयौ कौन नहि जानै।

जब न व्यौंत कछु चलै चलाये।
तब सुभकरन हजूर बुलाये ॥ ४३ ॥

॥ दोहा ॥

संग लै राइ सुजान कौं मुजरा कीन्हौ जाइ।
देखि साह सुभकरन कौं अनतहि दियौ पठाइ ॥ ४४ ॥

॥ छंद ॥

त्यौंही साह कियौ मनसूबा।
दच्छिन कौं भेजौ कर सूबा।
नामदारखां नाम बखानौ।
दीलीपति के अति मनमानौ ॥ ४५ ॥
रतनसाह तिन संग पठाये।
चंपति रहे देस में छाये।
लिखी नवाब साह कौं ऐसी।
चाहे करन बड़ाई जैसी ॥ ४६ ॥
रतनसाह चंपति कौ जायौ।
मिल्यौ मोहि सेवा में आयौ।
ऊतर साह न दूजौ दीन्हौ।
बांचत लिखौ कैद करि लीन्हौ ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

दिलीपति की ओर कौ जबही सुन्यौ जुवाब।
रतनसाह कौं तुरत ही बिदा कियौ जु नवाब ॥ ४८ ॥

॥ छंद ॥

राइ सुजान करी जे घातैं।
ते न भईं सब मन की बातैं।
ह्वै उदास ह्यांते उठि आये।
ऐ बिचार मन में ठहराये॥ ४९ ॥
जहां न आदर बूझ बड़ाई।
जहां न प्रापति बंधु न भाई।
जहां न कोऊ गुन कौ पूजै।
तहां न पल भर ठाढ़े ह्जै॥ ५० ॥
सेवा पातसाह की छाड़ी।
फेरि सलाह औंड़छै माड़ी।
तब बिनई हीरादे रानी।
हम सेवा नृप की उर आनी॥ ५१ ॥
कछु न कपट जानौ हम माही।
निहचै चंपति में हम नाही।
तब रानी जुग फूच्यौ जान्यौ।
उर बिस्वास करिबौ ठिकठान्यौ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

त्योंही राइ सुजान सौ हितुन कही समुझाइ।
तुम अपनी रचा करौ रचियतु इहां उपाइ॥ ५३ ॥

॥ छंद ॥

यह सुनि राइ सुजान सिधाये।
तज औंड़छौ बेदपुर आये।
अंगदराइ रतन गुन भारे।
छत्रसाल जग दृग के तारे ॥ ५४ ॥
तीनौ कुंवर महेवा छाये।
समाचार फौजन के आये।
तिन में छत्रसाल परवीनै।
खेलत आखेटकरस भीनै ॥ ५५ ॥
हैलहि बरष ग्यारहो लागी।
प्रगट साल सोरह की दागी।
अंगदराइ मंत्र तंह कीन्हौ।
ढिग बुलाइ छत्रसालहि लीन्हौ ॥ ५६ ॥
हित सौ कहे बचन निरधारे।
मामनि कैं तुम जाउ छतारे।
और मंत्र मत उर में आनौ।
हुकुम मानि तुम करौ पयानौ ॥ ५७ ॥

॥ दोहा ॥

ज्यौं खरदूषन के समैं धरे धनुष तूनीर।
अज्ञा श्री रघुनाथ की मानी लछमन बीर ॥ ५८ ॥

॥ छंद ॥

श्री छत्रसाल तहां पगु धारे।
जहां सुनै मामा अनियारे।
समाचार चंपति सब लीन्हे।
डेरा जाइ बेरछा कीन्हे ॥ ५९ ॥
हीरादे फौजै फरमाई।
डंका देत जतारह आई।
तहते दो फौजै करि धाये।
दुहू दिसि दोऊ बीर दबाये ॥ ६० ॥
औचक फौज बेदपुर आई।
भीर सुजान न जोरन पाई।
तीन सुभट संग लीन्हे बैठे।
प्रतिभट उमडि जाइकर पैठे ॥ ६१ ॥
हूत सुजान की छुटी बंदूखै।
फूटी बर बैरिन की कूखै।
झिलझिल फौज ठिलाठिल धावै।
चहूंदिस छोर छुवन नहि पावै ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

दारू गोली के घटे तीरन माची मार।
छूछे भये तुनीर सब परो फौज को भार ॥ ६३ ॥

॥ छंद ॥

पर्यो भार माहू सुर बाजै।
तीनौ सुभट समर सुभ छाजै।
उमडि मनौला रहरी जसौधी।
दल में तेग तडित सी कौधी ॥ ६४ ॥
मार करैं रनसिंधु बिलोरै।
तेगनि तमकि ताल सी तोरै।
लर्यो उकटि रन पंडित पांडे।
झुक झपेटि खंडे अरि चांडे ॥ ६५ ॥
रुचि सौ सार खात ज्यौं मेवा।
घाइन के धरि कंजा नेवा।
पाइ दुहूं के परे न पाछै।
पैरै सार धार में आछै ॥ ६६ ॥
स्वामि हेत तिल तिल तन टूटे।
भान हेत सुरपुर सुख लूटे।
फौजै पिली रुकत नहिं जानी।
सुरपुर कौं उमगी ठकुरानी ॥ ६७ ॥

॥ दोहा ॥

सब ठकुरानिन उमगिकै कीन्हौ अगिन प्रवेस।
देखत साहस थकि रह्यौ देविन सहित दिनेस ॥ ६८ ॥

॥ छंद ॥

लख्यौ सुजानराइ ठिकठायौ।
सबही कौ बिक्रम मन भायौ।
यह संसार तुच्छ करि जानौ।
राखौ रजपूती कौ बानौ ॥ ६९ ॥
तन कौ कियौ न लोभ न जी कौ।
धस्यौ लिलाट राज कौ टीकौ।
सब के संग अमरपुर लीनौ।
काढ़ि कटार पेट में दीनौ ॥ ७० ॥
मस्यौ सुजानराइ कौ जायौ।
लस्यौ अरुन आनन छबि छायौ।
ओड़ी अरि अस्त्रनि की घाई।
जूझौ मनै मारकै माई ७१॥ ॥
समिटि फौज ह्यांते फिरि आई।
जहां खबर चंपति की पाई।
चंपति जहां जुद्धरस भीनै।
रोगन आनि सिथिल करि लीनै ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

बल धरि धाये खल सबै खबर ज्यान की पाइ।
नातर को बचतो कहां बिचरै चंपतिराइ ॥ ७३ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचितायां सुभकरन पराजय बंकाबधवर्नंनं नाम सप्तमोध्याय: ॥ ७ ॥

॥ छंद ॥

चंपतिराइ सुनै दल धाये।
छाड़ि वेरछा अंत सिधाये।
तीन रोज बीते जटवारै।
फौजै फिरै खोज निरधारै॥ १ ॥
तब चंपति यह मंत्र विचाखौ।
सहरा कौं जैवो निरधाखौ।
सहरा भूप इंद्रमनि भाषै।
हते साह नाली में राखै॥ २ ॥
जब हजूर चंपति पग धारे।
तहां कैद में भये निहारे।
चंपति अरज साह सैा कीन्ही।
कैद छुड़ाइ भूप कै दीन्ही॥ ३ ॥
छुव्यौ इंद्रमनि देसहि आयौ।
फेरि राज सहरा कौ पायौ।
करीहती इहि भांति निकाई।
तातै मति सहरा कौ धाई॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

सहरा कौ सूधे भये चंपति सिथिल सरीर।
घात ताक पाछै परी बैरिन की भट भीर ॥ ५॥

॥ छंद ॥

ठिले दलेलदौवा दल पाछै।
सोरह सहस सुभट संग आछै।
चंपति संग भीर कछु नाही।
संग असवार पचीसक आही ॥ ६ ॥
सहरा कौं सूधे पग धारे।
दिन दिन बढ़ै रोग अति भारे।
दौर कोस सोरह की कीनी।
उतरि घरिक घोरिन दम दीनी ॥ ७ ॥
तुरगनि रातिबु दैन बिचारौ।
तौलगि अरि कौ सुन्यौ नगारौ।
नजर परी बैरिन की गोलै।
चंपति बैठे तरकस खोलै ॥ ८ ॥
चढ्यौ तुरी तरकस कटि मांही।
ब्यौत बान घालनि कौ नांही।
तंह आड़ौ इक औघट आयौ।
दब करि चंपतिराइ नकायौ ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

औघट के नाकत तहां तन कौ लगी न बार।
चारौ पुतरी झारिकै उतरि पस्यौ दृहि पार ॥ १० ॥

॥ छंद ॥

पीछै तहां इंद्रमनि राजा।
औघट धस्यौ तुरंगम ताजा।
गिरौ इंद्रमनि दिन तौ थोरौ।
साधत बन्यौ न औघट घोरौ ॥ ११ ॥
पिली फौज बैरिन की बांकी।
काढ़ि कृपान इंद्रमनि हांकी
टूक टूक तन सन्मुख टूट्यौ।
बीरलोक कौ आनंद लूट्यौ ॥ १२ ॥
जबलगि जूझ इंद्रमनि कीन्हौ।
चंपति गांउ दौर करि लीन्हौ।
सहरा सहर खबर यह ठाई।
साहिबसिंह धधेरै पाई ॥ १३ ॥
चंपतिराइ चले दृत आये।
नाते प्रगट प्रीति के पाये।
ऐसै समै कहा मनु धावै।
हित्‌ बिना को काकै आवै ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

ताते इहां बुलाइकै चंपति कौ निरधारि।
यह बिचारि पठये तहां ते द्वै सै असवारि ॥ १५ ॥

॥ छंद ॥

तंह दौवा सिबराम सिधाय़ौ।
अरु गुपालबारी निरधाय़ौ।
करिहि कूच तिहि गावैं आये।
चंपतिराइ जहां सुन पाये ॥ १६ ॥
औचक सुनी फौज जब आई।
चंपतिराइ कमान चढ़ाई।
उठिकै हिंमत हिये बढ़ाई।
सेके बिना कमान चढ़ाई ॥ १७ ॥
उतर ताहि बज्जत दिन बीते।
फिरी कमान मनोरथ रीते।
छत्रसाल तंह बैठे आगे।
उर उत्साह जुद्ध के जागे ॥ १८ ॥
त्यौंही छत्रसाल की माता।
जग में ऐक पुन्य की त्राता।
कढ़ौ कटरा हाथ में लीन्हौ।
ऊलसि पतिव्रत में मनु दीन्हौ ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

तहां धधेरे गांउ के जुरे फौज सौ जाइ।
अति अडोल बातैं कहो सब कौ प्रगट सुनाइ ॥२०॥

॥ छंद ॥

को हौ तुम आवत मन बाढ़े।
चंपति कौ हम तजै न काढ़े।
जौहर पहिल हमारे ह्वैहै।
और छांह तब इनकी छ्वैहै ॥२१॥
सुनि सिरदार फौज के बोले।
इतै रोस काहेकौ खोले।
हम उर नाहि कपट छल छाये।
चंपति चलै लैन हम आये ॥२२॥
हम इनकौं सहरा लै जैहैं।
दुसमन कहूं खोज नहि पैहैं।
यह बिधि सीतल बात सुनाई।
सुनत प्रतीति सबनि कौं आई ॥२३॥
तहां उतरि उन डेरा कीन्हा।
सब के चित्त सुचित करि दीन्हा।
सहरापुर कछु दिना गमाये।
छांतै सीता बरहि सुहाये ॥२४॥

॥ दोहा ॥

देवालो रघुनाथ को हतो निकट तिहि ठाउ।
दरसन को चंपति गये धरैं भगति कौ भाउ ॥ २५ ॥

॥ छंद ॥

देखे उद्दित रूप सुहाये।
सीता राम लखन छबि छाये।
अरि की फौज रोस रुख पागी।
उमडि तुरतु सहरा सैा लागी ॥ २६ ॥
सोचु बिचार भयौ अति भारी।
कछु ठहराउ नहीं निरधारी।
ऐकै कहै कूच करि जैयै।
सोरन गांउ बचाई हैयै ॥ २७ ॥
करी इंद्रमनि कौ हम नीको।
कहा जान करि कैहै फीको।
ऐकै कहै खबर सुनि लीजै।
इनकौ नहीं भरोसौ कीजै ॥ २८ ॥
छांते फौज साजिकै धाये।
हम सैा कहै लेन हम आये।
गयौ मुहीम इंद्रमनि राजा।
सूनौ सहर सुनौ सिरताजा ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

बन्यौ आइ मरिवा इहां घर घर माच्यौ घैरु।
रिपु सौं राइ सुजान कौं लैन न पायौ बैरु॥ ३०॥

॥ छंद ॥

लै उसास सिगरे जो बोले।
सुनि छत्रसाल बचन तब खोले।
इहां बनै मरिवौ तौ नीकौ।
जंह रघुनाथ सरन सबही कौ॥ ३१॥
चंपति ब्यौंत बुद्धि के कीन्हे।
सुनि बिचार सबही के लीन्हे।
सब कौ मूल देह निरधास्यौ।
असुर मारि भुवभार उतास्यौ॥ ३२॥
रिषिन देह आनंद सौं लीन्हौ।
तपु करि चित चंचल बस कीन्हौ।
जनक जजाति देह धरि आये।
जज्ञ दान करि स्वर्ग सिधाये॥ ३३॥
सूरन सतिन देह जे पाये।
करि करतूति सुजस बगराये।

॥ दोहा ॥

तातें जग में देह की रच्छा कीजै आदि।
सब साधन यातें सधे और बात सब बादि॥ ३४॥

॥ छंद ॥

हम हीं देह धरौ जग माहीं।
करतूती कीन्ही चित चाही।
ऐक बात जु रही है कोवै।
बैर सुजानराइ कौ लीवै ॥ ३५ ॥
जदपि अनित्य देह यह गाई।
समये छूटि ऐक दिन जाई।
जौ कहुं सारधार में छूटै।
तौ छत्री सुरपुर सुख लूटै ॥ ३६ ॥
तातै तनक देह बल आवै।
तौ कीजै जोई मन भावै।
कैहुं रोग देह तै छूटै।
राखौ बांधि समुद जौ फूटै ॥ ३७ ॥
कितिक औंड़छे में दल आही।
जुरत जुद्ध जमलोक हि जाही।
जौ कहुं नेकु बुद्धि बल पाऊं।
तौ दिल्ली झकझोरि झुलाऊं ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

जौ मुकाम क्यौंहुं बनै तौ कीजै उपचार।
अपवारी कौ बल बढ़ै झारौं झुक झुक सार ॥ ३९ ॥

॥ छंद ॥

जौला सहरा भई लराई।
फतै दलेलदौवा तंह पाई।
साहिबराइ बिताव रहोऊ।
गढ़ में रहै सकिलकै दोऊ ॥ ४० ॥
साहस चित्त दुऊन कौ छूट्यौ।
गुपित पाप चंपति कौ ऊट्यौ।
तब पाती लिखि गुपति पठाई।
दौवा अरु बारी कौं आई ॥ ४१ ॥
तुम बिस्वास चंपति कौं कीजौ।
जीवदान हमकौं तुम दीजौ।
चाहत हौं न अरिन की बाहौ।
हमकौं कठिन परी गढ़ माहौ ॥ ४२ ॥
पहिल फतै हमही पह लीजै।
पातसाह सौ मुजरा कीजै।

॥ दोहा ॥

जबलौ चंपतिराइ कौं जियत सुनै सबकोइ।
तबलौ अरि की फौज की दौरै हम पर होइ ॥ ४३ ॥

॥ छंद ॥

सुनी चिठी दौवा अरुबारी।
नीचन नीची बद्धि बिचारी।

कही जुयौ फौजन कौ नाकौ।
मोरनगांउ चलौ वह बाकौ ॥ ४४ ॥
इत मुकाम चंपति कौं भावै।
महरावारौ कूच करावै।
कूच मुकाम बनै नहि होई।
जैसी होनहार सो होई ॥ ४५ ॥
तंह इक बुद्धि चित्त में आनी।
लालकुंवरि परतिछ भवानी।
दै दै धन पंडा सब साधें।
सुमिरन करि रघुबर अवराधें ॥ ४६ ॥
पति के रहिवे की ठिक पारी।
इते कूच की करी तयारी।
सुनि चंपति इत ही सुख पायौ।
गुपित मंत्र काहू न जनायौ ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

छत्रसाल कीन्हो बिदा तुरत राज तिहि ठांउ।
हम हो आवत तुम चलौ ज्ञानसाह के गांउ ॥ ४८ ॥

॥ छंद ॥

छत्रसाल उठि रात सिधारे।
ज्ञानसाह के गांउ पधारे।

गये बहिन के मिलन जहां ही।
आदर भाव प्रीति कछु नाही॥ ४६ ॥
बड़ दुख होइ इकतरौ आवै।
तीन उपास न बल तन तावै।
बहिन देखि कछु बात न बूझी।
मिली न आइ कहाधौ सूझी॥ ५०॥
कै उदास फिरि आये डेरा।
भई रसोई कहां कुबेरा।
तौलगि ज्ञानसाह घर आये।
समाचार सब सुनै सुनाये॥ ५१॥
तब डेरा दै जिनस पठाई।
भई रसोई रात गमाई।
समौ परै सब करै रुखाई।
बहिन कौन को काकौ भाई॥ ५२॥

॥ दोहा॥

छत्रसाल कौं करि बिदा चंपति भये तयार।
संग दो सै ठाढ़े भये सहरा के असवार॥ ५३॥

॥ छंद॥

चंपतिराइ बुद्धि यह कीनी।
ठकुराइनि कौ अज्ञा दीनी।

मोरनगांउ चला उत बारी।
चलै तहां कौ खाट हमारी॥ ५४॥
पौढ़े ऐक खाट पर कोई।
नख सिख तै पट ओढ़े सोई।
संग लीजे सहरा के बारी।
दो से घोरै फिरै हथ्यारी॥ ५५॥
फौज टारि मोरन लै जैयौ।
प्रभु कौं छल सौं इहां छपैयौ।

॥ दोहा ॥

ऐक माइके कौं तहां सेवक हतौ हजूर।
ताहि बुलायौ जानिकै यातै परै न भूर॥ ५६॥

॥ छंद ॥

कही बात तासौ ठकुरानी।
तैं प्रतीति कौ है हम जानी।
तातै तोकौं मंत्र सुनायौ।
प्रभु के चित्त ब्योंत यह आयौ॥ ५७॥
तू चलि पौढ़ि खाट पर आछे।
हौहूं चलत संग ही पाछे।
यह सुनिकै वह भरी न हामी।
झुक झहरानी नौनहरामी॥ ५८॥

पाइन परी जदपि ठकुरानी।
स्वामिभगति उर तऊ न आनी।
जब अति सोर करत वह जान्यौ।
तब कीनै। वाही कौ मानै। ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

कूच करे चंपति चले होनी हियै बिचार ।
जित तैं महृति चाहिये तित तैं धाई धार ॥ ६० ॥

॥ छंद ॥

चली फौज संग सहराबारी।
संग दो से असवार हथ्यारी।
ताकै घात पाप उर आनै।
चंपति तिन्है सहाइक जानै ॥ ६१ ॥
सात कोस जौलौं चलि आये।
भये दगैलन के मन भाये।
आपुस माझ इसारत कीनी।
कर उलक्कार सैहथी लीनी ॥ ६२ ॥
मारे सुभट इक्क उन संगी।
चंपति पै उमडे जुर जंगी।
रोगन चंपतिराइ दबाये।
कछू उपाइ चले न चलाये ॥ ६३ ॥

ऐसौ समौ लख्यौ ठकुरानी।
पतिब्रत माझ चलायौ पानी।
चुटकि तुरग पति के ढिग जाही।
धरी बाग इक दौर सिपाही॥ ६४॥

॥ दोहा ॥

बाग छुवन पाई नहीं चल्यौ मरन कौ चाउ।
कटरा काढ्यौ पेट में दये घाउ पर घाउ॥ ६५॥

॥ छंद ॥

दै दै घाउ मरी ठकुरानी।
चंपतिराइ दगा तब जानी।
यह संसार तुच्छ निरधाख्यौ।
मारि कटारिन उदर बिदाख्यौ॥ ६६॥
चले बिमान बैठि संग दोऊ।
जै बोलत सुरपुर सब कोऊ।
धनि चंपति राख्यौ मुख पानी।
धनि धनि लालकुंवरि ठकुरानी॥ ६७॥
धनि चंपति जिन खल दल खंडे।
धनि चंपति निज कुल जिन मंडे।
धनि चंपति निरबल जिन थापे।
धनि चंपति जिन सबल उथापे॥ ६८॥

धनि चंपति सज्जनमन भाये ।
धनि चंपति जग जस बगराये ।
धनि चंपति की कठिन कृपानी ।
धनि चंपति की रुचिर कहानी ॥ ६६ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते चंपतिप्रनाशो नाम अष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

धनि चंपति के औतरो पंचम श्री छत्रसाल ।
जिनकी अज्ञा सीस धरि करी कहानी लाल ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

बालापन तै बर बुधि लीनी ।
सकल हथ्यारन पै रुचि कीनी ।
तुपक तीर अरु सकति कृपानी ।
छुरी गुर्ज की रीतै जानी ॥ २ ॥
बिद्या बाऊजुद्ध की आई ।
नर नर बिलघन में अधिकाई ।
असवारी में रंग मचावै ।
मन के संग तुरंग नचावै ॥ ३ ॥

चैागानन खेलत छबि छावै।
बंटा सबतै अधिक उड़ावै।
लखत पुरुष लच्छन सब जानै।
पच्ची बोलत सगुन बखानै॥ ४॥
सतकबि कबित सुनत रस पागै।
बिलसत मति अरथनि में आगै।
सब सिकार की जानी घातै।
रचती दान जज्ञ की बातै॥ ५॥

॥ दोहा ॥

पूरन पुन्य प्रताप तै सकल कला अनयास।
बसी आइ छत्रसाल उर दिन दिन बढ़े प्रकास॥ ६॥

॥ छंद ॥

बढ़ै प्रकास बुद्धि के ऐसै।
बरनै चकरवतिन के जैसै।
तात मात की इच्छा पूजी।
कीरति बिदित कबिंदन कूजी॥ ७॥
ग्यारह बरष बहिक्रम बीत्यौ।
खेलत आखेटक श्रम जीत्यौ।
ऐसै समै और बिधि ठानी।
होनहार गति जात न जानी॥ ८॥

औरंगसाह तखतपति जाग्यौ।
मेटन हिंदुधरम दैं लाग्यौ।
चंपति हिंदुधरम रखवारौ।
दिल्लीदल कौ जीतनहारौ॥ ९ ॥
तासौं चलै कौनकी ऐंडै।
पर्यौ दिलीस बुद्धि बल पैंडै।
चंपति जदपि तखत लै दीनौ।
तऊ दिलीस उलटि छल कीनौ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

कीनौ उलटि दीलीस छल डारि बुद्धि के डौर।
सूबन कौ जितवार पै काहि पठाऊं दौर॥ ११ ॥

॥ छंद ॥

सूबन कौ दल दपट दबावै।
ता पर दौर कौनकी आवै।
तब औरंग बुद्धि उर आनी।
फरमाई हीरादे रानी॥ १२ ॥
ज्यौं रन भीषम कौ जसु जागै।
अर्जुन दियौ सिखंडी आगै।
कीन्ही कथा उमडि इन ऐसी।
भीषम और सिखंडी कैसी॥ १३ ॥

आयौ कुल दिल्लीदल हास्यौ।
सो चंपति सुरलोक सिधास्यौ।
भार पहिर रबिमंडल फास्यौ।
जीत्यौ सुरग जीति दिसि चास्यौ॥१४॥
गयौ सूर सुरपति के लोकै।
फूटौ समुद कौन अब रोकै।
उमडे फिरत जुद्ध कौ गाढ़े।
चहूं ओर बैरी बल बाढ़े॥१५॥

॥ दोहा ॥

चहूं ओर बैरी बढ़े छल बल ताकत घात।
सूनौ बन मृगराज कौ दुरद उखारत खात॥१६॥

॥ छंद ॥

ऐसी दसा होन जब लागी।
चंपतिचमू सोक सौं पागी।
सहरा में छत्रसाल प्रबीनै।
उतै पिता की अग्या लीनै॥१७॥
सुनै पिता सुरलोक सिधारे।
त्यौं माता पतिब्रत पन पारे।
कानन परत चाह अनचाही।
हिरदै सोकसिंधु बेथाही॥१८॥

दुख की लहर लहर पर आई।
हियै हिलौर दृगन पर छाई।
गये पिता कत छाड़ि अकेले।
अब हम राज कौन के खेलै ॥ १९ ॥
माता बिन को लाड़ लड़ैहै।
को उठि भोर कलेऊ दैहै।
मात पिता दीन्हे सुख जैसे।
ते बीते सब सपनै कैसे ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

सुपन मनोरथ से भये या जग के ब्यौहार।
प्रगट पेखियत सांच से बीतत लगै न बार ॥ २१ ॥

॥ छंद ॥

बीते प्रगट प्रियब्रत गाये।
जिन रथलीक समुद्र बनाये।
बीते पृथु जिन पुहुमि सिंगारी।
पब्बय पांति धनुष सो टारी ॥ २२ ॥
नल हरिचंद सत रखवारे।
गये बीत जिन सुजस बगारे।
बीते जनक बिदेह सयाने।
जिन सुख दुःख ऐक करि जाने ॥ २३ ॥

अर्जुन भिंम प्रतिज्ञा जीती।
अक्षौहिनी अठारह बीती।
बीते जिते देह धरि आये।
जग जस रहे धर्म तै छाये॥ २४॥
ज्यौं छत्रसाल बुद्धि उर आनी।
तज्यौ सोक हिंमत ठिकठानी।
न्हाइ पिता कौं अंजलि दीन्ही।
कंधन छत्र धरमधुर लीन्ही॥ २५॥

॥ दोहा॥

छत्र धरमधुर लै उठ्यौ महाबीर छत्रसाल।
रीति बड़िन को बिपति में धीरज धरत बिसाल॥ २६॥

॥ छंद॥

धरि धीरज छत्रसाल सिधारे।
जहां सुने अंगद अनियारे।
चले छांडि सहरा कौ ऐसे।
पंडब तज्यौ जतुगृह जैसे॥ २७॥
हिंमत बल दल दुख के मेटे।
अंगद जाइ देवगढ़ भेटे।
कुसल पिता की बूझी ज्यौंही।
दृगनि नीर भरि आये त्यौंही॥ २८॥

समाचार बीते दूत जैसे।
अंगद जान लिये सब तैसे।
बुद्धि बाऊबल कछू न ओरै।
चकित चित्त चारौ दिसि दौरै ॥ २९ ॥
बैरी बड़े करत मनभाये।
बल बीसाउ चलै न चलाये।
जरतु हियौ निज तेजनि ऐसे।
बिषधर बध्यौ मंत्रबस जैसे ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

ज्यौं बिषधर मंत्रन बध्यौ त्यौं अंगद अनखाइ।
लेत उसासैं क्रोधबस चलत न बल बीसाइ ॥ ३१ ॥

॥ छंद ॥

त्यौं छत्रसाल धीरधर बोले।
सरस बिचार मंत्र के खोले।
अंगद कौ यह बात सुनाई।
राजनीति कछु जामें पाई ॥ ३२ ॥
साहस तजि उर आलस मांडै।
भाग भरोसे उद्यम छांडै।
ताहि तजै जग संपति ऐसे।
तरुनी तजै वृद्ध पति जैसे ॥ ३३ ॥

ताते अब उद्यम उर आनौ।
दूर देस कौ करौ पयानौ।
भूषन कछुक माइ के पाये।
राखि दैलवारै हम आये॥ ३४॥
ते सब मागि खरच कौ लीजै।
दूर देस कढ़ि उद्यम कीजै।
यह बिचार अंगद सुनि लीन्हौ।
तुरत बिदा छत्रसालहि कीन्हौ॥ ३५॥

॥ दोहा॥

भये देवगढ़ ते बिदा छत्रसाल सिरताज।
पहुंचि दैलवारै कियौ पूरन मन कौ काज॥ ३६॥

॥ छंद॥

त्योंही लगन ब्याह की आई।
पहिल हती ह्वै रही सगाई।
जे पवार कुलवार कुरी के।
उद्दित अगिनबंस के टीके॥ ३७॥
तिहि कुल देवकुंवरि छबि छाई।
लै अवतार रुक्मिनी आई।
कुल पवित्र भूषित भौ ऐसे।
दीपक दीपसिखा ते जैसे॥ ३८॥

दूलह छत्रसाल तिह पाये।
करि बिवाह कीनै मनभाये।
रूप सील पतिव्रत सरसानी।
भई भूप की जेठीरानी ॥ ३९ ॥
व्याहि बनी छत्रसाल सिधारे।
बिसद ब्यौत उद्यम के डारे।
प्रथम बुद्धि ऐसी उर आनी।
भेंट भान प्रोहित सौ ठानी ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

भेंट करी इन भान सौ अपनै प्रोहित जानि।
भान मिले जजमान कौ राज गरब उर आनि ॥ ४१ ॥

॥ छंद ॥

प्रोहित लख्यौ राज मद छाक्यौ।
तब छत्रसाल आपु तन ताक्यौ।
जिन चंपति सूबा बिचलाये।
तिनके पुत्र कहां हम आये ॥ ४२ ॥
तातैं और ब्यौत चितु लीजै।
बड़े ठौर कढ़ि उद्यम कीजै।
त्यौंही पातसाह फरमाये।
नपमनि जे जयसिंह कहाये ॥ ४३ ॥

कूरम कुल उदित जग गाये।
सूबा कै दच्छिन तें धाये।
चढ़ी जोर कूरम की फौजैं।
बढ़ी मनौ दरियाउ की मौजैं॥ ४४ ॥
ते बिलोक छत्रसाल सिहाने।
प्रगट करन बिक्रम उर आने।
मिले जाइ जयसिंह नृपालै।
उनि हित सौं चाह्यौ छत्रसालै॥ ४५ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते जयसिंह संमेलनं नाम नवमोध्यायः॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

मिलिकै नृप जयसिंह सौं अंगद लिये बुलाइ।
मनसिब भयौ दुहूनि कौं रहे संग सुख पाइ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

रहे संग कूरम के ऐसे।
नृप बिराट के पंडव जैसे।
जद्यपि मनसम मनसिब नाही।
सब तै उमगि अधिक उर माही॥ २॥

जहां जूझ के बजे नगारे।
तहां उमगि उर लरै छतारे।
सनमुख धसै बीररस पागै।
घालै घाउ सबनि तै आगै ॥ ३ ॥
अरुन रंग आनन छबि छावै।
अरि के अस्त्र गुबिंद बचावै।
जहां गढ़न सा होइ लराई।
तहां करै सब तै अधिकाई ॥ ४ ॥
करै मोरचा सब तै ऊंचै।
जहां और के मन न पहूंचै।
गिरै गाज से तंह मतवारे।
राखि लेहि तंह राखनहारे ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

या बिध नृप जयसिंह के रहे संग छत्रसाल।
त्यों फरमान दिलीस को आइ गयो ततकाल ॥ ६ ॥

॥ छंद ॥

त्यों फरमान साह को आयो।
वलीबहादुरखां फरमायो।
लिखी मुहीम देवगढ़ जैयै।
बिकट मवास जेर करि ऐयै ॥ ७ ॥

सुनि फरमान चढ़ाई भौहै।
पिल्यौ नवाब देवगढ़ सौहै।
नृप मद्दित छत्रसाल पठाये।
कोका की ताबीन लगाये ॥ ८ ॥

कोका संग चले सुख पाये।
ऐ बिचार चित में ठहराये।
जबहि साह दच्छिन तै धाये।
चंपतिराइ हजूर बुलाये ॥ ९ ॥
औरंग कलह तखत हितु कांध्यौ।
दारा घाट धौलपुर बांध्यौ।
तहां हरौली चंपति कीन्हो।
चामिल उतरि फते लै दीन्हो ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

दुदस हजारी कौ तहां मनसिब दियौ दिलीस।
ऐरछ कौंच कनार कुल अरु पाई बखसीस ॥ ११ ॥

॥ छंद ॥

ऐ नवाब सब जानत आही।
इनसौं कछु कहिबे की नाही।
इन चंपति सौ भाइप मानी।
बदली पाग जगत में जानी ॥ १२ ॥

इनकौ संग भलो है तातै।
करिहै भली पुरानै नातै।
यह बिचार कोका संग धाये।
चलि दरकूच देवगढ़ आये ॥ १३ ॥
निकट जाइ जब बजे नगारे।
उमडे उतहि देवगढ़वारे।
सत्तर सहस सुभट रनबाके।
रोके आइ गिरिन के नाके ॥ १४ ॥
लागी लाग अराबै छूटे।
जे हरौल तिनके मन छूटे।
छूटत हरौल भयौ भय भारौ।
पैठ्यौ चंचल चुटक छतारौ ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

सिंहनाद गल गर्ज्जिकै भंज उठ्यौ भट भीर।
छता बीररस उमग में गनै न गोली तीर॥ १६ ॥

॥ छंद ॥

गनै न गोली तीर छतारौ।
देखत देव अचंभौ भारौ।
ऐक बीर सहसन पै धावै।
हाथ और को उठन न पावै ॥ १७ ॥

संगिन मारि करी घन घानी।
समर भूमि स्रोनित सो सानी।
नची छता की जोर क्रपानी।
किलकी उमगि कालिका रानी ॥ १८ ॥
संग के सुभट जुद्ध में जूटे।
भीर परै तिनसों संग फूटे।
फारत फौज छता अवलोक्यौ।
उदभट ह्वै कैानको रोक्यौ ॥ १९ ॥
उमगि भरै अरि कैा दल भानै।
घाउ लगत तन तनक न जानै।
घाइ खाइ छत्ता रन जीत्यौ।
अरि पर प्रलैकाल सो बीत्यौ ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

बिरझानै चंपति बली समर भयानक ठान।
भभरि भीर अरि की भगी कालरुद्र उर आन ॥ २१ ॥

॥ छंद ॥

बैरी भगे मानि भय भारी।
परै बिडर ज्यैां बाघ बिडारी।
बिडरत अरि के कटक निहारे।
तब नवाब के बजे नगारे ॥ २२ ॥

पाई फतै पर तंह डेरा।
तौलगि भई सांझ की बेरा।
सब कों मिले सबनि के संगी।
बिछुरै ऐक छता रनरंगी ॥ २३ ॥
रनमंडल संगिन सब हेरौ।
चकित चित्त चारिऊ दिसि फेरौ।
निस के पहर कलप से बीते।
मिल्यौ न बीर मनोरथ रीते ॥ २४ ॥
बूझत खबर फिरै चऊफेरी।
ताकत दिसा दाहिनी डेरी।
भूख प्यास की सुरत बिसारै।
जीते जुद्ध तऊ मन हारै ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

मन हारै ढूंढत फिरै कहां छतारे बीर।
मिलै आजु तौ है भलो नातर तजौं सरीर ॥ २६ ॥

॥ छंद ॥

मति सरीर तजिबे की कीन्हो।
दीनदयाल बुद्धि उर दीन्हो।
ऐक बेर फिरि फेरी दीजै।
चलौ चाह लसगर की लीजै ॥ २७ ॥

चाह लैन लसगर को धाये।
ऐकन तंह ऐ बचन सुनाये।
हम बीसक असवार हथ्यारी।
संग फौज के करी तयारी॥ २८॥
खेतु छाड़ि बैरी जब भागे।
बहस बढ़ै हम पीछै लागे।
गये दूर दल तै कढ़ि ज्यौंही।
सूरज चल्यौ अस्त कौं त्यौंही॥ २९॥
तब वांतै मुरकै सब भाई।
सूरज सनमुख दिसा बताई।
तहां ऐक कौतुक हम देख्यौ।
जाकौ अचिरज जात न लेख्यौ॥ ३०॥

॥ दोहा ॥

जीन कस्यौ इक दूर तै देख्यौ तहां तुरंग।
ताके धरिवे की हियै सब कै बढ़ी उमंग॥ ३१॥

॥ छंद ॥

बढ़ि उमंग धरिवे कौ धाये।
जब नजीक खेतक पर आये।
घादल तहां तक्यौ रस भीनै।
कढ़ी कृपान हाथ में लीनै॥ ३२॥

ताकी छिनक मूरछा जागै।
छिनक जोगनिद्रा सी लागै।
करे तुरी ताकी रखवारी।
ढिग न जान पावै मसहारी॥ ३३॥
पूछ उठाइ चैार से टारै।
जो ढिग आवै ताहि बिडारै।
वाहि धरन धाये बहुतेरे।
पहुचे निकट दाहिने डेरे॥ ३४॥
जब तुरंग वह सनमुख धायौ।
भज्यो बिडर सो जीवत आयौ।
यह सुनि सुभट छता के धाये।
बिछुरै मनो प्रान फिरि आये॥ ३५॥

॥ दोहा॥

तौलगि उदयाचल चढ़्यौ सूरज सिंदुर अंग।
त्यौंही दौरी दूर लौ सब की नजर अभंग॥ ३६॥

॥ छंद॥

सब की नजर दूर लौ दौरी।
चीन्हो तुरी तबै सब औरी।
देख्यौ तहां तुरी बिरझानो।
स्वामिधर्म को बांधे बानो॥ ३७॥

इन तुरंग की करी बड़ाई ।
नीकी तुमही सैां बनि आई ।
राति अकेलै चैाकी दीन्ही ।
हमतै अधिक भक्ति तुम कीन्ही ॥ ३८ ॥
जब तुरंग इहि भांति लड़ायैा ।
संगी जान रोस बिसरायैा ।
निकट जाइ प्रभु कैां उन देख्यैा ।
जीवन जनम सुफल करि लेख्यैा ॥ ३९ ॥
मुजरा करि सबही सिर नायैा ।
चेतन देखि हियै सुख पायैा ।
जल मगाइ प्रभु कैा मुख धोयैा ।
फतै सुनाइ समर श्रम खोयैा ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

करी काइजा तुरग की सोच्यैा बदन बनाइ ।
डेरा ल्याये खेत तै प्रभु कैां पान खवाइ ॥ ४१ ॥

॥ छंद ॥

कोतल भयैा तुरी संग आयैा ।
जगत बिदित जाकैा जस गायैा ।
बांधे घाइ कीर्त्ति जग जागी ।
दल में चाह चलन यह लागी ॥ ४२ ।

सुनी नवाब साह यह तैसी।
आदि अंत ते बीती जैसी।
करी तुरी की बड़ी बड़ाई।
ऐसे करत भले जे भाई ॥ ४२ ॥
तातै ताकौ नाम नवीनौ।
प्रगटि भलेभाई कहि दीनौ।
जिन छत्रसाल करी घन घाई।
तिनकी कछु चरचा न चलाई ॥ ४३ ॥
रीझन तैसी सब बिसराई।
बांकनि अपनी फतै लिखाई।
सुनत फलुह साह सुख पायो।
बढ़ि नवाब कौ मनसिब आयौ ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

मनसिब बढ्यौ नवाब कौ दियौ साह सुख पाइ।
छत्रसाल के भुजन की को न कमाई खाइ ॥ ४६ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते देवगढ़जीति बर्ननं नाम दशमोध्यायः ॥ १० ॥

॥ छंद ॥

छत्रसाल पंचम रन कीन्हौ।
जैतपत्र कौ कहि लै दीन्हौ।

आइ मिले सब बिकट मवासी।
चुक्यौ अमल ज्यों रैयत खासी ॥ १ ॥
फिरि नवाब दच्छिन कों धाये।
छत्रसाल तिन संग सिधाये।
जद्यपि बिक्रम प्रगट जनायौ।
फल नवाब तैं कछू न पायौ ॥ २ ॥
तब मन भयौ अनख अधिकारौ।
तुरकन तैं कब बन्यौ हमारौ।
पिता हमारे सूबा डांड़े।
तुरकन पर अजमाये खांड़े ॥ ३ ॥
करी पातसाहन सौं ऐंड़ै।
पर्यौ रह्यौ मुगलन के पैंड़ै।
ऐंड़ बुंदेलखंड की राखी।
चंपति कीर्ति जगत मख भाषी ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

तिन चंपति के नंद हम सीस नवावैं काहि।
हम भूले सेयौ वृथा हित्त जानिकै वाहि ॥ ५ ॥

॥ छंद ॥

हित्त जानि सेयौ अबिबेकी।
तातैं कहौ होइ क्यौं नेकी।

ताकौ हम ऐसौ फल पायौ।
याके संग कसालौ खायौ॥ ६ ॥
हम तौ छत्रधर्म प्रतिपाल्यौ।
रीझ न याकौ माथौ हाल्यौ।
मूरख के आगे गुन गायौ।
भैसा बीन बजाइ रिझायौ॥ ७ ॥
वृथा कमल थल माह लगायौ।
ऊसर में पानी बरसायौ।
खर के अंग सुगंध चढ़ायौ।
बायस कौं घनसार चुनायौ॥ ८ ॥
बधिर कान में मंत्र सुनाया।
सूरदास कौं चित्र दिखायौ।
कुलरा करिवे कौं घन टेयै।
जो अबिवेकी साहिब सेयै॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

अबिवेकी कौं सेइकै को न हियै पछिताइ।
बीजा बवै बबूर के कहा दाख फल खाइ॥ १० ॥

॥ छंद ॥

हिंदू तुरक दीन द्वै गाये।
तिनसौं बैर सदा चलि आये।

लेख्यौ सुर असुरन कौं जैसो।
केहरि करिन बखान्यौ तैसो ॥ ११ ॥
जबतै साह तखत पर बैठे।
तबतै हिंदुन सौं उर ऐंठे।
महंगे कर तीरथनि लगाये।
बेद दिवालै निदर ढहाये ॥ १२ ॥
घर घर बांधि जेजिया लीनै।
अपने मन भाये सब कीनै।
सब रजपूत सीस नित नावै।
ऐड़ करै तिन पैदल धावै ॥ १३ ॥
ऐड़ ऐक सिवराज निबाही।
करै आपने चित की चाही।
आठ पातसाही झुकझोरै।
सूबनि बांधि डांड़ लै छोरै ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

ऐसै गुन सिवराज के बसे चित्त में आइ।
मिलिवौ ई मन में धस्यौ मनसिब तज्यौ बनाइ ॥ १५ ॥

॥ छंद ॥

इतहि पातसाही सब झूमै।
उतहि सिवा के दल में घूमै।

इतकौ उतहि जान नहि पावै।
जो निकसै सो सीस गंवावै ॥ १६ ॥
दुऊ दिसि होत खरी ऊसयारी।
चौकिन निस दिन होत तयारी।
तहां जान छत्रसाल बिचाखो।
ब्यौंत सिकारखेल कौ डाखो ॥ १७ ॥
तीछन अस्त्र मृगन पर बाहै।
बन पहार दच्छिन के गाहै।
सुभट संग पटरानी लीन्ही।
दुरगम गिरिन बसेरे कीन्हो ॥ १८ ॥
भोर चलै सूरज दै बायें।
दच्छिन दैहि अस्तगिरि आये।
निस में पीठि ओर ध्रुव चाहै।
बुधि बल सब कौ जात निबाहै ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

निसि में नच्छत्रनि चलै दिन में भानु बिचारि।
लाग दैहि सब साथ कौ रोज मृगनि कौं मारि ॥ २० ॥

॥ छंद ॥

घाटी नकी गिरिन की ठाढ़ी।
देखी तहां सीमरा बाढ़ी।

झरे बांधि काठन के भेरा।
परे पार के बन में डेरा ॥ २१ ॥
बन ही बन घाटी सब हेरी।
चौकी रही दाहिनी डेरी।
कृष्णा बढ़ी देखकै त्यौंही।
उतरे पार भोमरा ज्यौंही ॥ २२ ॥
उतरि पार सिवराज निहारे।
सबकै भये अचंभे भारे।
तंह सिवराज सील अति बाढ़े।
देखत भये दूर तै ठाढ़े ॥ २३ ॥
कुसल बूझि ढिग ही बैठारे।
कैसे पऊंचे बीर छतारे।
कही किसा अपनी सब जैसी।
चितु दै सुनी सिवा सब तैसी ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

सिवा किसा सुनिकै कही तुम छत्री सिरताज।
जीत आपनी भूम कौ करै देस कौ राज ॥ २५ ॥

॥ छंद ॥

करौ देस कौ राज छतारै।
हम तुमतै कबहू नहि न्यारै।

दौरि देस मुगलन के मारौ।
दबटि दिली के दल संहारौ ॥ २६ ॥
तुरकन की परतीत न मानौ।
तुम केहरि तुरकनि गज जानौ।
तुरकन में न बिबेक बिलोक्यौ।
मिलन गये उनकौं उन रोक्यौ ॥ २७ ॥
हमकौं भई सहाइ भवानी।
भय नहि मुगलन की मन मानी।
छल बल निकसि देस में आये।
अब हम पै उमराइ पठाये ॥ २८ ॥
हम तुरकनि पर कसी कृपानी।
मारि करैंगे कीचक घानी।
तुम ह्व जाइ देस दल जोरौ।
तुरक मारि तरवारनि तोरौ ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

राखि हियै ब्रजनाथ कौं हाथ लेउ करवार।
ये रच्छा करिहै सदा यह जानौ निरधार ॥ ३० ॥

॥ छंद ॥

छत्रनि कौ यह वृत्त बनाई।
सदा तेग की खाइ कमाई।

गाइ बेद बिप्रनि प्रतिपालै।
घाउ ऐड़धारिन पै घालै॥ ३१॥
तेगधार में जौ तन छूटै।
तौ रबि भेद मुकत सुख लूटै।
जैतपत्र जौ रन में पावै।
तौ पुहमी के नाथ कहावै॥ ३२॥
तुम हौ महाबीर मरदानै।
करिहौ भूमि भोग हम जानै।
जौ इतही तुमकों हम राखैं।
तौ सब सुजस हमारे भाषैं॥ ३३॥
तातै जाइ मुगल दल मारौ।
सुनियै श्रबननि सुजस तिहारौ।
यह कहि तेग मगाइ बंधाई।
बीर बदन दूनी दुति आई॥ ३४॥

॥ दोहा ॥

आदर सौ कीन्है बिदा सिवा भूप सुख पाइ।
मिली मनौ उर उमग में भूमि भावती आइ॥ ३५॥

॥ छंद ॥

मानऊ भूमि भावती पाई।
दृढ़ मसलहत यहै ठहराई।

साहस सिद्धि धरै मन माही।
फेरि भीमरा कृष्णा गाही ॥ ३६ ॥
दच्छिन में सूबनि कौ भेला।
तहां सुनै सुभकरन बुंदेला।
जिन लोहे लहरात मझाये।
तीन खून तिन माफ कराये ॥ ३७ ॥
तिनसौं इन मिलिवौ ठिकठानौ।
हित्र अवहित्र चाहत जानौ।
इन अपनी जब खबर सुनाई।
तब सुभसाह मनौ निधि पाई ॥ ३८ ॥
मिलै दौरि अति आदर कीनौ।
सब ते सिरै बैठका दीनौ।
दिन दिन दिलजोई करि राखै।
हित सौं बचन अमृत से भाषै ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

कछुक द्यौस सुभसाह के पास रहे छत्रसाल।
जब उचाट देखे हिये तब जान्यौ उन हाल ॥ ४० ॥

॥ छंद ॥

जानि हाल निजु पास बुलाये।
दिलजोई के बचन सुनाये।

जा कहियै तौ अरज लिखावै।
जाके सुनत साह सुख पावै॥ ४१॥
चतुर उकील अरज लै जैहै।
फेरि साह मनसिब लिखि दैहै।
अरु जौ हमैं इहां सगु दीजै।
तौ घर ही ठकुराइस कीजै॥ ४२॥
यह सुनि छत्रसाल जो बोले।
साहस सिद्धि खजान खोले।
हम रुचि सैां मनसिब लै देखे।
कछु दिन तुरक हिदू करि लेखे॥ ४३॥
सेवा छ्र अपनै ऐ नाही।
हम न पतैहैं इनकी छाही।
जौ घर ही ठकुराइस कीजै।
तौ कैसै जग में जसु लीजै॥ ४४॥

॥ दोहा ॥

तातें अब दिल्लीस के दीरघ दलनि बिलोइ।
अपनौ उद्दिम ठानिवौ हौनी होइ सु होइ॥ ४५॥

॥ छंद॥

यह बिचार अपनौ कहि दीन्हौ।
सुनि सुभसाह अचंभौ कीन्हौ।

बिन सहाइ बिन ठौर ठिकानै।
बिन दलबल अरु बिना खजानै ॥ ४६ ॥
कलह पातसाहन सो कांधे।
ऐसो मोरु और को बांधे।
हिंमत हिये धरी उन ऐसी।
करिहै वहै कहत है जैसी ॥ ४७ ॥
तातै बिदा इन्हे अब कीजै।
इनकी देखि प्रतिज्ञा लीजै।
तैालगि चाह चली ठिकठाई।
सो राजन के घर घर आई ॥ ४८ ॥
ठैार ठैार के गिरे दिवाले।
सुनत हिये हिंदुन के हाले।
पातसाह फरमान पठायो।
ऊकुम फिदाईखां कैां आयो ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

नगर ओड़छे में सुने हिंदू धरैं गुमान।
ते नित पत्थर पूजिकै फैलावत कुफरान ॥ ५० ॥

॥ छंद ॥

ऊंची धुजा दिवालिन राजे।
घंटा संख झालरै बाजै।

छापै देत तिलक दै ठाढ़े।
माला धरै रहत मन बाढ़े॥ ५१॥
ऐसा हुकुम सरै का नाही।
क्यों ऐ करत चित्त की चाही।
जो कहुं कान संखधुनि आवै।
मुसलमान तो भिस्त न पावै॥ ५२॥
सोसो ओटि कान जो नावै।
तो दोजख तै खुदा बचावै।
तातै ढाहि दिवालै दीजै।
तिनकै ठौर मसीदैं कीजै॥ ५३॥
मुलना तहां निवाज गुदारै।
बांग देहि नित सांझ सकारै।
न्याउ चुकावै फाजिल काजी।
जातै रहै गुसांई राजी॥ ५४॥

॥ दोहा॥

सुनत कान फरमान यह कही फिदाईखान।
हुकुम चलाऊं साह कौ मेटि कुल्ल कुफरान॥ ५५॥

॥ छंद॥

ढाहि दिवालै कुफर मिटाऊं।
पातसाह कौ हुकुम चलाऊं।

जा कहुं बीच बुंदेला आवै।
तौ हमसौ पर फते न पावै॥ ५६॥
जौ मानी मनसूबनि मौजै।
जोरन लगे ग्वालियर फौजै।
सहस अठारह तुरी पलानै।
धूमघाट पर धुज फहरानै॥ ५७॥
यह सुनि महाबीररस छायौ।
बान बांधि धुरमंगद धायौ।
पस्यौ जाइ डेरन पर ऐसै।
मत्त करिन पर केहरि जैसै॥ ५८॥
सांगनि मारि फौज बिचलाई।
पर फतूह धुरमंगद पाई।

॥ दोहा ॥

भज्यौ फिदाईखां बली रही कछू न सम्हार।
दियै पाग के पेच उहि गोपाचल के पार॥ ५९॥

॥ छंद ॥

खबर सुजानसिंह पर आई।
जीते ह्न दल दहसत खाई।
अबकी अनी गई ढरि ऐसै।
बैर साह के बचियतु कैसै॥ ६०॥

अब जौ रोस साह उर आवै।
ता हम पै फौजैं फरमावै।
यह उतपात उथ्यौ रे भाई।
भई जुझारसिंह को हाई॥ ६१॥
तबतौ चंपति भयौ सहाई।
गिली भुंमि भुजबल उगिलाई।
चंपतिराइ कहां अब पैयै।
कैसे अपनौ बंस बचैयै॥ ६२॥
मास अघाइ बुंदेला लीन्हो।
फिरि फिरि चंपति की सुधि कीन्हो।
ज्यौं यह फिकिर भूप उर आई।
त्यौं हरकारनि खबर सुनाई॥ ६३॥

॥ दोहा ॥

पंचम चंपतिराइ कौ छत्रसाल बिरझाइ।
करन दूंद देसहि चल्यौ मनसिब तज्यौ बनाइ॥ ६४॥

॥ छंद ॥

जब यह खबर भूप सुनि पाई।
बढ़ी उमगि अरु दहसत खाई।
जौ तुरकन पर कसी कृपानी।
तौ कीनी मेरी मनमानी॥ ६५॥

जौ मन में कछ खून विचारै।
तौ कृपान हमही पर झारै।
तातै बनत प्रीति उर आनै।
खोदि गाड़िये बैर पुरानै॥ ६६ ॥
यह विचारि तंह पांच पठाये।
जंह छत्रसाल सुनै ठिकठाये।
पहुंचे जाइ पचौर प्रबीनै।
छत्रसाल सौ मुजरा कीनै॥ ६७ ॥
जथा उचित हित सौ बैठारे।
बूझी कुसल कहां पगु धारे।
तब पांचन यह अरज सुनाई।
फिकिर सुजानसिंह उर आई॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

पातसाह लागे करन हिंदुधर्म कौ नासु।
सुधि करि चंपतिराइ की लई बुंदेला सासु॥ ६९ ॥

॥ छंद ॥

त्यौंही सुनै अरंभ तिहारे।
कह्यौ भूप धन बीर छतारे।
ऐसी कछुक उमगि उर आई।
निधि अंजन खोदत निधि पाई॥ ७० ॥

हमहि तिहारे पास पठायौ।
कह्यौ भूप यह बचन सुहायौ।
जौ कहुं बीर दृगनि भर देखौं।
अपनै भये काज सब लेखौं॥ ७१॥
तातै भूपहि देउ दिखाई।
फेरि करौ अपनी मनभाई।
मिटिहै फिकिर तिहारे मेटै।
ऐसै सुजस और पर भेटै॥ ७२॥
यह सुनि छत्रसाल तंह आये।
नृपति सुजानसिंह जंह छाये।
सुनत नृपति निज निकट बुलाये।
मानौ मनबंछित फल पाये॥ ७३॥

॥ दोहा ॥

मनबंछित फल से मिले जब देखे छत्रसाल।
मिले उमगि उठि दूर तै सिंह सुजान नृपाल॥ ७४॥

॥ छंद ॥

हित सौं सिंह सुजान निहारे।
बूझी कुसल निकट बैठारे।
कह्यौ बंस के छत्र छतारे।
तुमतै ह्वैहै काज हमारे॥ ७५॥

जब तै चंपति कस्यो पयानो।
तब तै पस्यो हीन हिंदवानो।
लग्यौ होंन तुरकन को जोरा।
को राखै हिंदुन को तोरा॥ ७६॥
तुम चंपति के बंस उज्यारे।
छत्रधरमधुर थंभनहारे।
तुम लीनी हिंमत हिय ऐसी।
आनि फेरिहो चंपति कैसी॥ ७७॥
अब जो तुम कटि कसो कृपानी।
तौ फिर चढ़ै हिंदुमुख पानी।
नृपति बचन चितु दै सुनि लीनै।
हंसि बोले छत्रसाल प्रबीनै॥ ७८॥

॥ दोहा॥

महाराज हम ऊकुम तै बांधत हैं किरवान।
तौलौ फिकिर न आइहै जौलौ घट में प्रान॥ ७९॥

॥ छंद॥

जौलौ घट में प्रान हमारै।
तौलौ कैसी फिकिर तिहारै।
पै सब क्रिपा आपुकी जानी।
कहै कौन वे कथा पुरानी॥ ८०॥

जो फिरि साह प्रपंच उठावे।
तो लरने घर ही में आवे।
तातै सावधान हिय कैकै।
धरो भार सो उठिहै लैकै॥ ८१॥
यह सुनि नृप नीचे दृग आनै।
फेर बचन बोले ठहरानै।
चंपतिराइ तेग कर लीनी।
आप बुंदेलबंस कौ दीनी॥ ८२॥
भुजन पातसाही झकझोरी।
गई भूमि जुरि जुद्ध बहोरी।
उदयाजीत बंस के जाये।
हम पै सदा छांह करि आये॥ ८३॥

॥ दोहा ॥

पंचम उदयाजीत के कुल कौ यहै सुभाउ।
दलै दौरि दिल्लीसदल जिमि दुरदन बनराउ॥ ८४॥

॥ छंद ॥

तिहि कुल छत्रसाल तुम आये।
दई दिखाई नैन सिराये।
यों दृढ़ प्रेम हियै में लैकै।
बैठे बीच बिसुंभर दैकै॥ ८५॥

राखी तेग बिसुंभर आगे।
कीन्ही सौंह सांच उर पागे।
तब जिनके दिल में छल आवै।
लोक कृतघ्नी के तिन पावै॥ ८६॥
अब जो पाप हिये में लैहै।
तिनकौ दंड बिसुंभर दैहै।
यह कहि प्रीति हिये उमगाई।
दिये पान किरवान बंधाई॥ ८७॥
दोऊ हाथ माथ पर राखे।
पूरन करौ काज अभिलाषे।
हिंदुधरम जग जाइ चलावौ।
दौरि दिलीदल हलनि हलावौ॥ ८८॥

॥ दोहा ॥

अभै देऊ निज बंस कौ फते लेऊ फरमाह।
छत्रसाल तुम पे सदा करै बिसुंभर छाह॥ ८९॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते नृपसुजानसिंह मिलापोनामैकादशोध्यायः॥ ११॥

॥ छंद ॥

यौं असीस नरपति जब दीन्ही।
माथै मानि छतारै लीन्ही।

छांते चले बिदा कै ज्यौंही।
उच्यौ फरक दच्छिन दृग त्यौंही ॥ १ ॥
चलि नौरंगाबादहि आये।
पैठत सहर सगुन सुभ पाये।
देखे तहां बीर बलदाऊ।
नजर मिलत उठि मिले अगाऊ ॥ २ ॥
भेटे प्रीति परस्पर लीन्हौ।
भोजन थार ऐक ही कीन्हौ।
मिलि बैठे तंह दोऊ भाई।
राम कृष्ण कै सी छबि छाई ॥ ३ ॥
छत्रसाल पंचम त्यौं बोले।
मंत्र बिचार हिये के खोले।
दोऊ सब मनसिब हम छांड्यौ।
बिग्रह हियै साह सैा मांड्यौ ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

तातै अब तुम हू चलौ कैहै भलौ इलाज।
ऐक मंत्र कैकै हितू साधत है सब काज ॥ ५ ॥

॥ छंद ॥

राम कृष्ण भुवभार उतारे।
राम लखन मिलि रावन मारे।

चंपतिराइ सुजान सयाने।
ऐक मंत्र क्है अरिदल भाने॥ ६॥
त्यौं हम तुम मिलि दोऊ भाई।
तुरकन पै कीजे घन घाई।
जुद्ध जीति बसुधा बस कीजे।
दै दै दान जगत जस लीजै॥ ७॥
यह सुनि बलि दिवान अनुरागे।
लछन कहन बड़िन के लागे।
बिपत माह हिंमत ठिकठानै।
बढ़ती भये छमा उर आनै॥ ८॥
बचन सुदेस सभनि महि भाषै।
सुजस जोरवे में रुचि राखै।
जुद्धन जुरै अकेले से से।
सहज सुभाइ बड़िन के ऐसे॥ ९॥

॥ दोहा॥

ते सुभाव तुम में सबै छत्रसाल कुलथंभ।
करन बिचारै और को ऐते बड़े अरंभ॥ १०॥

॥ छंद॥

ऐते बड़े अरंभ तिहारे।
तुमते हम कैहैं क्यौं न्यारे।

पै बिचार मन में यह आनौ।
फेर अरंभ करो जे जानौ॥ ११॥
मानष आपकाज कौ दौरै।
करता जो रचि राखो औरै।
तौ सब काज वृथा ह्वै जाही।
होती काके चित की चाही॥ १२॥
जानत कौन देहधर ऐसी।
प्रापति हानि कौन कौ कैसी।
यह करता अपनै कर राखी।
सो जग में सबही कौ साखी॥ १३॥
ताकी कछू इसारत पैयै।
तौ दृढ़ मंत्र यहै ठहरैयै।
बलि की कही छता सुनि लीनी।
बोले बुद्धि बड़ाइ प्रबीनी॥ १४॥

॥ दोहा॥

चाहत जौ करतार की कछू इसारत साखि।
तौ द्वै चिठी उठाइयै प्रभु के आगै राखि॥ १५॥

॥ छंद॥

कै समसेर साह सौं बांधै।
कै छाड़ौ मनसिब हम कांधै।

जौन उठाइ चिठी प्रभु देहै।
माथै मानि वहै हम लैहै ॥ १६ ॥
यह बिचार कीनी अनुरागै।
चिठी लिखाइ धरी प्रभु आगै।
तब अजान सैां ऐक मगाई।
तेग बांधिवे की उठि आई ॥ १७ ॥
तब प्रतीति बलदाऊ कीनी।
माथै मानि चिठी वह लीनी।
कह्यौ धन्य छितिछत्र छतारे।
तुम कुलचंद हिंदुगन तारे ॥ १८ ॥
अब हमसो रन रुपै न कोऊ।
चलिये ऐक चित्त मिलि दोऊ।
जो दृढ़ मंत्र हियै ठहराये।
उतरि नर्मदा देसहि आये ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

संबत सत्रह से लिखे आठ आगरे बीस।
लगत बरष बाईसई उमड चल्यौ अवनीस ॥ २० ॥

॥ छंद ॥

गहनो कठिन ठौर लै राख्यौ।
दिल्लीदल जीतन अभिलाष्यौ।

कीनै सुभट खरच दै ताजे।
पांच तुरंग संग कौ साजे॥ २१ ॥
प्रथम भलेभाई उर आनै।
लछी म्टगछौना मरदानै।
और भभूखा दामिन घोरी।
जुरै न जोर पौनगति थोरी॥ २२ ॥
ए सब सुभट संग के जानौ।
कुंवर नरायनदास बखानौ।
गोबिंदराइ पैंतपुरवारे।
सुंदरमनि पमार अनियारे॥ २३ ॥
दलसिंगार राममनि दौवा।
मेघराज परिहार अगौवा।
धुरमंगद बगसी मरदानौ।
खांगरु खरौ किसोरी जानौ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

प्रबल मिश्रदलसाह ज्यौं त्यौं हरकृष्ण प्रसंस।
लच्छेराउत राममनि मानसाह हरिबंस॥ २५ ॥

॥ छंद ॥

मेघो अरु परदौन दयाले।
भानु भाट बगसीसनि पाले।

फोजेमियां समर अति सूरौ।
लोहलराक सिरोमनि पूरौ॥ २६ ॥
पंबल ढीमर खरगे बारी।
मोदी पते सबै हितकारी।
पांच सवार पचीस पियादे।
बिरचै बिकट सहज में सादे॥ २७ ॥
चले बिसहटी तै सजि साज।
बगुदा गये जहां बलदाऊ।
बलदाऊ हम करी तयारी।
तुम हूं चलौ करौ असवारी॥ २८ ॥
त्यौं बल कही बिजौरी जैयै।
रतनसाह कौं संग चलैयै।
छत्रसाल त्यौं गये बिजौरी।
भेटे रतनसाह भर कौरी॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

छत्रसाल बोले सुनौ रतनसाह सिरमौर।
भुमियावट उर में धरौ करौ देस कौ दौर॥ ३० ॥

॥ छंद ॥

दौर देस दिल्ली के जारौ।
चमकि तेग तुरकन पर झारौ।

हम सेवा करिहैं अनुरागे।
लड़िहैं उमगि तिहारे आगे॥ ३१ ॥
जुद्धवृत्ति छत्रिन की गाई।
तातै यह मेरे मन आई।
अपनौ बर्नधर्म प्रतिपालौ।
साहन के दल दौरि उसालौ॥ ३२ ॥
जे भुमिया हम में मिलि रैहैं।
तेई संग फौज के ह्वैहैं।
जे न लागिहैं संग हमारै।
दोष न लागै तिनके मारै॥ ३३ ॥
जे उमराव चौथ भरि दैहैं।
तेई अमल देस कौ पैहैं।
जिन में ऐंड़ जुद्ध की पावौ।
तिन पै उमगि अस्त्र अजमावौ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

तेग छाइहै देस में देस आइहै हाथ।
शत्रु भागिहै मान भय लोग लागिहै साथ॥ ३५ ॥

॥ छंद ॥

रतन कही यह क्यौं बनि आवै।
बिना भीत को चित्र बनावै।

धन बल उदभट जोधन जाकै।
बिग्रह बनै भरोसौ काकै॥ ३६॥
को रच्छक कौनै मत दीनौ।
को बलवंत सहाइक लीनौ।
छता कह्यौ रच्छक सो जानौ।
सो बलवंत सहाइक मानौ॥ ३७॥
जो प्रभु तिहूंलोक कौ स्वामी।
घट घट व्याप्यौ अंतरजामी।
सो मति देत नरनि कौं तैसी।
होनहार आगै कछु जैसी॥ ३८॥
जिनकौ जौन वृत्ति प्रभु दीनी।
ताही माह सिद्धि तिन लीनी।
आवत हमैं भरोसौ ताकौ।
करुनासिंधु बिरद है जाकौ॥ ३९॥

॥ दोहा॥

करुनानिधि प्रभु ऐक है जातै यह संसार।
ताकौ सेवन सार है जग है और असार॥ ४०॥

॥ छंद॥

सो प्रभु है ऐसौ हितकारी।
संगहि रहै करै असवारी।

सेवक जहांकहूं कौ धावै।
तहां संग ही लाग्यो आवै॥ ४१॥
जहां सेवकहि निद्रा लागै।
साहिब तहां संग ही जागै।
ग्राहगह्यौ हाथी जब हाखौ।
कमल चढ़ावत ही निरधाखौ॥ ४२॥
गाढ़ परै प्रह्लाद बचाये।
खंभु फारि नरहरि कढ़ि आये।
द्रुपदसुता की लज्जा राखी।
वेद पुरान सुम्रति सब साखी॥ ४३॥
वहै सांकरै होत सहाई।
अति अदभुत वाकी गति गाई।
रीतौ भरै भरी ढरकावै।
जो मन करै तो फेर भरावै॥ ४४॥

॥ दोहा॥

जब जैसी चाहै कह्यौ तब तैसी मति देइ।
जो जैसो उद्यम करै सो तैसो फल लेइ॥ ४५॥

॥ छंद॥

चारि बरन जे जग में आये।
सबकों प्रभु उद्यम ठहराये।

हाथ पाइ उद्यम कौं दीनै।
तातै उद्यम करत प्रबीनै ॥ ४६ ॥
उद्यम तै संपति घर आवै।
उद्यम करै सपूत कहावै।
उद्यम करै संग सब लागै।
उद्यम तै जग में जसु जागै ॥ ४७ ॥
समुद उतरि उद्यम तै जैयै।
उद्यम तै परमेस्वर पैयै।
जब यह सृष्टि प्रथम उपजाई।
तेगवृत्ति चत्रिन तब पाई ॥ ४८ ॥
जितनी जाहि बीरता दीनी।
तितनी पुहुमि जीति तिहि लीनी।
तातै दौर देस कौ कीजै।
पुहुमी जीति तेगबल लीजै ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

जद्यपि मंत्र छता कह्यौ वेद पुरान प्रमान।
तदपि रतन मान्यौ नहीं होनहार बलवान ॥ ५० ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते रतनसाह छत्रसाल संवादोनाम द्वादशोध्यायः ॥ १२ ॥

॥ छंद ॥

प्रथम बीरता उमगि बढ़ाई।
बर्नधर्म रुचि चित्त चढ़ाई।
राजनीति की रीति बताई।
ईश्वर की ईश्वरता गाई ॥ १ ॥
फिरि उद्यम की करी बड़ाई।
रतनसाह मन कछू न आई
तब मन माह भये पछिताये।
रोज अठारह वृथा गमाये ॥ २ ॥
त्यौं सोवत सपनौ हरि दीनौ।
समाधान नीकी बिधि कीनौ।
अंतरिच्छ बोले बरबानी।
छत्रसाल कटि कसौ कृपानी ॥ ३ ॥
त्यौं बसुधा बनिता ह्वै आई।
हाथ जोर यह अरज जनाई।
हौं रहिहौं बस भई तिहारै।
मन क्रम बचन कहत निरधारै ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

यह सुनिकै ताकी तहां करी निसा छत्रसाल।
कुवत छोर अनिमिष मनौ भई पूर्व्वदिसि लाल ॥ ५ ॥

॥ छंद ॥

भई पूर्व्वदिसिबदन ललाई।
बिहसत कमलमुकुल छबि छाई।
तिमिर समूह दिसनि तै भागे।
बिछुरे मिले कोक अनुरागे ॥ ६ ॥
उठे जागि छत्रसाल प्रबीनै।
तुरत जीन घोरन पै कीनै।
मुरली मधुरध्वनि तंह बाजी।
चली सिपाह संग उठि ताजी ॥ ७ ॥
ह्वांते चलै कूच करि ज्यौंही।
मिले आइ बलदाऊ त्यौंही।
औ डेरा में डेरा पारे।
डौर बजाइ दुंद के डारे ॥ ८ ॥
छत्रसाल की खबर सुहाई।
बाकीखान बुंदेले पाई।
आगै लैन दूर तै आये।
महिमानी करि आनद छाये ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

बाकीखां सौ मिलि छता दई दुंद की नीउ।
लंक लैन कौ राम ज्यौं किये मित्र सुग्रीउ ॥ १० ॥

॥ छंद ॥

तहां आइ त्यौं मिल्यौ सबेरौ।
कुंवरराज रनधीर धंधेरौ।
तब सबहिनि मिलि मंत्र बिचाह्यौ।
सब कौ छत्र छता निरधाह्यौ ॥ ११ ॥
तंह सम अंस ऊते द्वै साऊ।
छत्रसाल पंचम बलदाऊ।
बलि दिवान त्यौं परम प्रबीने।
सरस बिचार चित्त में लीने ॥ १२ ॥
सौ के अंस बराबर कीनै।
तिन में पांच जिठाई दीनै।
सौ में पैतालीसै आये।
छत्रसाल ने पचपन पाये ॥ १३ ॥
या बिधि अंस दुऊनि ठहराये।
उमगै प्रेम परस्पर छाये।
छत्रसाल त्यौं परम प्रबीनै।
सील सुभाइ सबै बस कीनै ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

ऐक मंत्र ह्वैकै तहां बढ़े परस्पर प्यार।
कांधे बर बिक्रम सबनि बांधे उमगि हथ्यार ॥ १५ ॥

॥ छंद ॥

त्यौं यह खबर सुनत चितचाही।
पहुंचे धाइ कदीम सिपाही।
तीस असवार सैन तंह साजी।
उमडी तुपक तीन से ताजी ॥ १६ ॥
प्रथम दौरकै तंह इलाज के।
जंह सरीक हे कुंवरराज के।
गह्यौ धंधेरन दुरग आसरो।
गांउ गढ़ी कौ दृढ़ दुगासरौ ॥ १७ ॥
इतहि बीर छत्रसाल उमंडे।
उतहि धंधेरन रनरस मंडे।
दुहूं दिसि तुपक तराभर माची।
उदभट भीर बीररस राची ॥ १८ ॥
पसर करी छत्रसाल बुंदेला।
टूट्यौ गांउ प्रथम बगमेला।
मारि गांउ मनभायौ कीनौ।
पहिलौ बैर बाप कौ लीनौ ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

खेत छांडि बैरी भगे गढ़ी गही सकराइ।
धरमदार माग्यो तबै पाये प्रान बराइ ॥ २० ॥

॥ छंद ॥

तब हितु आइ धंधेरन कीनौ।
तुरत व्याह कौ बीरा दीनौ।
बीरा लै रतनागर मार्‌यौ।
धाकनि कांपि उठी दिषि चार्‌यौ॥२१॥
दौरि बेढ़ षिरौंज कौ कीन्हौ।
कुंदा के गिरि डेरा दीन्हौ।
तहां केसरीसिंह धंधेरौ।
मिल्यौ आइ करि नेह्र घनेरौ॥ २२॥
त्यौंही तेज छता के फैलै।
परी षिरौंज सहर में ऐल।
तंह उमराउ हते जगजानै।
महमदहाशिम नाम बखानै॥ २३॥
आनदराइ चौधरी बंका।
दीनौ दुहुन जद्ध कौ डंका।
बिकट पठान जुद्ध कौ साजै।
धौंसा निकट जुझाऊ बाजै॥ २४॥

॥ दोहा ॥

धौंसा धुनि सुनिकै छता दई फौज फरमाइ।
पाइ रोपि बांध्यौ उमडि घाट तोपचिन धाइ॥ २५॥

॥ छंद ॥

प्रबल पठानजु छूरस छाये।
करै बिचार हला कौं धाये।
सनमुख बजी बंदूखै ज्यौंही।
ऐ बिचारि चित आये त्यौंही ॥ २६ ॥
जदपि पठान सुद्ध पिल जैहै।
गोलिन वृथा अजाये कैहै।
तातै रहै फौज मन बाढ़ी।
सनमुख लाग लगाये ठाढ़ो ॥ २७ ॥
हम औघट व्है हला कीजै।
तेगनि मार फतै कर लीजै।
औघट धसे घाट दून छंड्यौ।
छत्रसाल लै तुपक उमंड्यौ ॥ २८ ॥
तुपकन मारि करे मनभाये।
खेत पठान पचासक आये।
त्यौं बैरिन दिल दहसत खाई।
बिडरी फौज सिरौंजहि आई ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

बिडरी फौज सिरौंज कौ दिल में दहसत खाइ।
चंड तेज छत्रसाल कौ रहो दिसनि में छाइ ॥ ३० ॥

॥ छंद ॥

छत्रसाल पंचम रन जीत्यौ।
तुरकनि पर परलौ सौ बीत्यौ।
मारि फौज ओड़ैरहि आये।
त्यौरी त्यों रन पै उठि धाये ॥ ३१ ॥
लूटि गांव कीने मनभाये।
पकर पटैल जैत कौ ल्याये।
लई लूट घोरी अति चांडी।
उखरो गढ़ी न सामा छांडी ॥ ३२ ॥
छत्रसाल करुनारस मंडै।
जैत पटैल डांड़ बिन छंडै।
छांते फिर ओड़ैरहि आये।
चंड प्रताप चहूं दिसि छाये ॥ ३३ ॥
महमद हाशिम संका मानी।
चपे चौधरी उतरौ पानी।
रहै ससाद सास लै दोऊ।
बाहर सहर न आवै कोऊ ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

त्यौं धामौनी में सुनै खालिक जाकौ नाउ।
बैठ्यौ जोर मवास कै यानै दै हरगांउ ॥ ३५ ॥

॥ छंद ॥

सो जीतन छत्रसाल विचारौ।
गोनौ गांउ दौर करि मारौ।
घेरि पिपरहट में ते कूटे।
भगे थनैत तुरंगम लूटे ॥ ३६ ॥
धौरासागर डेरा पारे।
गंजि गरब खालिक के डारे।
तहां गौंड़ जोरे बनबासी।
मिल्यौ दामजीराइ मवासी ॥ ३७ ॥
क्रांति हनूटूक कौं आये।
हनूमान के दरसन पाये।
धामौनी सौ लई लराई।
भेड़ा मारि पथरिया लाई ॥ ३८ ॥
लखरौनी बड़िहारन मारी।
रहे रामठां जगथरि जारी।
गिरिबर मार खेझरा मार्‌यौ।
सोखि सुनौदा पल में गार्‌यौ ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

रहे सिदगवा गांउ के बिकट पहारनि जाइ।
धामौनी ते ओर दल खालिक पऊंच्यौ धाइ ॥ ४० ॥

॥ छंद ॥

धामौनी तै खालिक धाये।
डंका आन नजीक बजाये।
उमडि चल्यौ छत्रसाल बुंदेला।
तुरकन के ओड़े बगमेला ॥ ४१ ॥
तब दिल में दहसत अति जागी।
मुरकि फौज खालिक की भागी।
चलै फौज चंद्रापुर जाख्यौ।
दौर मुलक मेंहर कौ माख्यौ ॥ ४२ ॥
क्रांतै फेरि रानगिरि लाई।
खालिक चमू तहां चलि आई।
उमडि रानगिर में रन कीन्हौ।
खालिक चालि मानि भै दीन्हौ ॥ ४३ ॥

॥ दोहा ॥

लये नगारे ऊंट हय लूट निसान बजार।
खालिक बचे बराद जब मानै तीस हजार ॥ ४४ ॥

॥ छंद ॥

तीस सहस खालिक जब डांडे।
लूटिपाटि अपनै कर छांडे।
छूटे डांड मानकै ज्यौंही।
उद्यौ दस्त खालिक कौ त्यौंही ॥ ४५ ॥

करै देस में कहो न कोई।
वासिल डांड कहांते होई।
जब छत्रसाल पोर यह जानी।
तब बरात बासा पर मानी ॥ ४६ ॥
दागी केसौराइ तहांकौ।
जाहिर जोर मवासी बांकौ।
तहां बरात लिखाइ पठाई।
देखत अति वाकै रिस आई ॥ ४७ ॥
बांचि बरात डारि उहि दीनी।
तुरतहि तमकि तेग कर लीनी।
फिरी बरात बुंदेला जानी।
तब बासा पर फौज पलानी ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

ठिल्यौ बुंदेला बंब दै बासा घेर्यौ जाइ।
त्यौंही सनमुख रन पिल्यौ दागी बड़ी बलाइ ॥ ४९ ॥

॥ छंद ॥

खुरी कराइ तुरी चढ़ि धायौ।
फेरत सहिथी बलगत आयौ।
छत्रसाल दूत कौन कहावै।
सो मेरे सनमुख कढ़ि आवै ॥ ५० ॥

देखौ समर छत्र पन ताकौ।
कह्यौ नाम जुद्धन में जाकौ।
उमडि बचन ज्यौं बलगि सुनायौ।
त्यौं छत्रसाल तुरग झमकायौ ॥ ५१ ॥
झमकि तुरंग भयौ कढ़ि सोहैं।
बोल्यौ बचन बदन बिहसौहैं।
पहिल घाउ घालौ तुम आछै।
हियै हौस रहि जैहे पाछै ॥ ५२ ॥
जोरन बहस परस्पर बाढ़ी।
देखत फौज दुहूं दिस ठाढ़ी।
त्यौं उहि बहक सैहथी बाही।
बच ओड़ि छत्रसाल सराही ॥ ५३ ॥

॥ दोहा ॥

बच आड़ि बरछी रुप्यौ छत्रसाल रनधीर।
त्यौंही सांगि उछालकर झमकि हन्यौ वह बीर ॥ ५४ ॥

॥ छंद ॥

अरि के सांगि दुहूं दिस साली।
तऊ न वाकी हिंमत हाली।
पैरत सांग सांमुहै आवै।
पै क्रपान कौ घाउ न पावै ॥ ५५ ॥

अरि की चोट मान त्यों कीन्हो।
वेह्न तेग मान मुंह लीन्हो।
त्यों सर दीपसाह कौ कूद्यौ।
तऊ न बीर समर तैं हृच्यौ॥ ५६॥
तव छत्रसाल करी मनभाई।
ऊमकि सांगि दुऊ हस्त हलाई।
ठेलाठेल हलाइ गिरायौ।
बीर बघाइ खेत वह आयौ॥ ५७॥
जो रन में रुपि रुद्र रिझायौ।
दागी कौ सिर काटि चढ़ायौ।
लूटिलाट बासा सब लीन्हौ।
बड़ी पटारी कौ मन कीन्हौ॥ ५८॥

॥ दोहा॥

बड़ी पटारी मारिकै फतै लई ततकाल।
बाकीखां के देस कौ पऊंचे श्री छत्रसाल॥ ५९॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकवि विरचिते केसौराइ दागी बधवर्णनं नामत्रयोदशोध्यायः॥ १३॥

॥ छंद॥

मधु दिन तहां मुकाम बजायौ।
सुरह्यौ घाउ चाउ चित आयौ।

हरी भीर छत्रसाल बुंदेला।
सुभट छ सातक आपु अकेला॥१॥
सहज सिकारखेलरस पागे।
बनबराह मृग मारन लागे।
सैदबहादुर हिंमत कीनी।
खबर जहुमनि सौ सब लीनी॥२॥
दल सजि उचकि आनि हंकारौ।
खलभल सहज खेल में डारौ।
ज्यौं हरिनन की होत हकाई।
उचका उठै बाघ बिरझाई॥३॥
त्यौंही सैदबहादुर धायौ।
डंका निकट नजीक बजायौ।
सुनि डंका छत्रसाल रिसानै।
छत्रधरम कौ बांधे बानै॥४॥

॥ दोहा॥

फौज बहादुर सैद की परी फंद में आइ।
वाके दल बोरन दई गोलन गोल गिराइ॥५॥

॥ छंद॥

गिरी गरज गाजै सी गोली।
डगडग चमू अरिन की डोली।

मुगल पठान खेत में जूझे।
बैरिन ब्योंत चाल के सूझे ॥ ६ ॥
चमकि चाल तुरकन त्यौं दीनौ।
सतपत्र छत्ता तंह लीनौ।
क्रांतै उमड़ि बरावा मार्यौ।
धूमघाट पर डेरा पार्यौ ॥ ७ ॥
गोपाचल में खलभल माच्यौ।
सैदमनौवर त्यौं रिस राच्यौ।
जोरी फौज निसान बजाये।
धूमघाट पर उमडत आये ॥ ८ ॥
त्यौं छत्रसाल बीररस बाढ़े।
सनमुख गये जूझ कौ ठाढ़े।
माची मार रुद्र अनुराग्यौ।
बाजन मार मार सौ लाग्यौ ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

सेल्ह ढकेलनि ठेल दल पिले बुंदेला बीर।
महाभयानक भांति लख पगनि डगमगे मीर ॥ १० ॥

॥ छंद ॥

डगे मीर तजि खेत पराने।
पिले बुंदेला रन सरसाने।

मुगल पठान हने जे जूटे।
सैद सहर भीतर लौं लूटे॥ ११॥
सहर लूट कीनी मनभाई।
गढ़ के गेरत रहटो लाई।
लूटि ग्वालियर मुलक उजारौ।
छांते दौरि कंजियौ मारौ॥ १२॥
गिरिबर मारि करे अरि हीने।
कटिया केनव डेरा कीने।
त्यौं महमदहाशिम चलि आये।
संग अनंदचौधरी धाये॥ १३॥
पिले उमंडि तीन सजि गोले।
तीन्यौ ओर खग्ग झकझोले।
ते आवत छत्रसाल निहारे।
अस्त्रनि उमडि तिहूं दिसि मारे॥ १४॥

॥ दोहा ॥

तीन्यौ गोल बिदारकै फतै लई छत्रसाल।
सुधि करि त्रिपुर संहार की नाचे भूत बिताल॥ १५॥

॥ छंद ॥

छांते हनूटूक कौ आये।
भयौ ब्याह त्यौं बजे बधाये।

अति आतंक चहूंदिसि फैले।
भये बदन बैरिन के मैले ॥ १६ ॥
हौन फतूह लगी मनमानी।
चली चौथ चुकि जग में जानी।
सुनत चाह कुंवरन मन कीनौ।
सबन संग छत्रसालहि दीनौ ॥ १७ ॥
रतनसाह त्यौंही चलि आये।
अमर दिवान खबर सुनि धाये।
सबलसाह हितु आये कीनै।
केसौराइ मिले मनु लीनै ॥ १८ ॥
धाऊ अरु कीरति मनभाये।
दीप दिवान दीप छबि छाये।
मिले रामजू संगर सूरे।
पृथीराज बल बिक्रम पूरे ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

माधौराइ बसंत अरु उदैभान त्यौं वर्न।
अमरसिंह परताप तंह मिले चंद अरु कर्न ॥ २० ॥

॥ छंद ॥

अब सब सुनौ साहिगढ़वारे।
जिन रनमध्य अस्त्र झुकझारे।

आइ इंद्रमनि मिले अगाऊ।
उग्रसैन सम काहि गनाऊ ॥ २१ ॥
जगतसिंह बानैत बुंदेला।
रन में करत प्रथम बगमेला।
सकतसिंह त्यौं गुननि गरूरे।
दान कृपान बुद्धि बल पूरे ॥ २२ ॥
जामसाह अंगद मरदानै।
मनसिब छांडि मिले जग जानै।
आये पर्बतसिंह प्रबीनै।
रूपसाह त्यौं रनरस भीनै॥ २३॥
देव दिवान प्रेम उर बाढ़े।
भारतसाह समर अति गाढ़े।
चंद्रहंस अरिकुल कौ घाती।
मिल्यौ सुजानराइ कौ नातौ॥ २४॥

॥ दोहा ॥

दूजे भारतसाह त्यौं राइ अजीत बसंत।
बलि दिवान के नंद दै चित्रांगद जसवंत ॥ २५ ॥

॥ छंद ॥

रामसिंह जैसिंह बखानै।
जादौराइ करनजू जानै।

गाजीसिंह कटेरावारे।
दै करनाल दुवन जिन मारे ॥ २६ ॥
जगतसिंह मुनि कबिन प्रमानै।
त्यौं गुपालमनि परम सयानै।
और अनेक कहांलगि गाऊं।
गनती सत्तर कुंवर गनाऊं॥ २७ ॥
केते सगे सोदरे सारे।
और पमार धंधेरे भारे।
नाते ममा फुफू के जेते।
मिले आइ छत्रसालहि तेते ॥ २८ ॥
छच निसान दलनि फहरानै।
धौंसा धुनि घन से घहरानै।
उमडि चली गोलन पर गोलै।
दल के भार फनीफन डोलै ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

लगन लगे कुल कटक में तबू तुंग कनात।
झंडा गड़े बजार में अति ऊंचे फहरात ॥ ३० ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते सैदबहादुर जुद्ध वा कुंवरन कौ आगमन वर्णनोनाम चतुर्दशोध्यायः ॥१४॥

॥ छंद ॥

लागी चमू चढ़न चतुरंगै।
ज्यौं जलनिधि की तरल तरंगै।
ऐड़दार जितही सुनि पावै।
फौजै उमडि तहां कौ धावै ॥ १ ॥
बासा अरु वृंदाबन बाल्यौ।
अलै पथरिया ऊपर पाल्यौ।
दीनी लाइ निदर निदराई।
फौज बहुत राई पर आई ॥ २ ॥
पहिली पसर रनेही टूट्यौ।
कोटा कूट दमोयौ लूट्यौ।
धामौनी में धूम मचाई।
जब न और की बचै बचाई ॥ ३ ॥
तब खालिक ऐसी मति कीनी।
वाकन खबर साह कौ दीनी।
लिखो बहादुरखां कौ ऐसै।
बादर फट्यौ ढाकियै कैसै ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

चहुंचक्क उमडे फिरत बड़े बुंदेला बीर।
अमल गये उठि साह के थके जूझ करि मीर ॥ ५ ॥

॥ छंद ॥

काका खबर हजूर जनाई।
वहै लिखी वाकन में आई।
सुनत साह मन में अनखाने।
भेजे रनदूलह मरदाने ॥ ६ ॥
संग बाइस उमराइ पठाये।
आठक लिखे महती ठाये।
बिदा भये मुजरा करि ज्यौंही।
बजे निसान कूच करि त्यौंही ॥ ७ ॥
दतिया अरु औंड़छौ बगैनी।
सजी सिरौज कौंच धामौनी।
उमडि इंदुरखी चढ़ी चंदेरी।
पिलि पाडौर जुद्ध की टेरी ॥ ८ ॥
ऐ महती उमडि चढ़ि आये।
मनसिबदार तीस ठिकठाये।
कह्यौ गढ़ाकोटा पर पेला।
जहां सुनै छत्रसाल बुंदेला ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

उमड्यो रनदूलह सजे तीस हजार तुरंग।
बजे नगारे जूझ के गाजे मत्त मत्तंग ॥ १० ॥

॥ छंद ॥

दिन के पहर तीन तब बाजे।
लागी लाग मीर गल गाजे।
त्यौं छत्रसाल चढ़ाई भौहैं।
अड़े बंब दै भये भिरौहैं ॥ ११ ॥
उमडि रारि तुरकन त्यौं मांडी।
छूटे तीर उड़ति ज्यौं टांडी।
त्यौं रन उमडि बुंदेला हांके।
रंजक धुंवन घामनिधि ढांके ॥ १२ ॥
बाजन लगी बंदूखें सोई।
गिरे तुरक जे लगे अगोई।
गिरत हरौल गोल के साऊ।
कढ़ि कतार तै ठिले अगाऊ ॥ १३ ॥
लगे खान गोलिन की चोटै।
नट ज्यौं उछल लाग लै लोटै।
समर बिलोकि सुरन भय कीनौ।
सूरज सरक अस्तगिरि लीनौ ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

जोत जामगिन में जगी लागे नखत दिखान।
रन असमान समान भौ रन समान असमान ॥ १५ ॥

॥ छंद ॥

पहर रात भर भई लराई।
गोलिन सर सैथिन झर लाई।
खाइ घाइ सब खान अघानै।
खोह मानि तजि कोह परानै ॥ १६ ॥
डेरा कोस द्वैक पर पारे।
हिंमत रही हिये सब हारे।
अड़े बुंदेला टरै न टारे।
जीते जूझ बजाइ नगारे ॥ १७ ॥
रनदूलह रन तै बिचलाये।
कांते हनूटूक कौ आये।
मारि गुनाह मरोरी टोरी।
खग्ग झार झागर झखझोरी ॥ १८ ॥
फिरि मवास रतनागर मार्‍यौ।
औडेरा में डेरा पार्‍यौ।
दख दौरन हरथौन उजारी।
धामौनी में खलभल पारी ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

चौंकि चौंकि चहुं दिस उठै सूबाखान खुमान।
अबधौ धावै कौन पर छत्रसाल बलवान ॥ २० ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे रनदूलहपराजयो नाम पंचदशोध्यायः ॥ १५ ॥

॥ छंद ॥

त्यौंही दौर करकरा कूच्यौ।
आसपास नरवर कौ लूच्यौ।
सौ गाड़ी सकलात सलौनी।
पातसाह कौ जात पठौनी ॥ १ ॥
सो ताकी छत्रसाल बुंदेला।
लई लुटाइ फौज सौ पेला।
सबही लूट कूटकर पाई।
लुंगी मोल मौधुवन लाई ॥ २ ॥
लूटी रसद साह की ज्यौंही।
वाकन लिखी हकीकत त्यौंही।
सुनी दिलीस खबर ठिकठाई।
सूबा दल कौं नालस आई ॥ ३ ॥
रनदूलह डांडे रनऊमी।
पठए साह रोस करि रूमी।
लै मुहम रूमी रिस कीनी।
मोट उठाइ अरे की लीनी ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

फौज जोरि रूमी बढ़्यौ बाजे तबल निसान।
छत्रसाल तासौ कयौ बसिया में घमसान ॥ ५ ॥

॥ छंद ॥

बसिया में माच्यौ रनखेला।
उत रूमी इत बीर बुंदेला।
तुपक तीर सैथी तरवारै।
खात खवावत बीर हकारै॥ ६॥
उमगे भिरत जुद्धरस पागे।
कटि कटि गिरन परस्पर लागे।
कह्यौ कल्यानसाह मन आछे।
पग परिहार न दीनै पाछे॥ ७॥
मीर बहबहे उमडत आये।
सनमुख जुटै हटै न हटाये।
गनी रूम के तके बुंदेला।
कियौ तुपकदारनि कौ पेला॥ ८॥
तिन चौटै कीन्ही चितचीती।
साखै भई सबनि की रीती।
गनी रूम कौ समर पहारू।
बाटन लग्यौ सबनि कौ दारू॥ ९॥

॥ दोहा ॥

भई भीर गलबल मच्यौ दारू बाटत लेत।
लग्यौ पलीता सी ढरन उठ्यौ धूम उहि खेत॥ १०॥

॥ छंद ॥

त्यौंही हला बुंदेलनि बोले।
समर खेत खग्गनि के खोले।
लागे मुह ते मारि गिराये।
पिलिवन वीर धुंवा पर धाये ॥ ११ ॥
दारू उड़ै उड़ै अरि ज्यौंही।
मारे बीर बुंदेलनि त्यौंही।
रूमी बिडरि खेत तै भाग्यै।
छत्रसाल जस जग में जाग्यै ॥ १२ ॥
त्यौं रंग मच्यौ दिल्ली में औरै।
दुदिलौ भये साह कित दौरै।
नृप जसवंतसिंह के बेटा।
कढ़ै दिल्ली कौ मारि ववेटा ॥ १३ ॥
फिरि जोधापुर धनी अन्यारे।
अंतिसाह अजमेर पधारे।
त्यौं अकबर सहिजादौ साजु।
राठौरन पर पिल्यौ अगाजु ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

त्यौं प्रपंच रचि बुद्धि बल दुरगदास राठौर।
सहिजादे सौ मिलि किये तखत छैन के डौर ॥ १५ ॥

॥ छंद ॥

तखत लैन के लोभ बढ़ाये।
पुत्रहि पितहि बैर उपजाये।
सहिजादौ संगी कर पायौ।
तब दच्छिन कौ वाहि चलायौ ॥ १६ ॥
ताकी पीठ साह उठ लागे।
दच्छिन कौं उमगे रिसपागे।
रूमी भगे साह त्यौं जानै।
कारी परी कुल्ल तुरकानै ॥ १७ ॥
बल व्यवसाइ सबनि के थाके।
तब दिलीस तहवर मन ताके।
जानि जुद्ध अमनैक अठायौ।
तहवरखां दछि देस पठायौ ॥ १८ ॥
चढ़ी चमू तहवर की बांकी।
दिसां धूरि धंधरि सैा ढांकी।
ज्यौं तहवर की सुनी अवाई।
त्यौंही लगन ब्याह की आई ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

सावर ते आई लगन मिले बोल बंधान।
दवादवै बीरा दियौ अब हितु भयौ निदान ॥ २० ॥

॥ छंद ॥

जब दिन निकट ब्यांह के आये।
मंगलगीत दुहूं दिस गाये।
तब दल बलदाऊ संग राखे।
लागे करन काज अभिलाषे॥ २१ ॥
छरी बरात ब्याह कौं साजी।
तीस सवार बंब अरु बाजी।
दूलह छत्रसाल छबि छाये।
करन ब्याह साबरहि सिधाये॥ २२ ॥
तंह बिधि सौ आगौनो कीनो।
बांध्यो मौर इंद्रछबि लीनो।
लागी परन भांउरै ज्योंही।
परी फौज तहवर की त्योंही॥ २३ ॥
अनी बनी दोई बनि आई।
दोऊ बरीं करी मनभाई।
इतहि भांउरै सजी सुहाई।
उत तुरकनि सौ मची लराई॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

रन रुपि तहवरखान कौ मुह मुरकायौ मारि।
परन वेद बिधान सौ लई भांउरै पारि॥ २५ ॥

॥ छंद ॥

मारी फौज तुरक मुरकाये।
तंह सब धाये बजे बधाये।
ब्याही बरी जीति अरि लीनो।
कंकन छोड़ि तुरंगम दीनो ॥ २६ ॥
धामौनी दौरन झकझोरी।
फिरि पिछौरि सब खरी पिछौरी।
बारी बार मवासी कूटे।
गांउ कलींजर के सब लूटे ॥ २७ ॥
रामनगर मास्यो करि डेरा।
कालींजर कों पास्यो घेरा।
रोज अठारह गढ़ सो लागे।
चौकिन तहां द्यौस निसि जागे ॥ २८ ॥
बाहिर कढ़न न पावै कोई।
रहे संक सकराइ गढ़ोई।
लई रोकि चारिउ दिस गैलै।
गढ़ पर परै रैन दिन ऐलै ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

चिंतामनि सुरकी तहां कीनो आइ सुदेश।
अति आदर सो लै चले न्योतो करि निज देश ॥ ३० ॥

॥ छंद ॥

न्यौतौ करि कीनो महिमानी।
धन्य घरी सबही वह मानी।
तातै तुरी तिलक में दीनौ।
उर आनंद परस्पर लीनौ ॥ ३१ ॥
ह्यांतै कूच बिदा ह्वै कीनौ।
कालींजरहि दाहिनौं दीनौ।
लरे उमडि तंह सुभट अन्यारे।
घाटी रोकि वीर गढ़वारे ॥ ३२ ॥
छत्रसाल त्यौं हल्ला बोल्यौ।
खग्गन खेल बुंदेलन खोल्यौ।
समरभूमि अरिलोथिन पाटी।
रोकी रुकै कौन की घाटी ॥ ३३ ॥
बारि बनहरी लूट मचाई।
धामौनी सौ लई लराई।
पटना अरु पारौलि उजारै।
तहवरखां पै परी पकारै ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

फौज जोर तहवर तहां ठनै जूझ के ठान।
गौनै में छत्रसाल के दल कौ पर्‍यौ मिलान ॥ ३५ ॥

॥ छंद ॥

पर्यो मिलान जाइ जब गौनै।
करकै तंबू तनै सलौनै।
दछिनी दिस उतरे बलदाऊ।
जंह गोली पऊंचै पऊंचाऊ ॥ ३६ ॥
थंन्हे अपनी अपनी पाली।
पर्यो पहार पीठ तन खाली।
ऊपर सिखर चौपरा जान्यौ।
सो देखन छत्ता उर आन्यौ ॥ ३७ ॥
छरी भीर कौतुक मन बाढ़ै।
चढ़ि करि भये शिखर पर ठाढ़ै।
ज्यौं यह खबर जसूसन दीनी।
त्यौं तहवरखां बागै लीनी ॥ ३८ ॥
बखतरपोस सहस दस धाये।
प्रलै मेघ से उमडत आये।
निकट आइ धौंसा घहरानै।
हयखुरधार छटा छहरानै ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

बड़ी फौज उमडी निरखि रच्यौ छता घमसान।
चढ़ि सनमुख रनमुख तहां बरषन लाग्यौ बान ॥ ४० ॥

॥ छंद ॥

बरषन लाग्यौ बान बुंदेला।
कियौ तुरक दै ढाल ढकेला।
बखतरपोस बान सौ फूटै।
नल से चतज छांछ के छूटै॥ ४१॥
कौतुक देखि जोगिनी गाई।
खप्पर जटनि मांजती धाई।
बिसुनदास तंह मार मचाई।
आप कटेरहि भली चढ़ाई॥ ४२॥
गह्यौ पहार बुंदेला गाढ़े।
त्यौं पठान पैठै मन बाढ़े।
चंड लोऊ दुऊं दिस ठहरानै।
सूरज गगन मध्य ठहिरानै॥ ४३॥
सोर सिंहनादन के माचे।
भूत बिताल ताल दै नाचे।
डेरन खबर जूझ की पाई।
सुभट भीर त्यौं उमडत आई॥ ४४॥

॥ दोहा ॥

चढ़े रंग सफजंग के हिंदू तुरक अमान।
उमडि उमडि दुऊं दिस लगे कौरन लोहै खान॥ ४५॥

॥ छंद ॥

कौरन लोह खान भट लागे।
दुहूं ओर रन में रस पागे।
सुतरनाल हथनालै छूटी।
गरजि गरजि गाजै सी टूटी ॥ ४६ ॥
गोलिन तीरन की झर लाई।
मची सेल्ह समसेरन घाई।
त्यों लच्छे रावत प्रभु आगै।
सेल्हन मार करी रिस पागै ॥ ४७ ॥
प्रबल पठान मारिकै साऊ।
कह्यौ मिश्र हरिकृष्ण अगाऊ।
उमडि लोहलपटन मन दीनौ।
तन कौ होम स्वामि हितु कीनौ ॥ ४८ ॥
बाघराज परिहार पचाख्यौ।
मार पैर रविमंडल फास्यौ।
जूझ्यौ नंदनछिपी सभागौ।
ब्यौतन लग्यौ इंद्र कौ बागौ ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

कृपाराम सिरदार त्यों कह्यौ धंधेरौ धीर।
बैठ्यौ जाइ बमान चढ़ि भानु भेदि वह बीर ॥ ५० ॥

॥ छंद ॥

उतहि पठान चढ़त गिरि आवै।
इत छत्रसाल बान बरषावै।
इक इक बान दुद्वै भट फूटे।
झुक झुक तऊ झपट रन जूटे ॥ ५१ ॥
बान बेग जगतेस हकास्यौ।
त्यौं करवार झरप झुकझास्यौ ।
घाउ ओड़ि भुज ऊपर लीनै।
उमडि पांउ रन सनमुख दीनै ॥ ५२ ॥
गिरे पठान डील त्यौं भारे।
गोलनि सेल्ह सरन के मारे।
जंघा घाउ छतारै ओड़्यौ।
भुजदंडन रनसिंधु बिलोड़्यौ ॥ ५३ ॥
पिले तुरक जे बखतरवारे।
ते रन गिरे छता के मारे।
बढ़े गिरिन स्रोनित के नाले।
धर धमकन धरनीतल हाले ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

कहर जूझ द्वै पहर भौ झस्यौ सार सौ सारु।
तेज अरिन कौ त्यौं घस्यौ लोयन पस्यौ पहारु ॥ ५५ ॥

॥ छंद ॥

बारह बीर खेत इत आये।
सत्ताइस घाइल छबि छाये।
तुरक तीन से खेत खपाये।
घाइल द्वै से बीस गनाये॥ ५६ ॥
मारि तुरक को मुह मुरकायो।
रन में बिजै बुंदेला पायो।
मुरके तुरक खग्ग फिर खोल्यो।
बल दिवान पर हल्ला बोल्यो॥ ५७ ॥
बजे नगारे फेर जुझाऊ।
रन में रुप्यो उमडि बलदाऊ।
पहर राति भर मार मचाई।
मुरक्यो तुरक उहां खम खाई॥ ५८ ॥
ओड़ि अरिन के ढाल ढकेला।
भलो लरो बलकरन बुंदेला।
खभरि खेत तहवर बिचलायो।
सूबन के उर साल सलायो॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

सले साल सूबानि के धकनि हले पठान।
दियो भाल छत्रसाल के राजतिलक भगवान॥ ६० ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते तहवरयुद्धवर्णनं नाम षोड़शोध्यायः॥ १६ ॥

॥ छंद ॥

जूझ जीति नीसान बजाये।
छांते धौरीसागर आये।
करी दौर दुलचीदल माह्यौ।
दलजलि दुवन बरहटा बाह्यौ ॥ १ ॥
उमाड दलनि ऐरछ झुकझोरी।
निपट बिकट मगरौट मरोरी।
बनहोला में आग लगाई।
फिरि जलालपुर लूट मचाई ॥ २ ॥
उतरत नदी पठानन रोके।
ते भुज ठोक समर में ठोके।
खरका के ढिग डेरा पारे।
त्यौंही सैदलतीफ हंकारे ॥ ३ ॥
सैदलटकरी डेरा कीनौ।
दुनि चढ़ि रात दरैरौ दीनौ।
लूटन कटक बुंदेला लागे।
सैदलतीफ प्रान लै भागे ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

भाग्यौ सैदल प्रान लै निपटै कटक कुटाइ।
देष लूट दछिन चले हय गय गये लुटाइ ॥ ५ ॥

॥ छंद ॥

हय गय लूटि बंडपहि आये।
जुरि भुमिया गांवन ते धाये।
जुरो मुसकरा और बिहौनी।
रोकी उमडि सबनि रन औनी॥ ६॥
नौरंगा के निकट अगाऊ।
मड़े मड़र दै ढोल जुझाऊ।
त्यौं रन ठाठ बुंदेलनि ठाटे।
खेत गमार चार से काटे॥ ७॥
उमडि धौंधरी सुलई मार्‍यौ।
लूट महोवा डेरा पार्‍यौ।
करी दौर पनवरी घघौरा।
लयौ लूट तंह पकरि करौरा॥ ८॥
सहर लूटि थानौ फिर मांड्यौ।
डांड चुकाइ करौरी छांड्यौ।
धामौनी कौ मुलक उजार्‍यौ।
दल दौरन गडरौला मार्‍यौ॥ ९॥

॥ दोहा ॥

लूटपाट सुरकी लई दई करहिया लाइ।
मदरभदापुर जारिकै रहे राजगिर जाइ॥ १०॥

॥ छंद ॥

तहवरखां हेरत हिय हाखौ।
वाहि दबाइ दमोयौ बाखौ।
सुनी पुकारन तहवर टेरै।
तब डेरा कीन्हौ पटहेरै ॥ ११ ॥
दौर अजुनहर पर पुनि कीनी।
भुमियन तमकि तेग कर लीनी।
सत्ताइस गांवन के ठाये।
ढोल बजाइ ढीठ जुर धाये ॥ १२ ॥
मचो मारु त्यों ठिले बुंदेला।
खिभिर कियौ खग्गान खिज खेला।
किरपाराम चौधरी माखौ।
घाउ भान बगसी तन धाखौ ॥ १३ ॥
जलगि न सूबा सनमुख आवै।
तलगि मवासिन खेत खपावै।
जबलगि द्रगनि न दुरद निहारै।
तबलगि केहरि हरिन संहारै ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

मियां दुरद भुमिया हरिन कानन मुलक बिसाल।
कढ़ि सिकार खेलन लग्यौ समरसिंह छत्रसाल ॥ १५ ॥

॥ छंद ॥

छत्रसाल रनरंग प्रबीनै।
दौरन दबटि देस बस कीनै।
भेड़ा मारि बिनैका बाख्यौ।
दौरि दलीपुर दलमल गाख्यौ ॥ १६ ॥
बारी बदिहा रंगभैलौनी।
मिठुली मारि लई ढाकौनी।
मलि मुगावली अरु महरौनी।
दलि मुराछ कौनी मगरौनी ॥ १७ ॥
पटहैरे पंचहार गंवाये।
घर की रही न ईंट दुटाये।
लुथ्यौ अमौदा ईसुर बारौ।
दल्यौ दौर करि दांगीवारौ ॥ १८ ॥
दई पजारि पछोर पठारी।
सिरसा भीत भीत सों मारी।
सिलवानी बिलवानी लाई।
बासौंधे लें लूट मचाई ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

बारि बिलखुरा रमपुरा रईसैदी परजार।
पेदूढ़ डौंगरू ग्यासपुर ज्ञानाबाद उजार ॥ २० ॥

॥ छंद ॥

दौरि बिलैरा ब्रह्रौ बाह्यौ।
बजिबबूरिया डेरा पाह्यौ।
बड़खेरा बलहरा बलेहै।
दौरि दलनि दलमल्यौ रनेहै॥ २१॥
बड़ी बचैया आग लगाई।
धूम धुंधुधुव धामनि लाई।
घोसी ऐक राममनि धावै।
चालिस कोस दौरि करि आवै॥ २२॥
नृप छत्रसाल ताहि दूत राख्यौ।
और देस जीतनि अभिलाष्यौ।
उतरे नदी पार दल ज्योंहो।
मिले आइ सब सेंगर त्योंहो॥ २३॥
झमकि झार सागर पै झार्यो।
धोसनि धमकि धमहरा मार्यो।
टोरी टोर पलक मे लीनी।
लपक लाल लहटूटो दीनी॥ २४॥

॥ दोहा ॥

बीची बारौ कोपरा कारौबाग झपेट।
लगत बडोऐ में बड़ी लूटी हाट लपेट॥ २५॥

॥ छंद ॥

छटरी मार कह्यौ मनभायौ।
हटि हिंडोरिया हलन हलायौ।
खभरी खोद खूंद चिमलायौ।
रौंद राखि भंज्यौ भौंरा सौ॥ २६ ॥
अधसेरी उमराव न मान्यौ।
माह्यौ देस उताह्यौ पान्यौ।
हाड़ा दुरजनसाल प्रवीनौ।
तिन हित छत्रसाल सों कीनौ॥ २७ ॥
दियौ देस तिन कौं तब डेरौ।
धूपसि मार खदेयौ खेरौ।
मारि मयापुर घारी घेरी।
घुरहट मारि पिपरहट पेरी॥ २८ ॥
लै रमगढ़ा सुवागढ़ लीनौ।
मारि गढ़ाकोटा बस कीनौ।
दई पजारि पैठिपुरवाई।
लीनी लूटि कठिन कुरवाई॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

पते दसौंधी कर कढ़े पीछे हटे न पाउ।
बैस बसंत उमंड में ओड़्यौ सनमुख घाउ॥ ३० ॥

॥ छंद ॥

कुंभराज कंजियौ उजाख्यौ।
कटकन कचरि कुंवरपुर डाख्यौ।
लै कबीरपुर लयौ घटौवा।
कन्हरापुर में रह्यौ न कौवा ॥ ३१ ॥
रौंदि रनौदू रनगिरि लाई।
छड़ति जमहटा लूट मचाई।
फतेपुरा चंद्रापुर लीनौ।
चापि बाढ़िपुर चपटौ कीनौ ॥ ३२ ॥
लयौ लाउरौ लोधीवारौ।
अधरोटा माच्यौ भय भारौ।
दौरनि उमडि अभानौ लीनौ।
मारि उदैपुर कौतुक कीनौ ॥ ३३ ॥
सयद लरे रातगढ़ टूट्यौ।
गढ़धारिन कौ धीरज छूट्यौ।
लई सैारई अरु साडौरौ।
लूटे गांउ गिरद के ओरौ ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

टोरी जोर तिलात लै लई तौरतूमान।
लयौ गोरझामर झिल्यौ झुकझोरी झरखान ॥ ३५ ॥

॥ छंद ॥

ऐसै समै और बिधि कीनी।
सिंह सुजान स्वर्ग गति लीनी।
त्यौंही राज इंद्रमनि पायौ।
छत्रसाल सो हित बिसरायौ ॥ ३६ ॥
मांग मुहीम छता पर ठानी।
तो छत्रसाल हियै रिस मानी।
मारि मुलक में लूक लगायौ।
सतधारै हय पानी प्यायौ ॥ ३७ ॥
चढ़ि गुहनार गरौठ मास्यौ।
त्यौंही कगर कचनयौ बास्यौ।
बांधि घेरि जैरौन उज्यारी।
धार जतहरा ऊपर पारी ॥ ३८ ॥
सुनत इंद्रमनि कौ मन थाक्यौ।
सरन सुजानराइ कौ ताक्यौ।
तब दल धामौनी पर धायौ।
तहवरखां कौ अमल उठायौ ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

दौरि दमौयौ दलमल्यौ लखरौनी परजार।
गौनौ हीरापुर लयौ दई बार मिलवार ॥ ४० ॥

॥ छंद ॥

कर हरथौन हनौता हेला।
डऊली पै पाय्यौ बगमेला।
झपटत झार झोल करि डारी।
रहिली पहिली दौर उजारी॥ ४१॥
बारि मुलक होरी से दीनै।
सबै भये भूपाल अधीनै।
साठ कोस की दौरन दौरे।
रन के ब्यौत न बैरिन औरे॥ ४२॥
चौथ भेलसा लौ की आनी।
अकबकाइ उज्जैन परानी।
चौकी गढ़ चांदा चकचौकै।
दहसत मान देवगढ़ दौकै॥ ४३॥
धाकनि आनि गढ़ापति मानै।
सूबा उर में संक समानै।
रन सनमुख उमराउ न आवै।
चौथ देइ तब देस बचावै॥ ४४॥

॥ दोहा॥

अमल उठाये साह के देस दिली के बार।
आड़े आवै और को सूबन मानी हार॥ ४५॥

॥ छंद ॥

सुवन सवन हार हिय मानी।
छत्रसाल की बजी क्रपानी।
दौरन देस दिली के बारे।
भये ब्योम में अनल उज्यारे ॥ ४६ ॥
उमडि धूम रविमंडल पूरे।
ठौर ठौर जनु उठे बघूरे।
त्यौंही पातसाह फरमायौ।
सेख अनौर साजि दल धायौ ॥ ४७ ॥
बखतरिया पखरैत हथ्यारी।
चढ़े सहस दस होत तयारी।
आगे सौक झुमत गज माते।
गजत अराबे होत न हाते ॥ ४८ ॥
सैयद सेख पठान अन्यारे।
सार बजत ते होत निन्यारे।
बान रहकला तोप जजालै।
सहसनि सुतरनाल हथनालै ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

लोहदात दल साजि ज्यौं उमड्यौ सेख अनौर।
उठत धूम चऊं दिसि तकै करै कहां कौ दौर ॥ ५० ॥

॥ छंद ॥

दौर अनौर कोस दस आवै।
धुंवा कोस चालिस लौ धावै।
दौरन देस बुंदेला लावै।
छोर अनौर न छीवन पावै॥ ५१ ॥
धावै तुरक जुद्धरस भीनै।
पीठ लगाइ बहबहे कीनै।
जानी फौज फंद में आई।
तब त्यौघे में मार मचाई॥ ५२ ॥
मीर बहबहे उमडत आये।
डंका निपट नजीक बजाये।
तब छत्रसाल चढ़ाई भौहै।
पैधौ उमडि फौज के सौहै॥ ५३ ॥
ओड़ि अस्त्र छत्रिन के बांके।
बखतरपोस हला करि हांके।
झमकि तुरी बरछा उलछारै।
बच्च ताकि प्रतिबच्च हिंघारै॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

घाइन के घमके उठै दियौ डमरु हर डार।
नचे जटा फटकारिकै भुज पसारि ततकार॥ ५५ ॥

॥ छंद ॥

घाइन घमकै मचे घनेरे।
बखतरपोस गिरे बहुतेरे।
फरफरात फर में धर लागे।
सेख अनौर मानि भय भागे॥ ५६ ॥
गिरे खेत अनवर के साथी।
लुटे भंडार ऊंट हय हाथी।
घेरे अनवर जान न पाये।
डांड मान तब प्रान बचाये॥ ५७ ॥
मारि लूट अनवरखां डांडे।
चौथ सिवा दुलाख लै छांडे।
आलमगीर खबर यह पाई।
अनवर कौं तागीरी आई॥ ५८ ॥
बोले साह कोप करि ऐसे।
फैले हुकुम हमारौ कैसे।
मनसिबदारन हिंमत खोई।
देखौ निमखहलाल न कोई॥ ५९ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे अनवरपराजयो नाम सप्तदशोध्यायः॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

यौ कहि ताकै तुरतही सुतरदीन की ओर।
जे ईरानी निसबती काबिल कौम अमीर॥१॥

॥ छंद ॥

सुतरदीन त्यौं कुरनस कीनो।
तिन्है साह धामौनी दीनो।
देसनि देसनि लिखे पठाये।
क्यौं फिसाद ऐसै फैलाये॥२॥
सरे मुहीम साह रिस छाका।
क्यौं वे लिखत दुंद के वाका।
जो सिख दई सुनी सब औनी।
भेजे सुतरदीन धामौनी॥३॥
त्यौं मिरजा धामौनी आये।
बंदोबस्त कीनै मनभाये।
सजी हजार तीस असवारी।
दल में निसु दिन रहै तयारी॥४॥
छत्रसाल पै पांच पठाये।
बचन जौम के आनि सुनाये।
ऐ मिरजा उद्दित ईरानी।
रन में जिनकी बजी क्रपानी॥५॥

॥ दोहा ॥

इन्है मुकाबिल और को दिल्ली में उमराउ।
चाहत है इनसौं सबै सूबादार सहाउ ॥ ६ ॥

॥ छंद ॥

इन समान उमराइ न कोई।
को रन इन्है मुकाबिल होई।
बड़े भाग छत्रसाल तिहारे।
मिरजा आप सुडोल निहारे ॥ ७ ॥
मिहरबान ह्वै लिखे पठाये।
तब हम पास राउरै आये।
ते अब लिखे खोलकैं बांचौ।
इनकी दबट दौर तै बांचौ ॥ ८ ॥
इनकी रिस खोटी हम जानै।
को इनसौं सनमुख रन ठानै।
इनसौं बचे जूझ जबही लौं।
कुसल मानि लीजै तबही लौं ॥ ६ ॥
तातै इनकौ भलौ मनावो।
इन देसनि मत दुंद मचावो।
रजाबंद तुमसौं जो ह्वैहै।
तौ मगाइ मनसिब पुनि दैहै ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

तातै इनकै देस कौ छोर छांड अब जाउ।
जौ मिरजा कहुं कोपिहै तौ फिर कहां निबाहु ॥ ११ ॥

॥ छंद ॥

ज्यौं छत्रसाल बचन सुनि लीनै।
त्यौं बोले बरबुद्धि प्रबीनै।
मिरजा बड़े सबनि तै गाये।
याकी चौथ पाइ हम आये ॥ १२ ॥
सो हमेस हमकौं भरि दैहै।
तौ हम इनकौ छोर न छैहै।
चौथ न दैहै जौ मनमानी।
तौ मुलकन कौ परै न छानी ॥ १३ ॥
बिग्रह उठै देस लुटि जैहै।
मिरजा अमल कहांतै लैहै।
जिन प्रभु हमकौ तेग बंधाई।
ते सब ठौरन सदा सहाई ॥ १४ ॥
गरबीलिन के गरबनि ढाहै।
गरबप्रहारी बिरद निबाहै।
केतिक मिरजा की रिस खोटी।
प्रभु के हाथ सबन की चोटी ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

जे जग में दुसमन बड़े काम क्रोध अरु लोभ।
ते मिरजा हितुवा करै कहै मानिहै छोभ ॥ १६ ॥

॥ छंद ॥

विनही जुद्ध जीति अभिलाषै।
त्यौंही वचन क्रोध के भाषै।
चौथ लोभ कै देन न मानै।
तोनौ सत्रु मित्रु करि जानै ॥ १७ ॥
मिरजा के विग्रह मन भायौ।
तौ हमहू यातै सुख पायौ।
प्रथम सृष्टि करता जब कीनी।
तब रनवृत्ति छत्रियनि दीनी ॥ १८ ॥
पग पग अश्वमेध फल चाहै।
ते कृपान रन सनमुख बाहै।
भेदत भान सुभट रन माचे।
रन में रुद्र ताल दै नाचे ॥ १९ ॥
रन अवलोकि अमर सुख पावै।
रन में उमडि अपछरा गावै।
रन में रुपे सुजस जग छावै।
तातै रन छत्रिन कौं भावै ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

जौ रन कौ सनमुख पिलै मिरजा बड़े जुझार।
तौ सेल्हन घमकै मचै समसेरन झनकार ॥ २१ ॥

॥ छंद ॥

जो उछाह रन के बढ़ि आये।
है बर दये पांच पहिराये।
दोने पान संदेस सुनाये।
रन बनबोरन के मन भाये ॥ २२ ॥
पै हम इन्है रोकिहैं तौलौं।
फिर न आइहै ऊतर जौलौं।
जौ मिरजा दै चौथ पठाई।
तौ सलाह निबही ठिकठाई ॥ २३ ॥
दिन दस बाट हेरिहैं आछै।
मनभाई करिहैं ता पाछै।
चले पचौर बिदा ह्वै ज्यौंही।
बजे निसान कूच के त्यौंही ॥ २४ ॥
चहुंचक्र माचे भय भारे।
तिन समाल पर डेरा पारे।
दल की दौर जौन दिसि जानी।
तहां समाधानी ठिकठानी ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

फिरि पचौर ह्वाँते गये सुतरदीन के तीर।
गोसे ह्वै बातैं कही टारि सभा की भीर ॥ २६ ॥

॥ छंद ॥

देखे बली बुंदेला गाढ़े।
जीति जीति फौजैं मन बाढ़े।
विग्रह करै वे न बस ह्वैहै।
हितु कीनै फिरि छोर न ह्वैहै ॥ २७ ॥
जाकी धर्मरीति जग गावै।
जो प्रसिद्ध बलवंत कहावै।
लै अवतार बड़े कुल आवै।
जुद्धन जुरै जगत जसु छावै ॥ २८ ॥
जाहि जोट भैयनि कौ भावै।
करत अनारबी न बन आवै।
सत्य बचन जाके ठिकठाये।
प्रीति जोग ये सात गनाये ॥ २९ ॥
इनसौ भूलि बिरोध न कीजै।
साम दाम सौ बस करि लीजै।
जो वे चौथ देस की पावै।
तौ काहेकौ दूंद उठावै ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

ऐसे मंत्र सुनाइकै रहे पांच गहि मौन।
त्यों मिरजा बोले तमक कही बात यह कौन॥ ३१॥

॥ छंद ॥

जो हम सत्रु चौथ दे साधैं।
तो हथ्यार काहेको बाधैं।
वाकन लिखी खबर जो धावै।
तो हमकों बदनामी आवै॥ ३२॥
जान प्रबीन तुम्हें हम भेजा।
तुम तो दिया जलाइ करेजा।
यों कहि ह्वांते पांच उठाये।
सैयद सेख पठान बुलाये॥ ३३॥
सब सो कही सजो असवारी।
करो जूझ की सबै तयारी।
सब सो जीति जीति मन बाढ़े।
रन में रुपत बुंदेला गाढ़े॥ ३४॥
उचकै फौज इहांते धावै।
खैन हथ्यार न कोऊ पावै।
जिहि दिसि होत खरी हुसियारी।
पैठो ताकी ताक पछारी॥ ३५॥

॥ दोहा ॥

काटि कटक किरवान बल बांटि जंबुकनि देऊ।
ठाठ जुद्ध दृढ़ि रीत सो बाट धरन धरि लेऊ ॥ ३६ ॥

॥ छंद ॥

लगा लगाइ उमडि दल धाये।
घाट छोड़ि औघट कै आये।
ठैार ठैार इत चढ़ी रसोई।
भोजन करो कैान बिधि होई ॥ ३७ ॥
धूरि धुंध नभमंडल देखी।
आंधी उठी सबनि उर लेखी।
छत्रसाल के तुरग नवीनै।
चैाकिन खरे कादजा कीनै ॥ ३८ ॥
त्यैां छत्रसाल बुद्धि उर आनी।
चढ़ी चमू तुरकन की जानी।
कै असवार तुरी झमकाये।
दल में सबनि हथ्यार बंधाये ॥ ३९ ॥
सुभटछ सातक आपु अकेला।
दल सनमुख कीनो बगमेला।
कही पुकार चलत हम आगे।
पऊंचो सबै लाग के लागे ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

ज्यौं अरिदल सनमुख पिल्यौ छत्रसाल रनधीर।
कुंभसूनु सनमुख चल्यौ सोखन समुद गभीर ॥ ४१ ॥

॥ छंद ॥

सुभट घटा कवचनिजुत कारी।
उमडत आवत निकट निहारी।
त्यौं छत्रसाल जुद्धरस छाये।
तानि कमान बान बरषाये ॥ ४२ ॥
कवच समेत कवचधर फूटै।
संग के सुभट बाघ से छूटै।
करी उमडि सेल्हन घन घाई।
हठि हरौल की गोल हलाई ॥ ४३ ॥
ठेल हरौल गोल जब हंकी।
जूझ्यौ परसराम सोलंकी।
उदभट और उकिल सब आये।
दुद्दै तितिन असवार गिराये ॥ ४४ ॥
झलकी बदन सबनि कै लाली।
हांकी हरषि आपनी पाली।
उठी हूल अरिबल अधिकारी।
कोसक लौ भगि गई पछारी ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

त्यौं मिरजा अपनी अनी थांभी तबल बजाइ।
कही सबनि सौं बलगनै लेऊ गनीम न जाइ॥ ४६॥

॥ छंद ॥

जौलगि तुरकन कटक सम्हारे।
तौलगि कढ़ि बनबीर हंकारे।
सनमुख घाट तोपचिन बांधे।
कलह कराल क्रुद्ध कै कांधे॥ ४७॥
उमडि चमू तुरकन की धाई।
बनबीरन गोलिन झर लाई।
सैयद सेख पठान अन्यारे।
गिरे खेत गोलिन के मारे॥ ४८॥
हठे न मीर जुद्धरस भीने।
धरि धरि लोथ मोरचा कीनै।
घनै मीर बनबीर उछीनै।
पेलि मतंग घाट उन लीनै॥ ४९॥
छुटत घाट करकै पग रोपे।
त्यौं पठान पैठे उत कोपे।
तंह मिरजा रन के रस भीनै।
बांधि कतार गोल द्वै कीनै॥ ५०॥

॥ दोहा ॥

दुहूं ओर दै गोल करि बांधी बीर कतार।
जनु रन कौं दै सिखिर कौ जंगम भयौ पहार ॥ ५१ ॥

॥ छंद ॥

पिले पठान जुद्धरस बाढ़े।
रन में रुपे बुंदेला गाढ़े।
माची मार दुहूं दिस भारी।
जनि जम दई तमकि करतारी ॥ ५२ ॥
उमडि नरायनदास हंकार्यौ।
सेक संहार घाट तन धार्यौ।
बिरचि अजीतराइ रन कीनौ।
मीरनि मार घाट तब लीनौ ॥ ५३ ॥
बालकृष्ण बिरच्यौ मन आछै।
घाउ ओड़ि पग धर्यौ न पाछै।
गंगाराम चौदहा चांडौ।
लर्यौ बजाइ खेत में खांडौ ॥ ५४ ॥
मेघराज परिहार अगाऊ।
रन में रुप्यौ हनत अरिसाऊ।
सनमुख पिल्यौ राममनि दौवा।
अरु हरौल के हने अगौवा ॥ ५५ ॥

॥ दोहा ॥

लरे हांक हिंदू तुरक झलौ सार सो सार।
भये भानु रथ रोककै कौतुक देखनहार ॥ ५६ ॥

॥ छंद ॥

ठिले मीर सनमुख त्यौं बांके।
त्यौं रन उमडि बुंदेला हांके।
भारी भीर परी जब जानी।
छत्रसाल कर कढ़ी कृपानी ॥ ५७ ॥
बखतरपोस हला करि काटे।
रुंड मुंड रनमंडल पाटे।
फौजदार मिरजा कौ प्यारौ।
जूझौ बरगीदास अन्यारौ ॥ ५८ ॥
बरगीदास कढ्यौ रन ज्यौंही।
पयौ चालु मिरजा कौ त्यौंही।
गिरे तुरक छत्ता के मारे।
जोजन लौं धर पै धर डारे ॥ ५९ ॥
खायौ चाल सुतरदीं हारे।
गरबप्रहारी गरब उतारे।
दल बिडारि डेरन पर आये।
पाई फतै निसान बजाये ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

सुतरदीन कौ कूटि दल लीनो चौथ चुकाइ।
पहुंचे दल दरकूच हो चित्रकूट कौं जाइ ॥ ६१ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते सुतरदीन पराजयोनामाष्टादशोध्यायः ॥ १८ ॥

॥ छंद ॥

तहां हमीदखान चढ़ि आयौ।
तासौं जुद्ध जीति जस पायौ।
ह्यांतै फिरत बीरगढ़वारे।
तीन बेर रन में रिपि मारे ॥ १ ॥
ह्यांतै दौरि गढ़ोला तोर्‍यौ।
गज धक्कनि नरसिंहगढ़ मोर्‍यौ।
रौंड मारि ऐरछ परजारी।
कचर कनार कालपी डारी ॥ २ ॥
उरई अरु खगसीस उज्यारी।
दौर दलनि बरहट त्यौं बारी।
लै अस्तापुर सोह संहारो।
धारि उमंडि सलापुर पारो ॥ ३ ॥
चहुंदिसि घेरि कोटरा लीनौ।
जूझ लतीफ नाम है कीनौ।

उपराला करि सक्यौ न कोई।
संकित भयौ लतीफ गढ़ोई ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

त्यों हमीर आयौ तहां तुरत धंधेरौ धीर।
डांड चुकायौ लाख भर मरत बचाये मीर ॥ ५ ॥

॥ छंद ॥

हामी धरै चमू उचकाई।
बचे मीर घर बजी बधाई।
घेरि डांड चंडोत चुकायौ।
फिर खंडोत मुकाम बजायौ ॥ ६ ॥
चौकी पठै कालपी दीनी।
चौथ मौदहा लौ की लीनी।
खेर महेरा की सब मारी।
दल की दौर बिहोनी बारी ॥ ७ ॥
वारपार के जुरे मवासी।
नदी बेतवै तट के बासी।
सब गांउ बीसक के धाये।
समर ठानि उपहर कौ आये ॥ ८ ॥
अपनी भोर जान अधिकारी।
दल पै दियौ दरेरौ भारी।

सब निसि ओड़ दरेरौ दीनौ।
भोरहि उठत जुद्ध जुरि कीनौ ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

जुरे जुद्ध कर तेग लै पंचम के असवार।
गंजि गोल गरबीन के करें अरिन पर वार ॥ १० ॥

॥ छंद ॥

तेगनि वार करन भट लागे।
छांडि समाधि त्रिलोचन भागे।
वही तेग पंचम की ऐसे।
बाढ़ै लपट खात खर जैसे ॥ ११ ॥
ऐसें कछू ठाट बिधि ठाटे।
चारि हजार खेत अरि काटे।
खाद मास मसहार अघाने।
जोजन दसक गीध मडराने ॥ १२ ॥
पाई फतै मुलकरा लूथौ।
कुलि मवास कौ फाटिक टूथौ।
भये मवासी सबै अधीनै।
तब जलालपुर डेरा कीनै ॥ १३ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते हमीदखान सेद लतीफ बीस मवासी पराजयोनामऊनविंशोध्याय: ॥ १९ ॥

॥ छंद ॥

त्यौंही पातसाह फरमायौ।
अबदुलसमद साजि दल धायौ।
सजे समद के संग सिपाही।
साहिन जिनकी तेग सराही॥ १॥

॥ दोहा ॥

सैयद सेख पठान सब सजे समद के संग।
मार बजत ते समर में बढ़ि बढ़ि चढ़त उमंग॥ २॥

॥ छंद ॥

सजि दल अबदुलसमद उमंड्यौ।
धूरधार नभमंडल मंड्यौ।
बजे गाजधुनि निडर नगारे।
गजे मेघ ज्यौं गज मतवारे॥ ३॥
पखरै तुरी तरल तन ताजे।
बखतरपोस सुभट छबि छाजे।
बान जजाल रहकला तोपै।
सुतरनाल हथनालनि ओपै॥ ४॥
उमडत फौज सहस दस आई।
भई छतारे की मनभाई।
बखतर बांटि सिपाही साजे।
निकट समद के दुंदुभि बाजे॥ ५॥

त्यों छत्रसाल समद के सोंहै।
भयौ खेत चढ़ि भाइ मिरोंहै।
दहिनी दिसि बलदाऊ ठाढ़े।
जिहि थल भरक भिराऊ गाढ़े ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

राजत दौवा राइमनि बांईं तरफ अडोल।
उमगत अगहर जूझ कौं ताकत प्रतिभट गोल ॥ ७ ॥

॥ छंद ॥

आवत कटक समद कौ देख्यौ।
सूरन जनम सुफल करि लेख्यौ।
दुऊं दल बंदिन बिरद सुनाये।
दुऊं दल कलह कंधि भट आये ॥ ८ ॥
दुहूं दलनि धौंसा घहराने।
दुहूं दलनि बानै फहराने।
दुऊं दल छार छटा छहराने।
दुऊं दल चंड लोह लहराने ॥ ९ ॥
दुऊं दल बीर झुंड झहराने।
दुऊं दल सिंहनाद कर्राने।
दुऊं दल ठौह तुरंगनि दीनी।
दुऊं दल बुद्धि जुद्धरस भीनी ॥ १० ॥

दुहूं दलनि दोऊ दल ताके।
दुहूं दलनि माने रन साके।
दुऊं दल पिले हरौल अगाऊ।
दुऊं दल बाजे तबल जुझाऊ ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

उठे ढीठ ढाढ़ीन के दुऊं दिस झनक रबाब।
झलझलाइ बुंदा उठे सूबनि के मुख आब ॥ १२ ॥

॥ छंद ॥

छुटे बान कुऊ कुऊ कुऊ बोला।
नभ गननाइ उठ गुरु गोला।
तरभर निबिड़ बंदूखनि माची।
धूम धुंधु नभमंडल नाची ॥ १३ ॥
दसहूं दिसनि गई परकारी।
देख्यौ समै भयानक भारी।
गोला गिरन गाज से लागे।
बिडर काल के किंकर भागे ॥ १४ ॥
त्यौं छत्रसाल बीररस छाक्यौ।
सनमुख सैन समद कौ ताक्यौ।
लई राइमनि दौवा बागै।
पैठ्यौ उमडि सबनि तै आगै ॥ १५ ॥

कौतुक लखत अमर अनुरागे।
जूझन सुभट परस्पर लागे।
बिरच्यौ बिकट राइमनि दौवा।
घाइ खाइ अरि हनै अगौवा ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

दौवा की चौकी लरी करी पखर बिरझाइ।
कौन गनै बैरी घनै दोनै खेत खपाइ ॥ १७ ॥

॥ छंद ॥

तुरकन तमकि पखर त्यौं कीनी।
इतहि बुंदेलनि बागै लीनी।
हिंमत कौं जसवंत कहावै।
जूझत खग्ग बहबहे पावै ॥ १८ ॥
भावतराइ पमार रिसानौ।
भाइ मरद जूझौ मरदानौ।
पाइक सबदलराइ हंकारौ।
मारु पैरि रविमंडल फारौ ॥ १९ ॥
लागर भोज पखर करि धायौ।
स्वामि हेत तन खेत खपायौ।
त्यौं दलसाह मिस्र पन पाल्यौ।
रन सनमुख तन तजत न हाल्यौ ॥ २० ॥

किसुनदास जूझौ मन आछै ।
उदैकरन पग धरो न पाछै ।
काम भलेभाई तंह आये ।
सूरजरथ के तुरी कहाये ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

लरे सुभट भट उमडिकै अरे बुंदेला बीर ।
परे परस्पर खेत कटि टरे न टारे धीर ॥ २२ ॥

॥ छंद ॥

त्योंही समद हला उठि बोल्यौ ।
कवचधरन खग्गन खिझ खोल्यौ ।
लर्यौ अजीतराइ असि घाई ।
मुंह मुंह दै मुंहई मुंह खाई ॥ २३ ॥
मेघराज हरजू गलगाजे ।
घाइ ओड़ मारे अरि ताजे ।
घाइ दयाल गौतमहि आये ।
बले बैस घाइल ठिकठाये ॥ २४ ॥
भूपतिराइ बैस थल गाढ़े ।
घाइ खाइ बिरच्यौ बल बाढ़े ।
रननायक घनस्याम लड़ोड़ौ ।
सनमुख घाउ बच्छ पर ओड़ौ ॥ २५ ॥

त्यौंहि दौरि रावत रिस कीनी।
घाइल ह्वै घाइक सिर दीनी।
ईसफखान भिरयौ रिस भीनौ।
रीझि तुरंग घाउ तन लीनौ॥ २६॥

॥ दोहा॥

परत भार घाइल लरत कर सै सुभट समाज।
ओड़ि अस्त्र सनमुख पिले राखि हियै रनलाज॥ २७॥

॥ छंद॥

त्यौं पंचम के भाट अन्यारे।
जगतराइ अरु नवल हंकारे।
प्रेमसाह छत्तीसुर चांडौ।
सनमुख पैठि खेत जिन मांडौ॥ २८॥
राना रामदास धसि धायौ।
बलगि उझाल सेल्ह अजमायौ।
त्यौं पवार सुंदरमनि हांके।
मल्ल सुजान पिले रनबांके॥ २९॥
सभासिंह त्यौं तुरग झमंक्यौ।
बली अलीखां उमडत मंक्यौ।
हंक्यौ हरजूमल्ल गहोई।
उदैकरन रन भयौ अगोई॥ ३०॥

धुरमंगद बगसी बिरझानौ।
नाहरखां नाहर झहरानौ।
फतेखान त्यौं रनरस छाक्यौ।
सो मार्‍यौ जो सनमुख ताक्यौ ॥ २१ ॥
ऐ सब सुभट बाघ से छूटे।
उत तै तमकि तुरक रन जूटे।

॥ दोहा ॥

लरैं उमड़ि दुऊं ओर भट झरैं सार सौं सार।
बजैं उमड़ि हरगन नचे गजे गोल सिरदार ॥ २२ ॥

॥ छंद ॥

कढ़ि सिरदार गोल तै गाजे।
आनन मनौ मजीठन माजे।
अंगदराइ रतन बल बाढ़े।
सनमुख पिले धोप कर काढ़े ॥ २३ ॥
उमड़ि नरायनदास हंकार्‍यौ।
देवकरन करवर झुक झार्‍यौ।
अमरसाह कर कढ़ी कृपानी।
पृथीराज बलग्यौ बर बानी ॥ २४ ॥
राइ अमान तेग कर लीनी।
उमड़त ओप कटेरहि दीनी।

भारतसाह हांक दै धायौ।
त्यौंही आसकरन छवि छायौ ॥ ३५ ॥
रूपसाह रनरंग रिसानौ।
परबतसाह पिछौ मरदानौ।
सबलसाह बरछौ फिर फेरयौ।
केसौराइ रोस करि हेर्यौ ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥

और बहुत उमडे सुभट कहौं कहांलगि नांउ ॥
उतै समद के सूरमा भिरे रोप रन पांउ ॥ ३७ ॥

॥ छंद ॥

उठिली भीर समद की भारी।
कबचनि घटनि भीर भयकारी।
लखि छत्रसाल उमगि मन बाढ़े।
बीरन ओप दई रन गाढ़े॥ ३८ ॥
रनरस फूल भीम छबि लूटी।
करकर करी कबच की टूटी।
उठे फरक भुजमूल ठिकानै।
मूछन सहित पखा तररानै॥ ३९ ॥
उयौ करखि हिय हरषि बुंदेला।
बाढ़े रन बहसनि बगमेला।

दुहूं दल बिरचे बीर उमाहे।
समर हरौल भयौ सब चाहे॥ ४०॥
दैदै हांक परस्पर जूटे।
मनहु सिंह सिंहन पै छूटे।
मार मार दुहूं दिश दल माही।
दूजौ और सबद कोउ नाही॥ ४१॥

॥ दोहा॥

इतहि बुंदेला बीर उत सैयद सेख पठान।
दुहूं दल बिरचे परस्पर रचे घोर घमसान॥ ४२॥

॥ छंद॥

तुपक तीर की मिटी लराई।
मची सेल्ह समसेरन घाई।
बीर बहबहे अस्त्र निबाहे।
कौतुक देखत देव सराहे॥ ४३॥
जो खग्गन खेलत उत काढ़ी।
बेलैं जनु बिजुरन की बाढ़ी।
टोपन टूटि उठै असि सच्छी।
दह में मनौ उछलै मच्छी॥ ४४॥
दुहूं दिश बीर जुद्धरस माते।
कटत परस्पर होत न हाते।

असवारन्हि असवार अरुझै।
पैदर झुकि पैदर सन जूझै ॥ ४५ ॥
पखरैतन पखरैत हंकारै।
कवचधरन कवचधर मारै।
यौं घमसान परस्पर माच्यौ।
डमरु बजाइ रीझि हर नाच्यौ ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

नाच्यौ समर बजाइ हर मच्यौ घोर घमसान।
छके बीर रनरंग में थके रोपि रथ भान ॥ ४७ ॥

॥ छंद ॥

भानु लखत कौतुक रथ रोपै।
लरत बीर आनन दुति ओपै।
देवकरन केसरिया बागे।
उमग्यौ भिरत जुद्धरस पागे ॥ ४८ ॥
सो सिरदार पठान न जान्यौ।
सबनि उमडि जीतन उर आन्यौ।
यह छत्रसाल आइ रे भाई।
यौं कहि घालि उठे घन घाई ॥ ४९ ॥
अंगद कौ अंगद के पाइन।
भिस्यौ ओड़ि अरि के घन घाइन।

जौलगि ऐकहि हनै अगाऊ।
तौलगि चारिक भिरै भिराऊ ॥ ५० ॥
चारिक मारि खेत पर डारै।
तौलगि दस के रुंड हंकारै।
खाइ घाइ दस दसक गिरावै।
तौलगि वृंद बीस कौ धावै ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

देवकरन पर यों पस्यो असिमंडल घन घेर।
बिज्जुलि वृंद सुमेर के मनौ लस्यो चऊंफेर ॥ ५२ ॥

॥ छंद ॥

घनै घाइ सिरह्यो सिर लागे।
तीनक घाइ तुरग तन जागे।
पाइन अचल हाथ चल कीनै।
हांकतु भिरतु जुद्धरस भीनै ॥ ५३ ॥
सुभट भतीजे ऊपर भारी।
परी भीर छत्रसाल निहारी।
अरुन रंग आनन छवि छाई।
अरिसिर घालि उठ्यौ घन घाई ॥ ५४ ॥
काटि कवचधर पुंज उठाये।
मीचु बदन ते देव बचाये।

अरिन अजीतराइ त्यौं घेरे।
तिहिं थल छत्रसाल तब हेरे॥ ५५॥
ते दरबर ही दौर उबारे।
जम से जमन जौम जुत मारे।
परी भीर जिहिं ओर निहारै।
तिहिं दिस तुरकन के दल फारै॥ ५६॥

॥ दोहा॥

या बिधि श्री छत्रसाल के पौरुष कौं पहिचानि।
परे उमड रन हांक दै तुरक तोम त्यौं आनि॥ ५७॥

॥ छंद॥

बखतरपोस तीन बल बाढ़े।
तिहूं ओर तरवारैं काढ़े।
दहिनी दिस पीछे अरु आगे।
उठे घाल घाई रिस पागे॥ ५८॥
उच्यौ हंकि हय झमकि छतारौ।
कीनौ तहां अचंभौ भारौ।
चोट चुकाइ तिऊन की दीनी।
आपु उमडि मनभाई कीनी॥ ५९॥
पछिलौ हांकि हूल सौं माख्यौ।
काटि दाहिनै कौं कर डाख्यौ।

सोंहे सौं सोंहो असि झारी।
तीन सुभट रन दई हंकारी ॥ ६० ॥
बिरच्यो रन छत्रसाल बुंदेला।
किधौ खभरि खग्गनि खिझ खेला।
टूक ऊमक अरु दसक संहारै।
लैहि सांस जब बीसक मारै ॥ ६१ ॥
॥ दोहा ॥
छत्रसाल जिंहि दिस पिलै काढ़ि धोप कर माहि
तिंहि दिस सीस गिरीस पै बनत बटोरत नाहि ॥ ६२ ॥
॥ छंद ॥
छत्रसाल जिंहि दिस धसि धावै।
तिंहि दिस बखतरपोस ढहावै।
कटि अरिमुंड उछालत कैसे।
बटनि खेल खेलतु नट जैसे ॥ ६३ ॥
रुधिर भभकि रुंडन ज्यों मंडी।
मानऊ जरत टुंड बनखंडी।
घूमन लगे समर में घैहा।
मानऊ उभात भाउ भर भैहा ॥ ६४ ॥
कौन कौन की मार गनाऊं।
असी अखार संग तिंहि ठाऊं।

दलमल फौज समद की डारी।
रचनहार कौ मुसकिल पारी ॥ ६५ ॥
बल दिवान त्यौं हल्ला बोले।
बिरचि खेल खग्गन के खोले।
सनमुख सुभट समद के कूटे।
तौपै और रहकला लूटे ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

लुटत रहकला ऊंट हय रखत कनातनि खोट।
रबि अपनौ रथ लै दुरौ अस्ताचल की ओट ॥ ६७ ॥

॥ छंद ॥

रबि अस्ताचल ओट सिधाये।
कछुक तिमिर अंकुर छिति छाये।
डेरन कौ करनाते दीनी।
लोथै मांगि समद सब लीनी ॥ ६८ ॥
दियौ दाग इन उन खनि गाड़ी।
रन झारत फिर रार न माड़ी।
दाग देत घटिका इक बीती।
गोरै खनत राति सब रीती ॥ ६९ ॥
चौथ चुकाइ कूच निरधारे।
समद कलिंदी पास सिधारे।

छत्रसाल परना कौ आये।
जग में जीति निसान बजाये॥ ७० ॥
रहे आपु परना में तौलौं।
सुरहे घाइ सबनि के जौलौं।
सुनी समद की सबनि लराई।
सबनि दिल में दहसत खाई॥ ७१ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे अबदुलसमद पराजयोनामविंशोध्यायः॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

टौला लरि गजसिंह धरि छांडौ डांड चुकाइ।
लूटि भैलसा कौ मुलक दीनी आग लगाइ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

आग लगाइ देस में दीनी।
सुनि बहलोलखान रिस कीनी।
त्यौं दल सजि इलगारन धायौ।
मरद मयानौ जौजग आयौ॥ २ ॥
नौ हजार बखतरिया ताजे।
देत पाइरै पाइग राजे।
धामौनी तै चढ्यौ मयानौ।
बांधे सीस जूझ कौ बानौ॥ ३ ॥

जगतसिंह बानैत बुंदेला।
आड़े भयौ ओड़ि बगमेला।
संग तीन सै तुपक सकेलै।
नौ हजार सौ लख्यौ अकेलै॥ ४॥
अख्यौ उमडि मडियादुऊ मेडै।
तुरक दरेरि चल्यौ तिंहि पैडै।
फौज कोस चारक पर आई।
बन बाघन तंह मार मचाई॥ ५॥

॥ दोहा ॥

मडियादुऊ तैं उमडिकै कोस चारि पै धाइ।
डेरा परत दमानिकिन मारे तुरक बजाइ॥ ६॥

॥ छंद ॥

गिरे तुरक चालिस बल बाढ़े।
नौक नौक लसगर तै काढ़े।
त्यौं बहलोलखान रिस कीनी।
तुरतहि बंब कूच की दीनी॥ ७॥
ठिल्यौ उमडि मडियादुह सोहै।
जगतसिंह तंह अख्यौ भिरोहै।
चढ़ि मडियादुह सौं दल लागै।
उमडि पठान भिरे रिस पागै॥ ८॥

बान बांधि उलह्यौ गलदारै।
नौकि नौकि लसगर तै मारै।
ज्यौं ज्यौं तमकि तुरक रन जूटै।
त्यौं त्यौं गोलिन सौ रन फूटै॥ ९ ॥
खाइ खाइ गोलिन की चोटै।
रनमंडल लोटन सें लोटै।
जो दिन में हनि दुवन करेरे।
रात कटक पर दिये दरेरे॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

सात द्यौस इहि बिधि लरे बान बांध बलवंत।
रातिऊ दिनऊ ठठाइकै करै ठोंठरे दंत॥ ११ ॥

॥ छंद ॥

दंत ठठाइ ठोंठरे कीनै।
रहे पठान सकल भै भीनै।
जगतसिंह के बजे नगारे।
कढ़े दरेर बैरि मद गारे॥ १२ ॥
पंचम जगतसिंह को माखौ।
सूबा संक हहर हिय हाखौ।
छत्रसाल कौ सुभट भतीजौ।
मानऊ नैन रुद्र कौ तीजौ॥ १३ ॥

जहां हरौल हनू कै ऐसे।
तहां रामदल कैहै कैसे।
कियौ मुकाम सोच उर बाढ़े।
रन में बिकट बुंदेला गाढ़े ॥ १४ ॥
करत बिचार कछु न बनि आवै।
पातसाह कैसे सुख पावै।
तब उर में साहस धरि धायौ।
सूबा उमडि राजगढ़ आयौ ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

छत्रसाल बैठ्यौ जहां उमगतु अरिदल हेरि।
उमड दलन सूबा तहां लयौ राजगढ़ घेरि ॥ १६ ॥

॥ छंद ॥

सूबा उमडि राजगढ़ लाग्यौ।
छत्रसाल जंह रनरस जाग्यौ।
पिले तुरकदल उमडत आवै।
गढ़ की सीवन दाव न पावै ॥ १७ ॥
ओड़ि ओड़ि अरि के बगमेला।
गढ़ तै कढ़ि कढ़ि लरै बुंदेला।
खान खपाइ खेत में डारे।
मास खाइ मसहार डकारे ॥ १८ ॥

हाथी चल्यौ हरौल बिदार्‌यौ।
ताहि ताकि बनबीरन मार्‌यौ।
गिर्‌यौ हरौल हिंदुगन गाज्यौ।
हाथी फेरि महावत भाज्यौ ॥ १९ ॥
सूबा लखो अमारी सूनी।
त्यौं बाढ़ी दिल दहसत दूनी।
तीन द्यौस लौं लर्‌यौ मयानौ।
चौथै दिन उठि कियौ पयानौ ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

खेत छांडि सूबा चल्यौ दिल में दहसत खाइ।
छत्रसाल के धाक तै मर्‌यौ धमौनी जाइ ॥ २१ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे बहलोलखान मयानौमरणंनामैकविंशोध्यायः ॥ २१ ॥

॥ छंद ॥

छत्रसाल त्यौं करी तयारी।
कुटरौ मारि जसोपुर जारी।
सील सुहावल कौं तंह कीनौ।
सासन मानि सीस पर लीनौ ॥ १ ॥

घटरा घेरि बनाफर मारे।
मरद महोवे डेरा पारे।
मौधा लूट कर मनभाये।
उमडि कटक सिंऊड़ा पर धाये॥ २॥
तहां मुरादखान मरदानौ।
उतै दलेलखान का थानौ।
बैठ्यौ ऐंठ चौथ बिन दीनै।
जौम दलेलखान की लीनै॥ ३॥
तंह दल छत्रसाल के लागे।
लरे पठान जुद्धरस पागे।
कढ़े कोट तै करि खरु हेला।
ओड़ि बुंदेलन के बगमेला॥ ४॥

॥ दोहा ॥

समसेरन सेल्हन तहां मच्यौ घोर घमसान।
घटे न मन जिन के लरत कटे हजार पठान॥ ५॥

॥ छंद ॥

खेत मुरादखान तंह आयौ।
लूट्यौ कटक जहांभर पायो।
लूट्यौ बैरीसाल दतारौ।
झूमत झुकत सदा मतवारौ॥ ६॥

लूटे अतुल निसान नगारे।
तंबू लुटे कनातनि बारे।
लये लूट चौदह सै घोरे।
फिरत कटक में डोरे डोरे॥ ७॥
लुटे खजानै तोसहखानै।
लुट्यौ सहर केतिक को जानै।
जौ दलेल सूबा गजजायौ।
अति बलवंत साह मनभायौ॥ ८॥
खाद सेर बीसक की रानै।
धकाधकी हाथिन सो ठानै।
जाके धाक चहूं दिस धावै।
रन में ताहि कौन बिरमावै॥ ९॥

॥ दोहा ॥

छत्रसाल ताकौ सहर लसगर लीनौ लूट।
कुल दिल्लीदल बहल कौं गयौ धुरा सो टूट॥ १०॥

॥ छंद ॥

वाकनि खबर लिखी ठिकठाई।
सो हजूर हजरत के आई।
चंपति के छत्रसाल बुंदेला।
लियौ लूटि सिझ्ड़ा बगमेला॥ ११॥

मरद मुरादखान रन माह्यौ।
गरब दलेलखान कौ गाह्यौ।
यह सुनि साह कछु न रिस आनी।
छत्रसाल की जीत सुहानी ॥ १२ ॥
कबज़ दलेल जौम जिय जागै।
बोलेऊ ते साह के आगै।
ताकौ अनखु उतै उर छायौ।
सो कहिवे कौ ऊतर पायौ ॥ १३ ॥
त्यौं दलेल मुजरा कौं आयौ।
पातसाह यह किसा सुनायौ।
भुजा भतीजे की बल बाढ़ी।
खेल्यौ खेल चचा की डाढ़ी ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

यह सुनि श्रवन दलेलखां रह्यौ अचंभौ भोइ।
यह धौ साह कह्यौ कहा अर्थ अनूपम गोइ ॥ १५ ॥

॥ छंद ॥

मुजरा करि डेरन कौं आये।
पऊंचे लिखे देस तें पाये।
लिखी खबर जैसी इत बीती।
परी मुलक पर धार अचीती ॥ १६ ॥

मांग चौथ छत्रसाल पठाई।
सो बिन दिये फौज चढ़ि धाई।
लरे पठान उमडि रिस बाढ़े।
दंतनि चाबि लोह कौं काढ़े॥१७॥
त्यौं पिलि सेल्ह बुंदेलनि बाहे।
सहस पठान खेत में ढाहे।
कर्यौ मुरादखान मन आछै।
रन सनमुख पग धरे न पाछै॥१८॥
फर में फतै बुंदेलनि पाई।
लूट मताह करी मनभाई।
खबर दलेलखान यह बाची।
रिस बढ़ि कुटिल भृकुटि चढ़ि नाची॥१९॥

॥ दोहा ॥

नाची रिस भृकुटीन चढ़ि जान्यौ जीवन बाद।
बिदा चाहि चित साह सौ तुरतहि करी फिराद॥२०॥

॥ छंद ॥

तहां साह यह ऊतर दीनौ।
पावै क्यौं न आपनौ कीनौ।
लौन खाइ जो लौन जनावै।
क्यौं न सजाइ हालही पावै॥२१॥

खिसी दलेलखान उर छाई।
याद अनूप अरथ की आई।
डेरा दिये बार अनखानै।
हाथ मीड मन मन पछितानै॥ २२॥
कछु दिन गये सुमति उर आई।
होनहार सें कहा बसाई।
तब दछिन तै लिखे लिखाये।
छत्रसाल के पास पठाये॥ २३॥
यह कछु लिखो लिखन में आई।
चंपति हते हमारे भाई।
तुम उत करी कथा यह जैसी।
तुमै बूझियत हती न ऐसी॥ २४॥

॥ दोहा॥

लिखे बांचि छत्रसाल तब कियौ सलूक बिचारि।
ढरे सांच सो सांच कै बिग्रह दियै बिसारि॥२५॥

॥ छंद॥

चौथ बंधाइ देस में लीनी।
सामा सबै फेरि तब दीनी।
दियै फेरि नीसान नगारे।
दियै फेरि हाथी मतवारे॥२६॥

तोपैं दई फरि मनभाई।
जग में जाहिर करी बड़ाई।
धनि छत्रसाल सुजस जग गावै।
ऐसी विधि कासैां बनि आवै॥ २७॥
काटत पहिल काटई डारी।
फेरि पटोरैं पैांछि सुधारी।
सिंऊड़ा चुकी चैाथ मनमानी।
त्यैां मटैांध पर फौज पलानी॥ २८॥
भुमियां जुरे तहां ठिकठाये।
अरु पठान मैांधा के आये।
हिंदू तुरक जुरे तंह ऐसे।
भरत तीर तरकस में जैसे॥ २९॥

॥ दोहा ॥

उदभट भीर मटैांध में जुरी ठान रन ठान।
उमडि दलनि तासैां लग्यौ छत्रसाल बलवान॥ ३०॥

॥ छंद ॥

तीन तरफ ह्वै मटवध घेरौ।
कठिन कोट जंह चऊंदिस फेरौ।
मेघराज बाई दिसि लागे।
लीने संग सुभट अनुरागे॥ ३१॥

दहिनी दिसि उमडे बलदाऊ।
सनमुख छत्रसाल नृपसाऊ।
धस्यौ कोट गढ़ धारिन गाढ़े।
दुऊं दिस जुरे सुभट बल बाढ़े॥ ३२॥
छत्रसाल के सुभट अगौवा।
बागै लई राइमनि दौवा।
तब उन एक पलीतो दीनो।
जगत बिरास बिधाता कीनो॥ ३३॥
बजी बंदूखै तरभर माची।
समर उमंगि कालिका नाची।
दौवा तमकि तेग कर लोली।
त्यौंही लगी अचानक गोली॥ ३४॥

॥ दोहा ॥

गोली ज्यौं उत.क्कै कढ़ी बाढ़ तुरीतन फोरि।
घोरौ लै फर में गिस्यौ भूमि रुधिर मं बोरि॥ ३५॥

॥ छंद ॥

घादल क्कै हरिबंस तहांही।
गिस्यौ उमडि रनमंडल माही।
ज्यौं अरि हरषि ह्रह करि धाये।
सिर काटन कौं बलगत आये॥ ३६॥

त्यौं अनखाइ हिये रिस कीनी।
काढ़ि कृपान पानि में लीनी।
काटि दुवन सिर संभु नचाये।
घाइल द्वै सुमार बचाये ॥ ३७ ॥
त्यौं उत ढोल जुझाऊ बाजे।
कठिन कोट धरि गढ़धर गाजे।
छत्रसाल त्यौं भाइ भिरौहै।
झमकि नैन सोभा भयौ सौहै ॥ ३८ ॥
अरुन रंग आनन छबि लौनै।
माथै घूघ लोह की दौनै।
घूघहि नाक लोह की लागी।
छाती छटा छूट छबि जागी ॥ ३९ ॥

॥ छंद ॥

तरल तुरंगम की तनक तुरत बग्ग झमकाइ।
परदल में हांक्यौ छता खाई कोटन काइ ॥ ४० ॥

॥ छंद ॥

खाई कोट अचानक नाक्यौ।
परदल पैठि छतारौ हाक्यौ।
काढ़ि कृपान म्यान ते लीनी।
जुरे जुद्ध तिनके सिर दीनी ॥ ४१ ॥

काटन लग्यौ दुवनदल ऐसे।
भिद्यो भीम परदल में जैसे।
परबतसिंह संग तंह दीनै।
घन घमसान कृपानन कीनै ॥ ४२ ॥
उत कमनैत अचूक सिपाही।
झलक घूघ की चित दै चाही।
तिहि सर लोह नाक तकि मारो।
गाढ़ौ गढ़ौ टरौ नहि टारौ ॥ ४३ ॥
सो छबि देखि संभु सुख मान्यौ।
दजौ एकदंत करि जान्यौ।
यौं छत्रसाल लरे असिघाई।
लोथै गनै सात से आई ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥

त्यौं अरिदल दहसत बढ़ी मिले मवासी आइ।
डांड लियौ तंह तुरत ही सोरह सहस भराइ ॥ ४५ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते मौधामटौंधविजयो नाम द्वाविंशोध्यायः ॥ २२ ॥

॥ छंद ॥

मारि मटौंध डांड लै छांड्यौ ।
फेरि धमौनी बिग्रह मांड्यौ ।
मारि घुरौरा युरहट घेरी ।
चहूंदिस आन आपनी फेरी ॥ १ ॥
कोटा मारि कचीरहि आये ।
खंडि खडौतु करे मनभाये ।
फिरि जलालपुर दलमल माख्यौ ।
दौरि दलनि बिलगावो बाख्यौ ॥ २ ॥
उमडि बक्कौली डेरा पारे ।
साहकुली त्यौं निकट हंकारे ।
साहकुली की सुनी अवाई ।
त्यौं अफगन पड़वारी पाई ॥ ३ ॥
संग अस्वार चार से लीनै ।
पड़वारी आये भय भीनै ।
दुंदु बुंदेलनि कौं अति भारी ।
चिंता मनें बड़ी अखत्यारी ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

मीचु अगल सु भोर लै आये अफगनखान ।
सुनि बनबीरन के हिये बाढ्यौ अधिक गुमान ॥ ५ ॥

॥ छंद ॥

बढ़े गरब लघु फौज निहारी।
होनहार गति टरै न टारी।
लूट लूट सूबा बल बाढ़े।
भये गरब गज पै चढ़ि ठाढ़े॥ ६ ॥
सबनि परस्पर यौं बल बांधे।
बिक्रम ब्यौंत न काहू कांधे।
अब यह फौज लूटही लीजै।
घोरिन घाउ न कोऊ कीजै॥ ७ ॥
अफगन हियै दीनता धारी।
जो दीनता दयालहि प्यारी।
मन क्रम बचन यहै चितचाहै।
अबकै प्रभु तू सरम निबाहै॥ ८ ॥
मरवौ अगै जुद्ध कौं आयौ।
मनौ कबंध सीस बिन धायौ।
ऊती न मीच मरै वह कैसै।
इतकै चलै अचानक जैसै॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

कह्यौ दवाह्यौ अरिदलन पर्‌यौ अचानक चाल।
मुरकि मरकि फिरि फिरि लर्‌यौ लै कमान छत्रसाल॥ १० ॥

॥ छंद ॥

चालु परै जे लरै अकेले।
भुजदंडन बल अरिदल पेले।
गाढ़ परै हिय हिंमत आनै।
तेई सूर प्रसिद्ध बखानै॥ ११॥
मुरक लख्यो छत्रसाल बुंदेला।
तुरकन के ओड़े बगमेला।
बखतरपोस उमंडत आये।
तिन पर तमकि बान बरसाये॥ १२॥
बखतरपोस पांच तकि मारे।
धर पै धर फरकै फर डारे।
तंह सिरदार सेरखां जूझो।
बैरिन ब्योंत चाल कौ सूझो॥ १३॥
छत्रसाल सो सुभट न होतो।
तो दल चलत बचावत को तो।
सबै गरबगिरि दबत उबारे।
डेरा आइ मऊ में पारे॥ १४॥

॥ दोहा ॥

कह्यो सबनि समुझाइयो जिन भजिवै पछिताउ।
भजे कृष्ण अवतार जे पूरन प्रगट प्रभाउ॥ १५॥

॥ छंद ॥

कालजमन जब निकट हंकार्‌यौ।
सो मुचुकुंद डीठ सौ जार्‌यौ।
द्रोनहि पीठ पंडवनि दीनी।
कौरव मारि जीत सब लीनी॥ १६॥
दई पीठ बलि बावन काजै।
ते बस करि राखे दरवाजै।
तातैं मनमानौ मत ऊनौ।
भिंमहि भूमि छुवत बल दूनौ॥ १७॥
या बिधि सबै सुभट समुझाये।
त्यौंही प्राननाथ प्रभु आये।
तिनके मतै फतै फरमाई।
सेना सावधान ह्वै आई॥ १८॥
दुडहर जाइ दौर दल मेल्यौ।
त्यौं अफगन उमग्यौ दल पेल्यौ।

॥ दोहा॥

भयौ जूझ मुरक्यौ तुरक घट्यौ न वाकौ जोर।
फेरि पुरा के घाट में आयौ उमडि अमीर॥ १९॥

॥ छंद ॥

अफगन अधिक गरब उर आन्यौ।
सब तै बली अपनपौ मान्यौ।
जोरि फौज नीसान बजाये।
उमहि पुरा के घाटहि आये॥ २०॥
छत्रसाल जंह अरे भिरोहै।
तहां तुरक पल्यौ दल सोहै।
गोलिन मची मार तंह भारी।
परी दिसान धूम अंधियारी॥ २१॥
त्यौं तुरकन बोले रन हल्ला।
जम के भये कटीले कल्ला।
लस्यौ नरायनदास अगौवा।
रन में रुप्यौ राइमनि दौवा॥ २२॥
खांडेराइ घाट तंह पायौ।
तुरकन कटक उमंड दबायौ।
जम से जमन जौमजुत जूटे।
सुभटन बिकट मोरचा छूटे॥ २३॥

॥ दोहा ॥

छुटे मोरचा तोपची आइ रुपे तिंहि ठौर।
छत्रसाल जिंहि यल अड़े छत्रिन के सिरमौर॥ २४॥

॥ छंद ॥

छत्रसाल छत्री छवि छायौ।
हांक्यौ उमडि सबनि बल पायौ।
पेलै पार घाट कौं बांधै।
मेघराज बिक्रम कै कांधै॥ २५॥
गलबल सुनत डरत उठि धायौ।
गोलिन घन घमसान मचायौ।
माधौसिंह कटेरावारौ।
सनमुख तुरक दरेरि हंकारौ॥ २६॥
पिले तुरक त्यौं रवरस भीनै।
तन कौ लोभ न तनकौ कीनै।
त्यौं छत्रसाल तान निज भौंहै।
लै बंदूख पैयौ दल सौंहै॥ २७॥
गोलिन तीन मीर तकि मारे।
गिरे डील पर डील डरारे।
चले पाइ तुरकन के त्यौंही।
छत्रसाल रन गाजौ ज्यौंही॥ २८॥

॥ दोहा ॥

मथ्यौ मध्य रन पैठिकै मच्यौ चहूं दिस चाल।
अफगन सैन समुद्र भौ मंदर भौ छत्रसाल॥ २९॥

॥ छंद ॥

सैदलतीफ तहां चलि आयौ।
मरत सैद अफगनहि बचायौ।
दई चौथ अरु डांड चुकायौ।
जीवदान अफगन तब पायौ ॥ ३० ॥
दाकनि लिखी खबर तब ऐसी।
सुनी साह बीती दूत जैसी।
अफगन की तागीरी आई।
साहकुली कीं पाग बंधाई ॥ ३१ ॥
आठ हजार सुभट संग लीनै।
साहकुली उमड्यौ रिस कीनै।
साहकुली के धौंसा बाजे।
मिले नंदमहराजा ताजे॥ ३२ ॥
भये हरौल फौज बल पायौ।
डंका देत मऊ पर आयौ।
दौरि गुरैयागिरि सौ लागै।
छत्रसाल जंह रनरस जागै॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

ओड़ि अस्त्र घाइन तहां पिले नंदमहराज।
लै निसान परवत चढ़े साहकुली के काज ॥ ३४ ॥

॥ छंद ॥

दूत दून दीनी एक पलीतो।
अरि पर प्रलैराति सी बीती।
गिरी गरजि गाजै सी गोली।
डगडग चमू अरिन की डोली॥ ३५॥
घाउ नंदमहराजहि जाग्यौ।
दहसत मानि तुरकदल भाग्यौ।
तजे नंदमहराज तहांही।
घाइल ह्वै करि गिरे जहांही॥ ३६॥
त्यौं छत्रसाल दया दिल धाये।
धरमद्वार दै प्रान बचाये।
साहकुली दहसत तंह मानी।
तब अपने उर में यह आनी॥ ३७॥
भजौ भजौ जैवी सब मारे।
तिंहि डर डेरन डेरा पारे।
डेरा परत झुली पर आई।
त्यौं छत्रसाल करी मनभाई॥ ३८॥

॥ दोहा ॥

साहकुली के कटक पर दियौ दरेरौ राति।
अकबकाइ उर ऐंड़ तजि मानौ डांड अराति॥ ३९॥

॥ छंद ॥

आठ हजार डांड जब मान्यौ।
छतसौ साहकुली मुख पान्यौ।
चौथ सिवाइ दई सुहमागी।
सूबनि के उर दहसत जागी ॥ ४० ॥
कौंच लौंचि कीनै मनभाये।
मऊ आइ नीसान बजाये।
त्यौंही प्राननाथ प्रभु आये।
दिल के कुल संदेह मिटाये ॥ ४१ ॥
उन ऐसौ कछु ज्ञान बखान्यौ।
सपनौ करि जातै जग जान्यौ।
परमधाम की लीला गाई।
प्रेम लछना भक्ति दृढ़ाई ॥ ४२ ॥
सब सौ कह्यौ जगौ रे भाई।
प्रगटि जागिनी लीला आई।
तुम हौ परमधाम के बासी।
नित्य अखंड अनंद बिलासी ॥ ४३ ॥

॥ दोहा ॥

देखन कौं मांग्यौ हुतौ तुम अचर कौ खेल।
सो देखत ही जुग गये उहां न पलकौ झेल ॥ ४४ ॥

॥ छंद ॥

अच्छर ब्रह्म अनादि बखान्यौ।
बालखेल खेलन मन मान्यौ।
नैनकोर जिहि ओर निहारै।
तंह ब्रह्मांड रचै संहारै॥ ४५॥
पूरनब्रह्म किसोर किसोरी।
सखिन सहित बिलसै वह जोरी।
पूरन प्रेम सबै सुख साजै।
आनंद मगन एक रस राजै॥ ४६॥
तंह मनिमय महलनि छबि छाई।
हीरमई सोहत अगनाई।
प्रफुलित फलित बेलि द्रुम कुंजै।
मधुर मनोहर मधुकर गुंजै॥ ४७॥
जल थल द्रुम पंछी अबिनासी।
स्वयं सिद्ध सब स्वयं प्रकासी।
जाही समै जौन रितु चाहै।
तबही ताके गुन अवगाहै॥ ४८॥

॥ दोहा ॥

सदा फरे फूले तहां तरु बंछित फल देत।
जुगलकिसोर सखीन संग बिहरत कुंज निकेत॥ ४९॥

॥ छंद ॥

विहरत तहां किसोर किसोरी।
तहां होत चित ही की चोरी।
कुटिल चलत तंह दोइ निहारै।
भ्रूविलासके दृग अनियारै ॥ ५० ॥
तंह कठोर उन्नत कुच होई।
और कठोर न उन्नत कोई।
नैनन मह कज्जल मलिनाई।
नूपुर मुखनि मुखरता पाई ॥ ५१ ॥
सकल कलनि धुनि कोकिल खोलै।
रतिरस तरुनि अनखि जंह बोलै।
चंचलता चलदल ही में है।
लहर संचलन जल ही में है ॥ ५२ ॥
द्रोह बिछोह दुखन की नाही।
कंठग्रहन केलि ही माही।
आनंद मगन परस्पर खेलैं।
विलसत लसत ग्रीव भुज मेलैं ॥ ५३ ॥

॥ दोहा ॥

भूषन अंगन देत छबि अंगन भूषन देत।
बसन सुगंध समानता तन सुगंध की लेत ॥ ५४ ॥

॥ छंद ॥

तिंहि थल विहरत जुगल विहारी।
सखिन समेत सदा सुखकारी।
सरस बिलास करै मनमानै।
पलकौ बिरह न कोऊ जानै ॥ ५५ ॥
तहां राज मन में यह आनी।
ऐसै जोगहि के रस सानी।
ए वियोगरस जानत नाही।
त्यौं होती सब के चितचाही ॥ ५६ ॥
इनकौ सब बिलास हम दीनै।
बिछुर मिलन के सुखहि न चीनै।
बिछुरे मिले प्रेमरस सानै।
तिनकौ आनंद कौन बखानै ॥ ५७ ॥
इच्छा यहै राज उर लीनी।
त्यौं इच्छा अचर कौ दीनी।
जो किसोर लीलारस सानी।
सो अचर देखन मन आनी ॥ ५८ ॥

॥ दोहा ॥

चाह बढ़ी सब के हिये लागे सखिन उमाह।
अचर कौ अदभुत हमै खेल दिखावो नाह ॥ ५९ ॥

॥ छंद ॥

खेल देखवे की रुचि जानी।
तब सखीन सो बोले बानी।
देखत खेल मगन अति ह्वैहो।
हमको बिसरि सबै तुम जैहो॥ ६० ॥
दुख अरु बिरह खेल में आही।
तंह देखत ह्यां की सुधि नाही।
तब सखियन पर वचन उचारे।
दुख बिछोह कैसे है प्यारे॥ ६१ ॥
हमहि कृपाइ आजु लों राखे।
तें हम देखन कें अभिलाषे।
भूलि होंहि तुमतें जो न्यारी।
तो सुधि लीजो नाथ हमारी॥ ६२ ॥
ज्योंही सखिन चाह यह कीनी।
निमिष नीद अचर त्यों लीनी।
तातें सुपन सिष्टि उपजाई।
तामें सुरति सखिन की आई॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

इहां और लीला भई सुपन सिष्टि कें पाइ।
रचना रचिवे कें चल्यौ अचर कै मनभाइ॥ ६४ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते प्राननाथमिचा नामत्रयोविंशोध्यायः ॥ २३ ॥

॥ छंद ॥

रचना रचिवे कौं मनु धायौ ।
महत्तत्व सो इहां कहायौ ।
काल शक्ति के चोभित कीनै ।
अहंकार उपज्यौ गुन लीनै ॥ १ ॥
अहंकार तंह त्रिविधि जनायौ ।
सात्विक राजस तामस गायौ ।
तामस अहंकार उपजाये ।
पांचौ भूत पांच गुन ल्याये ॥ २ ॥
शब्द स्पर्श रस रूप बनाये ।
गंध सहित गुन पांच गनाये ।
कान सबद सुनिवे कौं पाये ।
त्वचा परस के भेद बताये ॥ ३ ॥
रसना स्वाद रसन के लीनै ।
रूप देखिवे कौं दृग दीनै ।
गंध ग्रहन नासिका लीनै ।
पांच पांच के भये अधीनै ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

पांच ज्ञानइंद्रिय भये पांच स्वाद के हेत।
पांच भूत कौ जगत रचि चेतन कियौ निकेत ॥ ५ ॥

॥ छंद ॥

चेतन तहां आपु ही आये।
सोरह कला रूप छबि छाये।
जल अगाध चारिऊ दिस जोयौ।
सेज बिछाइ शेष की सोयौ ॥ ६॥
यह नारायन रूप कहायौ।
ताकी नाभि कमल उपजायौ।
उपजे तहां चारमुखवारे।
ब्रह्मा सृष्टि बनावनहारे ॥ ७ ॥
ब्रह्मा अपने मन तै कीने।
छहौ पुत्र तप के रस भीने।
प्रथम मरीचि अत्रि पुनि जानौ।
और अंगिरा उर में आनौ ॥ ८ ॥
फिरि पुलस्त्य अरु पलह बखाने।
जे छठए ते क्रतु पहिचाने।
इनतें उपजी सृष्टि तहांलौं।
थावर जंगम जीव जहांलौं ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

लोक देस रचना रची कही कोन सो जाइ।
तिन में ब्रजमंडल रच्यौ रुचि सो अति सुख पाइ ॥ १० ॥

॥ छंद ॥

तंह बसुदेव नंद तपु कीनो।
तिन्है आइ दरसन प्रभु दीनो।
माग्यौ बर यह दुऊन अकेलो।
सुत ह्वै नाथ हमारे खेलो ॥ ११ ॥
दयौ दुऊन कौं बर मनभायो।
लै अवतार आप इत आयो।
तौलगि आठ बीस जुग बीते।
ज्यां पलके सह सांस न रीते ॥ १२ ॥
बढ़े कालजमनादिक भारे।
जरासंध से भूप अन्यारे।
तिनके दलनि भुंमि भय भारी।
पीड़ित ह्वै बिधि पास पुकारी ॥ १३ ॥
धेनु रूप धरि रोवत आई।
ब्रह्मा पीर भुंमि की पाई।
महादेव अरु देवनि लेकै।
चीरसमुद पर बोले जैकै ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

तंह अकासबानी सुनी लख्यौ न कछु आकार।
ह्वौं आवत ब्रज नंद के हरन भूमि कौ भार ॥ १५ ॥

॥ छंद ॥

अपने अंस देव लै जाही।
बिलसै गोप जादवनि माही।
अरु अपने अंसन सुरनारी।
होंहि जादवन की अति प्यारी ॥ १६ ॥
यह सुनि ब्रह्मादिक सुख छाये।
अपने अपने लोकनि आये।
इत अवतार देवकी लीनो।
भोजवंस कौं भूषित कीनो ॥ १७ ॥
तिन्हैं ब्याहवे कौं मन भाये।
सजि बरात बसुदेव सिधाये।
भयौ ब्याह दुहूं दिसि रस लीनै।
गज रथ तुरग दाइजै दीनै ॥ १८ ॥
बिदा भये बसुदेव प्रबीनै।
पठवन चले कंस रस भीनै।
त्यौंही उठी गगन में बानी।
सुनि रे मूढ़ महा अज्ञानी ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

जाहि पठावन जात तू कीनौ हिये हुलास ।
ताकौ सुत जो आठयों तातें तेरौ नास ॥ २० ॥

॥ छंद ॥

यह सुनि कंस मलिन मन कीनौ ।
रस तें बिरस भयौ भयभीनौ ।
रिस तें भई अरुन दृगकोरें ।
बिष जनु पियौ अमृत के भोरें ॥ २१ ॥
कढ़ी कृपान रोसरस छायौ ।
भगिनी के मारन कौं धायौ ।
ताकौ देखि अनी सब छोभी ।
गनत न दोष राजरस लोभी ॥ २२ ॥
तंह बसुदेव बिनयरस खोले ।
महामधुर मृदु बानी बोले ।
भोजबंस भूषन तुम ऐसे ।
तुम लाइक नहि कर्म अनैसे ॥ २३ ॥
जौ याके सुत तें भय जानहु ।
तौ यह बात हमारी मानहु ।
अब याके जितनै सुत ह्वैहै ।
ते सिगरे तुम ही कौं दैहै ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

फिरी क्रूरमति कंस की अचिरज करौ न कोइ।
कहा देहधारी करै करता करै सो होइ॥ २५ ॥

॥ छंद ॥

होत सबै करता की कीनी।
नृप की बिषम बुद्धि हर लीनी।
तबहि कंस यह बुद्धि बिचारी।
ए बसुदेव भये हितकारी॥ २६ ॥
थापे पुत्र मीच ढिग ल्यावै।
पै प्रतीत यह कैसै आवै।
तातै इनै बंदि में दीजै।
अपनै राजकाज सब कीजै॥ २७ ॥
तब बसुदेव बोलि ढिग लीनै।
जकरि जजीरनि में धरि दीनै।
त्यौंही तहां देवकी राखी।
गन्यौ न दोष राज अभिलाषी॥ २८ ॥
बालक छहक देवकी जाये।
खग्ग खोलि ते सबै खपाये।
त्यौंही गर्भ सातयें आये।
शेष अंश बलभद्र कहाये॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

गिस्यौ गर्भ वह सुनत ही फिस्यौ चकित ह्वै कंस।
धस्यौ रोहिनी के उदर जोगनींद सी अंस ॥ ३० ॥

॥ छंद ॥

उदर रोहिनी के जो राख्यौ।
संकर्षन बल होतहि भाख्यौ।
गरभ आठयें आयौ नामी।
सो बैकुंठ धाम कौ स्वामी ॥ ३१ ॥
सोभा धरी देवकी ओरै।
कछु न उपाइ कंस कौ दौरै।
मेरौ प्रान लैन यह आयौ।
जो अकासबानी मुख गायौ ॥ ३२ ॥
त्यौं अपने भट निकट बुलाये।
तिन्हैं कंस ए बचन सुनाये।
द्वारनि देऊ किवारनि तारे।
जे गज ह्व सौं टरै न टारे ॥ ३३ ॥
खबर देवकी की सब लीजै।
बालक होइ हमैं सो दीजै।
चौकिन सावधान ह्वै जागौ।
लोभ मोह के रस मति पागौ ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

यौं कहिकै अपने महल कंस गयौ सुख पाइ।
सावधान ह्वैकै सुभट चौकिन बैठे जाइ॥ ३५॥

॥ छंद ॥

चौकिन बैठे सुभट घनेरे।
लै बसुदेव कोठरिन घेरे।
आये विष्णु गर्भ में जानै।
ब्रह्मादिक सब गाइ सिहानै॥ ३६॥
भादौं बदि आठै जब आई।
बुध रोहिनि अधरात सुहाई।
वाही समै जनम हरि लीनौ।
मात पिता कौं दरसन दीनौ॥ ३७॥
संख चक्र गद पदम बिराजै।
भुजनि चारि आयुध छबि छाजै।
मनिमय मुकुट सीस पर सोहै।
भृकुटी बंक चित्त कौं मोहै॥ ३८॥
जग ते उदित अंग भुज राजै।
ललित पीतपट जुगल बिराजै।
दीरघ दृग झलमलत अन्यारे।
मुकतासुत सोहत अति भारे॥ ३९॥

॥ दोहा ॥

सुभग स्याम तन मुकुट अति पीतबसन छबि देत।
जनु घन उनयौ है मनौ उड़गन तड़ित समेत ॥ ४० ॥

॥ छंद ॥

बहुसि रूप बसुदेव निहारे।
कोटि जामिनी तिमिर उसारे।
खुले किवार दौर दिन दीने।
द्वारपाल निद्रा बस कीने ॥ ४१ ॥
तब बसुदेव कह्यौ प्रभु प्यारे।
खुले भाग अति आजु हमारे।
अदभुत रूप हगनि हम देख्यौ।
जीवन जनम सुफल करि लेख्यौ ॥ ४२ ॥
ये भय हमैं कंस के भारे।
उहि मेरे छह बालक मारे।
जा वह खबर तुम्हारी पैहै।
तौ निरदई पापमति लैहै ॥ ४३ ॥
अब तुमकौ किहिं भांति बचाऊं।
कौन ठौर यह रूप छपाऊं।
बालरूप तुमकौं करि पाऊं।
तौ दुराइ गोकुल धरि आऊं ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥

सुनत बोल बसुदेव के बोले बिहसि कृपाल।
पूरब तप तै हम तुम्हैं रूप दिखायौ हाल ॥ ४५ ॥

॥ छंद ॥

यौं कहि बालक रूप दिखायौ।
बहसि रूप बैकुंठ पठायौ।
बाल रूप अच्चर जब कीनौ।
तब बसुदेव गोद धरि लीनौ ॥ ४६ ॥
सोवत चौकीदार निहारे।
गोकुल कौं बसुदेव पधारे।
जमुना बढ़ी पार नहिं सूझै।
मग बसुदेव कौनकौं बूझै ॥ ४७ ॥
सुत की प्रीति कंसभय भारी।
जल में धस्यौ मीचु अखत्यारी।
करि करुना जमुना मग दीनौ।
पाइन उतरि पार वह लीनौ ॥ ४८ ॥
ताही समै रैन रस भीनी।
जोगनींद जसुदा उर लीनी।
चलि बसुदेव नंदघर आयौ।
ठौर ठौर सौ उत्सव पायौ ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

पुत्र धह्यौ जसुदा निकट कन्या लई उठाइ।
फ़िर त्यौंही जमुना उतरि मथुरा पहुंचे जाइ ॥ ५० ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे श्री कृष्णजन्मवर्णनंनामचतुर्विंशो ऽध्याय: ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

सकल पुरान कुरान के मत सौ ज्ञान डिढ़ाइ।
जातैं जग छत्रसाल कौं लग्यौ स्वप्न सम भाइ ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

छत्रसाल कौं ज्ञान सुनायौ।
परमतत्व परगट दरसायौ।
त्यौं प्रभु प्राननाथ फरमायौ।
हुकुम धनी कौ आगम गायौ ॥ २ ॥
करौ राज छत्रसाल मही कौ।
रन में होइ सदा जयटीकौ।
तुव कुल नृपति हौंहि अनियारे।
लैहैं समर अरिन सौ भारे ॥ ३ ॥
बंस अखंड चलै छिति माही।
जाकौ मेटि सकै अरि नाही।

जो तुव बंसहि मेटन चाहै।
ताकौ धनी अनीजुत ढाहै ॥ ४ ॥
यह महि तुम्हैं दई तूरानी।
जहां प्रगटि हीरन की खानी।
तुम दरपुस्त लहौ सिरमौरै।
तुव कुल बिना फलै नहि औरै ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

इहि विधि वह बरदान दै कुल अखंड बल राखि।
राजतिलक छत्रसाल सिर दयौ साखि दरसाखि ॥ ६ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते प्राननाथ बर दानोनामपञ्चविंशोऽध्याय: ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

बैठे कंचन तखत पै वलीबहादुर साह।
पीछे औरंगसाह कै कीन्हौ ऊकम उछाह ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

तहां खानखानां अधिकारी।
राजकाज की करै सम्हारी।
पातसाह ढिग तिम हित पाई।
चंपतिरा की करी बड़ाई ॥ २ ॥

चंपतिराइ बड़े अनियारे।
हजरत के बऊ काम सम्हारे।
दाराशाह दुंद जब कीन्हौ।
चंपति बीर समर जस लीन्हौ ॥ ३ ॥
रन हरौल कै फतै लिवाई।
औरंगजेब दिल्ली तब पाई।
तिनके तनय छत्रपनधारी।
छत्रसाल सोहत भट भारी ॥ ४ ॥
खुली कृपान अरिन मुख ताकी।
जगी जीत जुद्धन में जाकी।
सुभट सिरोमनि समुझि अगावा।
करियै उनकौ बेग बुलावा ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

छता बीर बुलवाइये करिहै काम अनेक।
हाल लोहगढ़ की बिजै लै देहै करि टेक ॥ ६ ॥

॥ छंद ॥

फतै लोहगढ़ की लै देहै।
औरऊ काम अनेक बजैहै।
सुनी खानखानां की बानी।
साह हियै अति सुखद सुहानी ॥ ७ ॥

बिहस बहादुरसाह बुलायौ।
छत्रसाल कौं लिखा पठायौ।
लिखी खानखानां त्यौं पाती।
जामें सब बिधि खबर सुहाती ॥ ८ ॥
हजरत याद आप की कीन्ही।
हित की मति साखिन तैं चीन्ही।
चहत लोहगढ़ कियै महमै।
तातै चित्त आप में झूमै ॥ ९ ॥
या हित साह आपु बलवाये।
बड़े प्रीत सैां लिखे पठाये।
तातैं आप आइबी आछै।
सकल सिद्धि ह्वैहै तिंह पाछै ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

बांच लिखे छत्रसाल नृप लिखी साह कौ ज्वाब।
फतै लोहगढ़ को करैं हाजिर होत सिताब ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

पाती साह छता को बांची।
हियै मान लीनी सब सांची।
फेर गये खत अब दूत ऐबी।
करिकै भेंट लोहगढ़ जैबी ॥ १२ ॥

छत्रसाल सुन मन सुख पाये।
पातसाह के पास सिधाये।
सादर साह मिले हरषाई।
भई प्रीतजुत भेंट भलाई ॥ १३ ॥
चले बेग ह्वै बिदा उहातैं।
करी मह्रुम लोहगढ़ जातैं।
ह्वैंको किलौ लोहगढ़ बांकौ।
भयौ समर नृप लख्यौ तहांकौ ॥ १४ ॥
गोली गोला छुटत अरावे।
दबकत कहूं सुभट रन दावे।
हल्ला पसर करी अस रारी।
माची मार परस्पर भारी ॥ १५ ॥
दरवाजिन के फार किवारे।
भीतर पैठ गये अनियारे।
तीन हजार तहां लर सूझे।
सुभट किले के घाइल जूझे ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

पंदरह से बुंदेल कुल घाइल जूझे बीर।
मार लोहगढ़ की फतै लई छता रनधीर ॥ १७ ॥

॥ छंद ॥

फतै बजाइ दिली नृप आये।
पातसाह तैं अति सुख पाये।
कह्यो लेव मनसब मनभाये।
छत्रसाल तब बचन सुनाये॥ १८॥
हम बगसीस यही करि पावैं।
काम लगै जब आप बुलावैं।
हुकुम सुनत हम हाजिर होवैं।
हजरत के रन काम सजोवैं॥ १९॥
जो हमकों बगसी दरपेसह।
तामें कौन होइ बिय पेसह।
दो करोर की जिमी ठिकानै।
पुनि दीन्ही हीरन की खानै॥ २०॥
सो प्रभु की बगसीस बनीऊ।
कर्म निमित्त निज देत धनीऊ।
मनसबदार होइ को काकौ।
नाम बिसुंभर सुन जग बांकौ॥ २१॥

॥ दोहा ॥

इम प्रभु के बिश्वासमय बचन भाषि छत्रसाल।
बिदा भये उर साह कौं मुदित राखि महिपाल॥ २२॥

॥ छंद ॥

साह बिदा कीनौ सुख पायौ।
एक कुंवर रहिबौ ठहरायौ।
छत्रसाल गृह आइ सिधाये।
मऊ पऊंच नीसान बजाये॥ २३ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते दिल्ली तै मऊ आगमनोनामषड्विंशोध्यायः॥ २६ ॥

समाप्तश्चायं ग्रंथः

अष्टादश शत अरु उनतीसा।
इसवी सन ते बर्ष बितीता।
श्रावन शुक्ल नवमि शनिबारा।
छत्रप्रकाश ग्रंथ बिस्तारा॥

भयौ सांग मुद्राचरनि छत्रसाल यश चारु।
पढ़ै सुनै तिहिकौ सदा होइ बीररस सारु॥